युग धर्म

[युग-पुरुष नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जीवन झांकी सुभाष-दिग्विजय । युग-धर्म—? महान भारतीय राष्ट्र के पतन का अपराधी कौन ? पाराशर स्मृति । भारतीय राष्ट्र का नव-निर्माण—
इस पुस्तक में पढ़िये]

राजर्षि पाराशर

ओ३म्

राष्ट्र-निर्माण ग्रन्थमाला का २२वां पुष्प

युग-धर्म

(Hinduism ! as it should be)

ग्रन्थ संग्रहयिता:—

सन्त-दर्शन, कलियुग पुराण, जवाहर दिग्विजय, राष्ट्र सर्वस्व, गीता की भूमिका, भारतीय राष्ट्र का नवनिर्माण, राष्ट्र-धर्म का स्वरूप, हमारा उज्ज्वल अतीत, अपराधी कौन, कांटों का ताज, देशरत्न, भारत सन्देश, Historical researches into Hindu-Mythology इत्यादि इत्यादि ग्रन्थों के लेखक

राजर्षि पाराशर

आचार्य—विश्वज्ञान मन्दिर, कनखल (हरिद्वार)

प्रकाशक:—

राष्ट्र-निर्माण ग्रन्थमाला, करौलबाग दिल्ली

प्रथम वार २०००

जनवरी १९४७

मूल्य १॥)

पुस्तक मिलने का पता:—
विश्व-ज्ञान-मन्दिर,
कनखल, हरिद्वार

पत्र-पुष्प

इस पुस्तक को मेरे पूर्व प्रकाशित ग्रन्थ "कांटों के ताज" का ही उत्तरार्द्ध समझिये। पुस्तक छोटी सी है। आजकल के जमाने में इतना भी हो सकना बड़ी बात है। जो कुछ मेरी शक्ति में था पाठकों की सेवा में हाजिर है। मैं अपनी त्रुटियों को जानता हूं। मुझे आशा है अनेक बातों पर मतभेद रखते हुए भी पाठकगण मुझसे पूर्ववत स्नेह बनाये रखेंगे।

विश्व-ज्ञान-मन्दिर
कनखल (हरिद्वार)

—पाराशर
मकरसंक्रान्ति १४-१-४७

मुद्रक:—
सक्सेरिया प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली।

प्राक्कथन

उत्तमः सव धर्माणाम् राष्ट्रधर्मोऽयमुच्यते।
रक्ष्यः प्रचारणीयश्च सर्वलोक हितैषिभिः॥
सर्वधर्मान्परित्यज्य राष्ट्रं हि शरणं व्रज।
राष्ट्रं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यति माशुच॥

प्रस्तुत पुस्तक में मैंने कुछ कड़वा सत्य लिखा है, यद्यपि मैं इस बात को भली प्रकार जानता हूं कि लोगों को मीठा शर्बत पीने की आदत सा पड़ गई है। लोग यदि कुनैन भी खायेंगे तो शुगर-कोटिड़, परन्तु राशनिंग के इस जमाने में मेरेपास खांड कहां। अगर राशनिंगका जमाना न होता तो सम्भवतया मैं अपनी इस दवाई पर हल्का सा मीठा पलस्तर ज र चढ़ा ही देता।

आज जो संकट मेरे देश पर पड़ा है इसकी उपमा इतिहास के किसी भी पन्ने पर आपको न मिलेगी। विदेशियों ने इस देश पर अनेकों आक्रमण किये, गजनवी लुटेरों ने भी इस देश में शताब्दियों तक मन-मानी लूट मचाई; तैमूर, नादिर और चंगेज़ द्वारा कत्ले आम भी हुआ, परन्तु सर्वसाधारण में जो भय, जो आतंक और जो निराशा आज छा रही है वैसी अवस्था आज ही हुई है, पहले कभी नहीं। विदेशी आक्रमण कारियों ने भले ही इस देश की जनता के रक्त से इस पवित्र भूमि भारत को रक्तवर्णी बनाया हो परन्तु एक ही माता के दो पुत्र, दुःख-सुख के साथी दो पड़ौसी एक दूसरे की जान के ग्राहक बने हों ऐसा बीसवीं शताब्दी के दूसरे चरण के पश्चात् ही देखने में आया है। आज

प्रत्येक ग्राम, प्रत्येक नगर ज्वालामुखी बना है, कौन जानता है कौन से शहर का कौन सा मुहल्ला या कौन सा बाजार किस समय पानीपत का मैदान बन जाये। हिन्दू मुसलमान को देख कर घृणा से मुह फेर लेता है और हिन्दू को देखते ही मुसलमान की आंखों में खून उतर आता है। सिवाय फिरंगियों के इस अवस्था में किसी को भी सुख चैन नहीं। सब से बढ़ कर दुःख की बात यह है कि यह भावना दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। कांग्रेस के उपदेश से हिन्दुओं ने तो मुसलमानों से घृणा करना छोड़ दिया है, परन्तु घृणा का सम टोटल कायम रखने के लिये अब मुसलमानों में हिन्दुओं के प्रति घृणा का जोर बढ़ता जा रहा है।

हमारे देश में यद्यपि अपने ही देश-वासियों की सरकार स्थापित हो चुकी है, परन्तु वास्तविक सत्ता अब भी अंग्रेज के हाथों में है। उसी सत्ता को पूर्णतया अंग्रज से छीनने के लिये आज कांग्रेसी महा पुरुष जिन्ना के स्तोत्र गा रहे हैं, परन्तु परिणाम सर्वथा विपरीत दीख रहा है। कांग्रेस की मानवता को कांग्रेस के शत्रु कांग्रेस की कमजोरी समझ रहे हैं। नई दिल्लीके राजमहलोंमें बैठे बातें बनाना और चीज है, परन्तु मोची दरवाजे बिल्ली मारान, लालकुएं से गुज़रते हुए डान, जमींदार, अनजाम जंग की कथा बांचते हुए मुसलमानों के चहरों के उतार चढ़ाव को जो दिन में २० बार देखते हैं वही बता सकते हैं हवा का रुख किधर को है।

निःसन्देह हिन्दू-मुस्लिम एकता में ही हमारे देश का कल्याण है। परन्तु एकता, एकता का शोर मचाने से, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगा देने से अथवा चर्चिल-जिन्नाह एण्ड कम्पनी अनलिमिटेड के प्रत्येक ऊट पटांग शब्द के सामने नत-मस्तक हो जाने से तो एकता कदापि प्राप्त न होगी। एकता किसी कागज के टुकड़े पर दस्तखत करने से न होगी, सच्ची एकता के लिए दिल एक होने चाहिएं। सरकार यदि सच्चे दिल से साम्प्रदायिक कटुता को दूर कर देश-भाइयों के परस्पर सम्बन्ध में माधुर्य का संचार करना चाहती है तो निम्नलिखित मार्ग का अनुसरण करते हुए वह अपने इस ध्येय में सफल हो सकती है।

(१) मुस्लिम-संस्कृती जैसी इस धरती पर कोई वस्तु नहीं, क्योंकि सभी मुसलमान हिन्दुओं से ही मुसलमान बने हैं अतः जो कुछ वह पहले करते थे उस से सर्वथा उल्ट करना ही उनकी संस्कृति है। पहले धोती लगाते थे अब तहमद बांधते हैं। पहले पूर्व की ओर मुंह करते थे अब पच्छिम की ओर मुह करते हैं। पहले ईश्वर का नाम चुपचाप बैठकर अपनी चित्त-वृत्तियों को अन्तर्मुखी बनाकर जपते थे अब ईश्वर का नाम लेते समय पूरे जोर के साथ चिल्लाते हैं। पहले गौमाता की पूजा करते थे इसीलिए अब गौमाता के शत्रु बन माता की गरदन पर छुरी चलाते हैं, पहले रोटी छोटी-छोटी खाते थे इसका उल्ट यही हो सकता है कि बहुत बड़ी रोटी पकायी जाय और खायें चाहे उस में से आधी ही, पहले तवा सीधा रखते थे अब उल्टा रखते हैं; पहले बांयें ओर से लिखते थे अब दायें ओर से लिखते हैं; पहले बर्तन को खूब रगड़ रगड़ कर मांजा करते थे, अब जब से लिया है तब से मंजा ही नहीं; पहले गंगा जी में नहाते थे अब गंगा तट पर रहते हुए भी छप्पड़ में नहाते हैं, यही तो है न मुस्लिम संस्कृति? यदि रहन-सहन, खान-पान, आहार व्यवहार का नाम ही संस्कृति है तो भी हिन्दू-धर्म इतना विशाल है कि इसके बाहिर कुछ भी नहीं। हिन्दू-धर्म किसी भी तौर तरीके पर प्रतिबन्ध नहीं लगाता। कोई जिस ढंग से भी, जिस लिवास में भी, जिस भाषा में भी, हिन्दू माता की गोद में आता है माता उसे अपनी गोद में सहर्ष स्वीकार करती है। धोती लगा लो तो भी हिन्दू, तहमद लगा लो तो भा हिन्दू, लंगोटी लगा लो तो भी हिन्दू; पाजामा पहन लो तो भी हिन्दू; पतलून, शिलवार, तहमद कुछ भी पहन लो तो भी हिन्दू, कुछ न पहनो तो भी हिन्दू, नंगे रह लो तो भी हिन्दू, कमीज, कोट, वास्कट, ओवरकोट कुछ भी पहन लो तो भी हिन्दू, कुछ भी न पहनो तो भी हिन्दू। चोटी रखो तो भी हिन्दू, सन्यासी बनकर चोटी कटवादो तो भी हिन्दू; यज्ञोपवीत पहन लो तो भी हिन्दू यज्ञोपवीत न पहनो तो भी हिंदू; उर्दू पढ़ ले तो भी हिन्दू, हिन्दी पढ़ ले

तो भी हिन्दू, अंग्रेजी, गुरुमुखी लंडे-मुंडे कुछ भी पढ़ ले तो भी हिन्दू; कुछ भी न पढ़ो तो भी हिन्दू । ईश्वर को मान लो तो भी हिन्दू, ईश्वर को न मानो तो भी हिन्दू । वेद को मान लो तो भी हिन्दू और चार्वाक के समान त्रैयो वेदस्य कर्तारा: धूर्तो भांड निशाचरा: ! ऐसा कहलो तो भी हिन्दू......जब हिन्दू धर्म इतना विशाल है, तो इससे बाहिर किसी पृथक वस्तु की कल्पना ही क्यों की जाती है ?

(२) पाठशालाओं, स्कूलों तथा कालिजों में जो इतिहास पढ़ाया जाता है उसमें से भिन्न-भिन्न वंशावलियों, लूट-मार दंगा फिसाद की बातों को निकाल कर एक विशेष समय में राष्ट्र की सामाजिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक अवस्था के अध्ययन पर अधिक जोर दिया जाना चाहिये । क्योंकि भारत में सभी मतमतान्तरों के लोग प्रताप, शिवा और गुरुगोविन्द की ही सन्तान हैं इसलिए जिस किसी भी व्यक्ति ने इन महापुरुषों से शत्रुता की उन लोगों को भारतीय इतिहास में कोई स्थान नहीं देना चाहिये । इतिहास को बनानेवाले उसी देश के महापुरुष होते हैं न कि विदेश से आये कुछ एक लुटेरे । मुस्लिम बच्चों के हृदयों पर आरम्भ से ही यह विचार अंकित किया जाना चाहिये कि भारतीय महापुरुषों का इतिहास उनका अपना इतिहास और कि औरंगजेब की अपेक्षा भारतीय मुसलमानों के साथ शिवा-प्रताप का निकटतर सम्बन्ध है ।

(३) सरकार को इस बात की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए कि नगर के बीच में कोई मन्दिर या मस्जिद न बनने पाय । मन्दिर अथवा मस्जिद शहर से कम से कम इतनी दूर होने चाहियें कि वहां की घंटे धड़ियाल की, अथवा कानों में उंगली देकर किसी व्यक्ति के जोर जोर से चिल्लाने की आवाज शहर तक न पहुंचने पाए । जो मन्दिर मस्जिद शहर के बीच में बन चुके हैं उनके बदले में सरकार को अपने खरच पर वैसा ही स्थान शहर से बाहिर बना देना चाहिए ।

(४) यदि किसी सम्प्रदाय का कोई व्यक्ति अपनी किसी प्रकार

की ऐसी रस्म पूरी करना चाहे, जिसके प्रदर्शन से अन्य मतावलम्बियों के हृदयों पर आघात पहुंचता है तो सरकार को चाहिए ऐसे प्रदर्शन को बलपूर्वक रोक दे और अपने घर में बैठ चार दीवारी के पीछे चुप-चाप उस रस्म को पूरा करने के लिए उस व्यक्ति को समझाये। गा हत्या को तो सरकारी तौर पर बिलकुल बन्द करा देना चाहिये।

(५) उर्दू कोई भाषा नहीं, अर्बी-फारसी मिश्रत हिन्दी का फारसी लिपी में लिखा जाय तो हिन्दी हा उर्दू बन जाती है। हिन्दी लिपी सर्वाङ्ग रूपेण परिपूर्ण है। किसी भी व्यक्ति को इस लिपी का अव-हेलना तथा अपमान के पाप का भागी नहीं बनना चाहिये। बोलने की भाषा सबकी अपनी अपनी, पंजाबियों का पंजाबी और गुजरातियों का गुजराती [परन्तु लिखा जाय सबको हिन्दी लिपी में। सरकार को अदालता कामों में हिन्दी लिपी पर किसी प्रकार की रोक नहीं लगानी चाहिये।

(६) स्टशनों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर हिन्दू पानी तथा मुसलमान पानी का भिन्न भेद तो उड़ा देना चाहिये, परन्तु सरकार को इतनी देखभाल का विशेष प्रबन्ध अवश्य कर देना चाहिये कि कोई व्यक्ति अपना पिया हुआ सैकन्डहैन्ड जूठा पानी फिर उसी मटके में न उढ़ेल दे तथा कोई व्यक्ति टट्टी से निकलते ही उस टट्टी वाले लोटे को ही मटके में न डाल दे।

(७) सरकार को इस बात का विशेष प्रबन्ध करना चाहिये, कि मांस की दुकान बाजार के बीच में कदापि न हो। या ता माँस बेचने बाला अपने घर के भीतर बैठ कर ही यह व्योपार करे अथवा शहर के बाहर उनकी दुकान का प्रबन्ध किया जाय।

(८) नौकरियों, चुंगी तथा असम्बली की मैम्बरियों में साम्प्रदा-यिकता को कदापि दखल न हो। नौकरियों का आधार केवल योग्यता हो और निर्वाचन संयुक्त प्रणाली पर हों।

(९) जिस प्रकार ईसाई लोग मजहबी तौर पर ईसाई होते हुए

भी अपने नाम भारतीय ढंग पर रखते हैं—साधू सुन्दरसिंह, गोलकनाथ इत्यादि, उसी प्रकार मुसलमानों को भी यह समझाया जाय कि मजहबी तौर पर मुसलमान होते हुए भी वे अपने नाम भारतीय ढंग पर रखें।

(१०) मर्दुमशुमारी का काम सरकार को बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए। परन्तु कुछेक अपने आदमियों को कारे लगाये रखने के लिए यदि सरकार ने मर्दुमशुमारी करनी ही है तो मतमतान्तर की दृष्टि से मर्दुमशुमारी नहीं करनी चाहिए। आज जो देश में तबलीग का जोर है, नवाखली में जो कुछ हुआ सब अपनी संख्या बढ़ाकर अधिक सीटें प्राप्त करने के लिए है। सरकार को चाहिये कि वह किसी संप्रदाय की जन-संख्या के आधार पर सीटों के विभाजन की प्रथा बन्द करके धरती माता का कल्याण होने दें।

इन बातों के साथ ही साथ हिन्दू समाज की आन्तरिक कुरीतियों को दूर करने का यत्न करना चाहिए। देश का सौभाग्य है कि आज राष्ट्र की वागडोर जवाहर तथा पटेल जैसे दृढ़व्रती लोह पुरुषों के हाथ में है। सुधार की आवश्यकता को अनुभव करता हुआ भी हिन्दू समाज स्वेच्छापूर्वक सुधार का आदि नहीं। डंडे वाले को उसने मनुष्य समझा। हिन्दू समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए दंडशक्ति की आवश्यकता है। हिन्दू समाज का वर्तमान स्वरूप वास्तविक नहीं, इसमें गुलामी के जमाने का बहुत सा गन्दा पानी मिला है। इस पानी को फिल्टर द्वारा साफ करने की आवश्यकता है। समाज सुधार स्वतन्त्रता की ओर पहला कदम है। बिना समाज का सुधार किये स्वतन्त्र भारत की कल्पना करना दिवा-स्वप्न है।

प्रस्तुत पुस्तक में मैंने हिन्दू समाज की आन्तरिक बुराइओं के शोधने का प्रयत्न किया है। अपराधी कौन नामक अध्याय में मैंने हिन्दू समाज का भीतरी फोटो अपने हिन्दू भाइओं के सामने उपस्थित किया है, किसी का दिल दुखाने के लिये नहीं; किसी को किसी दूसरे की नजरों में ज़लील करने के लिये नहीं, परन्तु केवल इसी ख्याल से कि शायद अनेक

पाठकों में कोई एक मेरी अन्तरात्मा को समझे और हिन्दू समाज के भीतरी दोषों को दूर कर राष्ट्र को शक्ति प्रदान करे।

अन्तिम बात मैं अपने कांग्रेसी बन्धुओं की सेवा में निवेदन करना चाहता हूं। जिन लोगों ने मेरे द्वारा लिखे जवाहर-दिग्विजय तथा राष्ट्र सर्वस्व को पढ़ा है, वे जानते हैं मेरे दिल में कांग्रेस के लिये कितना मान है। भावुकता को मैंने कभी भी अपने समीप फटकने नहीं दिया। यही कारण है कि अनेक तूफानी अवसरों के बीच में भी मैं ने कांग्रेस के प्रति अपनी निष्ठा को डांवाडोल नहीं होने दिया। १६, २२, २७, ३१, ३७ में कांग्रेस ने जो राजनीतिक गल्तियां कीं उनका फल तो देश ने अवश्य भोगा, परन्तु देश का सौभाग्य था कि उस समय तक लीग हुशयार नहीं थी। शहर में कोई चोर न हो, और घर का दरवाज़ा रात को खुला रह जाय तो यह गल्ती विशेष हानीप्रद नहीं, परन्तु लुटेरों को गली-मुहल्लों में खुले आम चक्कर लगाते देख कर भी, रात के समय दरवाज़ा चौपट खोल कर निश्चिन्त हो लेट जाना यह ऐसा भयंकर अपराध है जिसे कदापि क्षमा नहीं किया जा सकता।

जिन दिनों मैंने इस पुस्तक को लिखा, यह दुर्भाग्य था कि उन कुछेक दिनों के बीच में ६ दिसम्बर का दिन भी पड़ता था और पांच जनवरी का भी। मेरी अन्तरात्मा ने कहा—"जवाहर ने लन्दन जाकर गल्ती की है, फिर मेरी आत्मा ने कहा—कांग्रेस ने ६ दिसम्बर वाले मन्त्री मिशन को अक्षरशः स्वीकार करके एक भयंकर पाप किया है और आज ३१ जनवरी के दिन लीगी दुःशासन फिर ललकारा है—बताओ ! तुम हमारे सामने बिला शर्त हथियार डालनेको तैयार हो कि नहीं? २५फीसदी मुसलमान ७५ फीसदी हिन्दुओं के साथ केन्द्र में एक स्थान पर बैठने तक को तैयार नहीं, वही लोग—बी० सी० ग्रुप के ४९ तथा ८० प्रतिशत हिन्दुओं को अपने आगे चूं तक करने का अधिकार देने को तैयार नहीं। ऐसे अन्यायी और मिथ्याचारी लोगों की खुशामदें करना, मैं नहीं समझता इसे किस प्रकार की देशभक्ति कहा जाय।

मेरी कमजोरी यह है कि मैंने अपनी आत्मा की आवाज के विरुद्ध आचरण स्वीकार नहीं किया, क्यूं कि मैं आत्मा की आवाज को परमात्मा की आवाज समझता हूं। यदि मेरे विचारों से मेरे किसी कांग्रेसी भाई को निराशा हो तो मैं उन्हें यह विश्वास दिलाता हूं कि यद्यपि मेरा दिमाग उन के साथ नहीं, परन्तु मेरा हृदय सदैव उनके साथ है। समय का प्रवाह आता है और चला जाता है, तूफान उठते हैं और थोड़ी देर अपने पराक्रम का प्रदर्शन कर स्वयं बैठ जाते हैं; प्रकाश भी होता है और अन्धकार भी; गरमी भी आती है और सरदी भी; बादल भी आते हैं और आंधियां भी—परन्तु गगन मंडल के दो सम्राट दिवापति और निशापति अपनी उसी शान से चमकते रहते हैं। निन्दा-स्तुति के विचार से ऊपर उठ कर वे दिनरात निष्काम कर्मयोग के आदर्श पालन में लगे रहते हैं। जवाहर और पटेल भारत के दो सूर्य और चांद हैं। छोटे मोटे तूफान उठते ही रहेंगे, प्रकाश और अन्धकार भी अपना चक्कर चलाते ही रहेंगे, परन्तु जवाहर-पटेल राजनीतिक भारत के गगन पर सूर्य और चन्द्रमा के समान चमकते ही रहेंगे।

॥ जय हिन्द ॥

पराशर

शनिवार, फरवरी १ — **विश्व-ज्ञान मन्दिर**

कदापि नहीं कि वृद्धा माता के ही टुकड़े-टुकड़े कर

ें के बहकावे में आकर आपने पूर्वी बंगाल
भाइयों के खून की नदियां बहाई
। आप अपने ही हाथों अपना
प परमात्मा के दरबार
ाजम और तुम्हारा
ोगे या तुम्हारा
े कत्ल

(१)

भारत माता का सन्देश

मोहसन है महरवां है सारे जहां की जां है।
आओ भुकायें सर को भारत हमारी मां है ॥

मेरे प्यारे बच्चो,

क्या आप को अपनी बूढ़ी माता के बुढ़ापे पर तरस नहीं आता ? मेरा अंग प्रत्यंग पराधीनता के प्रवल पाशों में जकड़ा हुआ है और आप माता के बन्धन काटने की वजाय, तुच्छ स्वार्थों के लिये आपस में ही लड़ रहे हैं। तुम्हें मेरे दूध पिये की कुछ तो लाज रखनी चाहिये, इतने बेगैरत मत बनो, याद रखो माता को बुढ़ापे में दुःख देने वालों के लिये न तो इसलोक में सुख है न परलोक में।

सर्वप्रथम मैं अपने सनातनधर्मी-पुत्रों को कहती हूं, आप धर्म के यथार्थ स्वरूप को समझिये। सच्चा धर्म यही है कि इस लोक में सुख और मान का जीवन व्यतीत किया जाय। और दूसरोंको भी अपने समान सुख पूर्वक रहने दें। परलोक की कल्पना के पीछे इस लोक को मिथ्या मान वैठना और घर बार विधर्मियों के हवाले कर देना कोई अच्छी बात नहीं। परलोक-सुधारने में जितना रुपया आप मुफ्तखोरों की पालना में बर्बाद करते हैं यदि उसका एक हिस्सा भी आप इसलोक के सुधार पर लगायें तो सहज में ही देश की गरीबी दूर की जा सकती है। मैं भारतवर्ष के धर्माचार्यों से अपील करती हूं वे देश के नये राजनीतिक

मेरी कमजोरी यह है कि मैंने अपनी रखते हुए हिन्दू राष्ट्र का नव-आवरण स्वीकार नहीं किया, क्यूं दिां के प्रति हिन्दू समाज के अत्याचार त्मा की आवाज समझता हूं। यदिखाली और कलकत्ते की दुर्घटनाओं से भी को निराशा हो तो मैं उन्हें गहीं की। स्त्रियों को बहकाने में सौ फीसदी दिमाग उन के साथ नहींता है, परन्तु इस प्रेम का विषैला फल देवियों को का प्रवाह आता है है, परमात्मा को चाहिये था बिजली और पानी के अपने पर की तरह वह पुरुष के शरीर पर कहीं एकाध मीटर फिट कर देता ताकि उस के सदाचार का नाप तोल भी किया जा सकता। शायद सृष्टि-रचना के सैकन्ड एडीशन में परमात्मा अपनी इस त्रुटि को पूरा करदे। तब तक आप को चाहिये देवियों तथा हरिजनों पर अपने अत्याचार बन्द कर दें।

मैं अपने आर्यसमाजी पुत्रों को कहती हूं वे वस्तु-स्थिति को भली प्रकार समझें। सिन्ध में यदि सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी सत्याग्रह में कोई गिरफ्तारी नहीं हुई तो इसका यह अर्थ नहीं कि इसे आप लोग अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लें। मुझे इस बात का दुःख है कि कुछ एक आर्यसमाजी अब भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विरोध कर रहे हैं। माना कुछ एक बातों पर आर्यसमाज की संघ-शाखाओं के ध्वज-प्रणाम तथा गुरु-भावना के साथ मतभेद है परन्तु संघ शाखाओं ने भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों में जो संगठन शक्ति पैदा की है, जिस प्रकार इसने नवयुवकों के उच्छृङ्खल जीवन में तप त्याग का समावेश किया है उसे देखते हुए संघ शाखाओं का विरोध करना देश के साथ द्रोह करना है। इस समय सबसे बड़ा सिद्धान्त यही है कि एक होकर बहु-बेटियों की इज्जत और जान माल की रक्षा की जाय।

अन्त में मैं अपने मुस्लिम-पुत्रों को कहती हूं कि आप ही के कारण मेरा बुढ़ापा बर्बाद हो रहा है। मैं इस बात को मानती हूं कि हिन्दुओं के प्रति कुछ हद तक आपका रोष सच्चा है, परन्तु भाइयों की आपसी

लड़ाई का यह अर्थ कदापि नहीं कि वृद्धा माता के ही टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें।

कुछ एक स्वार्थी मुल्लाओं के बहकावे में आकर आपने पूर्वी बंगाल सिन्ध तथा सीमाप्रांत में अपने हिन्दू भाइयों के खून की नदियां बहाई आपने अपना लोक तो बिगा । ही था अब आप अपने ही हाथों अपना परलोक भी बिगाड़ने लगे हैं। जिस समय आप परमात्मा के दरबार में जायेंगे, याद रखिये उस समय तुम्हारा कायदे आजम और तुम्हारा सुहरावर्दी तुम्हारा कुछभी साथ न देगा। उस समय तुम होगे या तुम्हारा अल्लाताला। उस समय वह तुम्हें पूछेगा—तुमने लाखों बे गुनाहों को कत्ल किया, हजारों बच्चों को तुमने यतीम बनाया, सहस्रों अबलाओं के सौभाग्य सिन्धूर को तुमने मिट्टी में मिला दिया बताओ तुम्हें कौनसी दोजख की आग में डाला जाय ?' तुम मेरे पुत्र हो। पूत कपूत भले ही हो जाय, माता कुमाता कभी नहीं होती। मेरे हृदय में तुम्हारे लिए स्नेह है, प्रेम है। मैं नहीं चाहती, तुम्हें परलोक में किसी प्रकार का कष्ट हो। जैसे सुखपूर्वक तुम मेरी गोदी में पलते हो ऐसे ही मैं चाहती हूं तुम परलोक में भी फूलो फलो।

अपने हिन्दू भाइयों के विरुद्ध जो आप को उचित शिकायतें थीं उन्हें तो कांग्रेस के प्रभाव से हिन्दुओं ने स्वयं ही दूर कर दिया है। अब जो आपकी शिकायतें हैं वे उचित नहीं। रोटी बेटी का संबन्ध किसी भी व्यक्ति की अपनी रुचि पर ही निर्भर है, प्रत्येक मनुष्य का कुछ स्वभाव होता है; कुछ वस्तुओं से उसे प्रेम होता है, कुछ वस्तुओं से उसे घृणा होती है, जहां उसका मन मिलता है वहीं वह भोजन करता है वहीं उठता बैठता है।

लड़कियों के सम्बन्ध की बात इतनी आसान नहीं जितनी कि आप लोग इसे समझते हैं। विवाह का जो ऊंचा आदर्श है वह आपकी कल्पना शक्ति से भी दूर है। आपकी दृष्टि में स्त्री पुरुष के लिये केवल भोग-विलास की वस्तु है; हिन्दू समाज की दृष्टि में गृहस्थ जीवन एक

जिम्मेदारियों का जीवन है। कन्यादान के समय पिता के हृदय की जा अवस्था होती है उसे शब्दों में चित्रित करने वाला कवि आज तक पैदा न हुआ। पुत्री के लिए वर तलाश करना पिता के जीवन की सबसे विकट घड़ी होती है। विवाह के पश्चात भी पिता को सुख कहां। न जाने नये घर में उसकी पुत्री कैसे होगी। इसीलिए सम्बन्ध स्थापित करते समय दोनों कुलों में रहन-सहन, खान पान, आचार व्यवहार की समानता देखी जाती है। यही कारण है कि इन समानताओं के अभाव में हिन्दुओं में भी परस्पर सम्बन्ध नहीं होता। आपके घरों का भीतरी वायु मंडल ऐसा है कि उसमें कोई भी अपनी पुत्री को सुखी नहीं समझ सकता। हिंदुओं के साथ रोटी-बेटी के सम्बन्ध का दावा करने से पहले आप अपने रंग-ढंग को भारतीय सांचे में ढालिये, आत्मिक शान्ति के लिये पश्चिम की ओर देखना बन्द कर दीजिये; गोवध तथा मांस भक्षण का परित्याग कर दीजिये; गंगाजी, नर्वदाजी, मथुरा, काशी को अपना तीर्थ समझिये; दशहरा, दीवाली, जन्म-अष्टमी बसन्त-पंचमी को अपना उत्सव समझते हुए हिन्दुओं के समान इन उत्सवों को मनाइये। फिर देखिये हिन्दुओं के विरुद्ध आपको इतनी शिकायत भी न रहेगी। माता के चालीस करोड़ पुत्र एक होजायेंगे और फिर एक बार रावी तट से वही इंकलाब की वीणा गूंजेगी।

कौन कहे है तुझको निर्बल कौन कहे कमजोर।
चालीस करोड़ आवाजें तेरी जिस दम करती शोर॥

तेरे हाथों में जब चमकें शस्त्र अस्सी करोड़।
शत्रु सारे डर के मारे भागें रण को छोड़।
विद्या तू है धर्म भी तू है तू ही है सद्ज्ञान।
तन भी तू है, मन भी तू है—तू है सुख की खान॥

———

[२]

युग धर्म

बद्रिकारण्य में सुखपूर्वक तपोमग्न राजर्षि पाराशर की सेवा में मर्त्यलोक वासियों का एक शिष्टमंडल उपस्थित हुआ। शिष्ट मंडल के सदस्यों ने ऋषिवर के चरण छुये। उन्हें यथायोग्य आशीर्वाद देते हुए ऋषिवर बोले--"कहिये महाशय गण! अब तो आप लोग भली-भांति सुखपूर्वक होंगे। सुना है अब तो मर्त्यलोक में कांग्रेस की अपनी सरकार है, जवाहरलाल उस सरकार के प्रधान हैं, पटेल होम मैम्बर हैं। अब तो मानों भारत में पुन: रामराज्य की स्थापना हो चुकी है। अब तो आपको कोई कष्ट न होगा। कहिये मर्त्यलोक में सब ठीक ठाक तो है?

ऋषिवर का ऐसा वचन सुन शिष्टमंडल के मुखिया हाथ जोड़ बोले--प्रभो! मर्त्यलोक में जवाहरलाल की सरकार स्थापित तो हो चुकी है, परन्तु देवताओं का संकट तो वैसे ही बना है। अनेक स्थानों पर तो वह संकट उग्रतम रूप धारण कर चुका है। सच पूछिये तो भगवन्! कांग्रेस द्वारा चलाया गया देश की आजादी का आंदोलन हिन्दुओं के लिए तो बहुत ही मंहगा पड़ा है। जेलों में हम गये, फांसी पै हम झूले, सीने में गोलियां हमने खाईं, और उसका फल ले गये वे राजा और नवाब जिन्हें हिन्दुस्थान से अथवा हिन्दुस्थान की आजादी से दूर का भी वास्ता नहीं। जब कुर्बानियां करने का समय आता है, चन्दे इकट्ठे करने का अथवा वोट प्राप्त करने का समय आता है तो हिन्दुओं से ही अपील की जाती है परन्तु जब अधिकार-वर्षा होती है तो सबसे पहले मुसलमानों का ही घर ढूंडा जाता है।

आज भारत के ग्यारह प्रान्तों म से आठ में कांग्रेसी सरकार है, दो में लीगी और पंजाब में मिली जुली। कांग्रेसी प्रान्तों में मुसलमानों को बेहद आराम है। कांग्रेसी प्रांन्तों में झूठ-मूठ भी यदि मुसलमान हाय तोबा मचा दें तो दिल्ली से लेकर लन्दन तक सारी धरती हिल

जाती है। परन्तु सिन्ध और बंगाल में खुले आम यह घोषणा की जाती है कि हम इन प्रान्तों से हिन्दुओं का बीज नाश कर देंगे। और ऐसा केवल कहा ही नहीं जा रहा, किया भी जा रहा है। बंगाल सरकार विहारी मुसलमानों के लिये तो पानी की तरह रूपया बहा रही है, परन्तु अपने प्रान्त में संतप्त हिन्दुओं के लिये उसके पास है केवल-धमकी। सिन्ध में हिन्दू जमींदारों को धमका कर उनसे जमीनें छीन ली गई और विहारी मुसलमानों को सिन्ध में बसने का निमंत्रण दिया जा रहा है। परन्तु यह सब कुछ देखते हुए भी न तो दिल्ली के ही कान पर जूं रेंगती है और न ही लन्दन के। जवाहर, पटेल और जयप्रकाश भी यह सब कुछ देखते हुए खामोश रह जाते हैं। आज गांधी जी अपने बहुत बड़े नाम के बल पर भले हा नवाखाली के ग्रामों में पैदल घूम लें परन्तु आज भी पूर्वी-बंगाल में जीवन-संकट यथापूर्व बना है और जब तक लीग का मन्त्री मंडल रहेगा तब तक ऐसा ही संकट रहेगा। आज कांग्रेस ने आसाम लीग के हवाले कर दिया। कल को लीग फिर रूठ जायगी—बिहार को भी हमारे हवाले करो, क्योंकि पहले बिहार बंगाल में ही था। कांग्रेस बिहार को भी लीग के हवाले कर देगी। फिर लीग लखनऊ, दिल्ली और आगरा मांगेंगी……।

न जाने भगवन्! रूठी रानी का यह तमाशा कब खत्म होगा कैसे खत्म होगा। हमें तो कुछ समझ नहीं आता, हम क्या करें। कलियुग में पाराशर का वचन प्रमाण है ऐसा विचार हम आपकी सेवा में उपस्थित हुए हैं, प्रभो हमें कल्याण का मार्ग दिखाइये।

शिष्टमंडल के ऐसे वचन सुन ऋषिवर बोले! आप लोगों ने जो अपनी कष्ट कहानी कही है, मुझे वास्तव में उससे बहुत दुःख हुआ है, परन्तु कांग्रेस को बुरा भला कहने से तो हिन्दू जाति का तथा देश का कुछ लाभ न होगा। दोष तो हमारा अपना है। कांग्रेस में भी तो हिन्दू ही हैं। जिन्ना और लियाकत भी तो कभी हिन्दू ही थे—कभी आपने सोचा भी आपके इन सभी दुःखों के लिये अपराधी कौन?

युगधर्म प्रवर्तक महामना मालवीय जी

मेरठ कांग्रेस पर राष्ट्रथी जवाहर
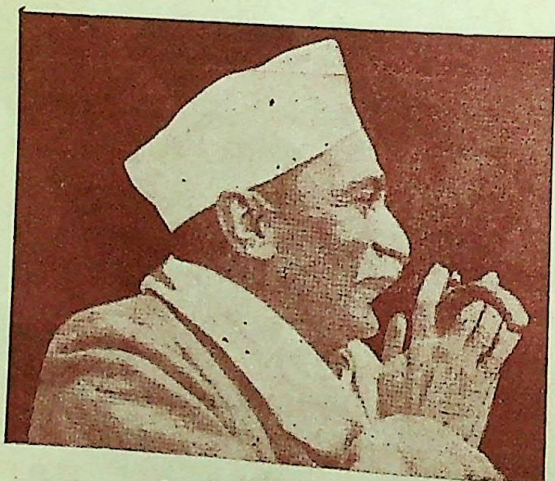
विधान निर्मात्री के अध्यक्ष
देशरत्न बाबू राजेन्द्र प्रसाद

अपराधी कौन ?

(१)

"मेरे कायदे आजम ! आप हमारी ताकत पर भरोसा रखिये पाकिस्तान का यह बायां हाथ आपसे केवल एक ही इशारा चाहता है। आप हमें हुक्म दीजिये। बंगाल का एक-एक मुसलमान आपकी इन्तजार में है। जहाद की जंग में बंगाल का मुसलमान वह जौहर दिखायेगा जिसके आगे तैमूर, चंगेज, अब्दाली और नादिर की शान भी फीकी पड़ जायगी। इस्लामी शमशीरें म्यानों में तड़प रही हैं। हिन्दोस्तान की सर जमीन पर फिर से वे सोमनाथ का मंजर दिखाने को बेताब हैं। हम सिर्फ कहते ही नहीं, वक्त पड़ने पर हम करके भी दिखा देंगे। कलम के जोर से हमें पाकिस्तान नहीं मिला, अब हम तलवार के जोर से पाकिस्तान बनाकर दिखायेंगे। सारे हिन्दुस्तान में आम तौर पर और बंगाल, सिन्ध में खास तौर पर हम वह कयामत बरपा करेंगे कि यही हिन्दू-कांग्रेस पाकिस्तान देने के लिये नाक रगड़ेगी। हम इम्तहान में पूरे उतरेंगे। आपके एक इशारे पर हम हिन्दोस्तान में खून की नदियां बहा देंगे। आप हमारा इम्तहान ले लीजिये।" दिल्ली में अजमेरी दरवाजा के बाहिर एंग्लो-अरेबिक कालिज के सुविशाल मैदान में अपने कायदे आजम को मुखातिब करते हुए लीग के शिशुपाल हसन शहीद सोहरा-वर्दी ने तालियों की गड़गड़ाहट में उपरोक्त शब्द कहे।

और खुदा का फजल, वह परीक्षा का दिन भी आ ही गया। १६ अगस्त १९४६ का खूनी दिन, जय हिन्द के हीरो ९ अगस्त के केवल

एक ही सप्ताह पश्चात् उस दिन हलाकू की आत्मा ने लाखों रूप धारण कर भागीरथी माता की अमृतधारा को रक्त-रंजित करने का निश्चय किया। १६ अगस्त को प्रातः ही लाखों फरजिन्दाने तौहीद, लाठियों, छवियों, तलवारों, पिस्तौलों से लैस कलकत्ता में जमा होने लगे। उनके पास लारियां थीं, बेइन्तहा पैट्रोल था, राशन के जमाने में भी उनके लिए अन्न के भंडार खुले थे। सिन्ध, बिलोचिस्तान पंजाब, फ्रन्टियर तकके हजारों दीनदार जहाद की जंगमें शरकत के लिये कलकत्ता पधारे। कलकत्ता की दौलत, हाय, कलकत्ता को दौलत—उस दिन ऐसा प्रतीत दिया मानो गजनी का महमूद सोमनाथ के मन्दिर को लूटने के लिये लाव-लश्कर लिये चला जा रहा है।

कामिनी और कांचन की भावी आशाओं से आकर्षित हो बारह लाख फरजिन्दाने तौहीद एस्प्लैनेड के मैदान में रौनक अफरोज हुए। उनका सालार उन्हें मुखातिब करता हुआ बोला—"डेढ़ सौ वर्ष के बाद आज फिर बंगाल में इस्लामी हुकूमत कायम हुई है। खुदा के फजलो-करम से आज हम फिर बंगाल के बादशाह बने हैं। हम यहां के राजा हैं, इन हिन्दुओं को यहां हमारी प्रजा बनकर रहना होगा। डेढ़ सौ वर्ष पहले यह हमारे गुलाम हिन्दू लोग हमारी खुशनबूदी हासिल करने के लिये औरतों का सिंगार कर हमारे दरबार में उन्हें पेश करते थे। हम इन हिन्दुओं को साफ-साफ कह देना चाहते हैं अगर यहां रहना है तो फिर हमारे साथ तुम्हें वैसे ही व्यवहार करना होगा। हिन्दुओं की सारी दौलत हमारी है। इनका जो भी कुछ है वह हमारा है क्योंकि हम यहां के बादशाह हैं। यह हिन्दू मरकज में अपनी हुकूमत कायम कर हमसे अतायत करवाना चाहते हैं। इस्लामी शेरो! आज अपनी ताकत के इन्हें जौहर दिखाओ। इस्लाम दुनियां पर हुकूमत करने के लिये पैदा हुआ है। इस्लाम के शेरो उठो अपनी शमशीरें संभाले आगे बढ़ो और जिन लोगों ने आज सोलह अगस्त के दिन हड़ताल में हमारा साथ नहीं दिया उन्हें सफाहे हस्ती से नेस्तोनाबूद कर दो।"

अपने सरदार का हुक्म मिलते ही यह इस्लामी लश्कर जहाद, जहाद की दुहाई मचाता हुआ अस्त्र-शस्त्र संभाले कलकत्ता पर टूट पड़ा और उसके पश्चात जो कुछ हुआ उसे···लेखनी में शक्ति नहीं वह उस खूनी मंजर का वर्णन कर सके। भगवान वह दृश्य किसी को न दिखाये। काली माता ने जी भरकर अपने ही पुत्रों के रुधिर से अपनी प्यास बुझाई। सगर के साठ हजार पुत्रों को जीवनदान देनेवाली भागी-रथी माता भी उस समय अपनी बेबसी पर आंसू बहाती हुई स्वयं ही अश्रुओं की धारा बन गई।

उस दिन कलकत्ता से जान बचाकर भागे हुए एक सज्जन मुझे रेल में मिले। प्रतीत तो देते थे वे बहुत बड़ आदमी, परन्तु उस समय वे बहुत बुरी हालत में थे। आजकल रेलगाड़ी में बैठे ऐसी बातें करने का समय तो नहीं, परन्तु अनुकूल वातावरण पाकर मैंने प्रश्न कर ही तो दिया––क्यों महाराज? कलकत्ते में कैसा रहा।"

"बस महाराज, कुछ मत पूछिये––वे दिन परमात्मा किसी दुश्मन को भी न दिखाये––मेरा तो सर्वनाश ही हो गया। २५ लाख की आसामी था आज कौड़ी-कौड़ी का मोहताज हूं।"

"लेकिन आप लोग कलकत्ता में ७५ प्रतिशत थे। आपसे कुछ भी न बन पड़ा।"

"तीसरे दिन हम संभल गये, हमें इतने जोरदार हमले की आशा न थी।"

"लेकिन आप सोहरावर्दी के नादरी तराने तो सुन ही रहे थे।"

"लेकिन इतने बड़े पैमाने पर लूट-मार की हमें सम्भावना न थी। पुलिस और फौज पर हमें भरोसा था, हमें क्या खबर थी कि खुद सरकार ही दंगाइयों में शामिल हो जायगी।"

"अजी भोले-भाले लाला साहिब, इसी कलकत्ते पर हुकूमत करते सोहरावर्दी को एक वर्ष हो गया। रमेशचन्द्रदत्त, बंकमचन्द्र चटर्जी, सुरेन्द्र-नाथ बनर्जी, आषुतोष मुकर्जी, पी०सी० राय, रामकृष्ण परमहंस, ईश्वर-

चन्द्र विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर का बंगाल लीगी मिनिस्टरी द्वारा किस कदर पद-दलित हुआ परन्तु आप सब कुछ देखते रहे,, कभी आपने प्रौटैस्ट किया ? विहार में ६ प्रतिशत मुसलमान हैं मिनिस्टरी में उन्हें ४० प्रतिशत स्थान प्राप्त हैं, यू० पी० में १४ प्रतिशत हैं, मन्त्रिमण्डल में उन्हें ४५ प्रतिशत स्थान प्राप्त हैं और आप लोग वहां ४६ प्रतिशत हो परन्तु ८० प्रतिशत टैक्स देते हुए भी आपका शासन में कुछ भी स्थान नहीं।

परन्तु पण्डितजी महाराज ! कलकत्ते में पच्चास प्रतिशत लोग तो बंगाल प्रान्त से बाहिर के हैं। अपने घरों को छोड़ दूर देश में वे पैसा कमाने आये हैं। पंजाबी, मारवाड़ी, विहारी आधा कलकत्ता तो इन्हीं से भरा पड़ा है। इन्हें तो पैसा कमाना है। परदेस में राजनीति से इन्हें क्या मतलब। यह काम तो बंगालियों का है और बंगाली हिन्दू की हालत यह है कि हमारी अपेक्षा वह अपने बंगाली मुसलमान को अपने अधिक निकट समझता है। उस दिन सोहरावर्दी को हिन्दुओं ने घेर लिया। करीब ही था कि इस उत्पाती का फैसला ही कर दिया जाता। झटपट किरणशंकर सोहरावर्दी से चिपट गये। "इस पर हाथ उठाने से पहले मुझ पर हाथ उठाओ" और यह डाकुओं का सरदार एक हिन्दू ही की कृपा से मौत के मुंह से साफ-साफ बच निकला। बंगाली हिन्दू का जीवन है नौकरी। बंगाली की नौकरी छूटी कि बस वह तो गया। पंजाब में अथवा अन्यत्र तो बिना पैसे काम चल भी जाय परन्तु बंगाल में तो कदापि नहीं। यही कारण है कि बंगाली हिन्दुओं के जीवनका केवल एक ही उद्देश्य है--नौकरी, डाक्टरी, वकीली, बैरिस्टरी, प्रोफेसरी, जमींदारी से रुपया कमाना। जितने किसान-मजदूर हैं सब मुसलमान। आज पूर्वी बंगाल में धान की फसल काटने वाला एक भी हिन्दू मजदूर नहीं। ऐसी अवस्था में अगर बंगाल के हिन्दू निरन्तर पिटते और मार खाते हो रहें तो आप ही बताइये हमारी इस बेबसी के लिये अपराधी कौन ?

लाहौर की एक तंग-सी गली में चौनिया मस्जिद का बिल्कुल साधारण-सा; योग्यता-दूरदर्शिता तथा सामान्य प्रतिभा से हीन कठमुल्ला मौलाना आजाद ने इस शख्स को एक दम पंजाब प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का प्रैजीडैण्ट बना दिया। जिस आसन को कभी पंजाब केशरी लाला लाजपतराय ने सुशोभित किया था; स्वामी श्रद्धानन्द जैसी परम पवित्र विभूतियों को अपनी गोद में खेलता हुआ देख जो स्थान अपनी शान पर फूला न समाता था उस महामहिमामय सिंहासन पर बिठा दिये गये, मौलाना दाऊद गजनवी—"किमाश्चर्यमतः परम्"।

लाहौर में वर्षों रहते हुए कभी भी मैंने दाऊद साहिब का नाम तक न सुना। ऐसे व्यक्ति के प्रधान बनाये जाने पर मेरा माथा ठंका; क्या मौलाना जफर अली खां, डाक्टर आलम मियां, इफ्तखार के समान ही यह हजरत भी कांग्रेस के पवित्र नाम को कलंकित करेंगे। लाहौर में रहनेवाले मेरे एक मित्र मुझे दिल्ली में मिले—उनका नाम यहां लिखना आवश्यक नहीं। मैंने उन्हें कहा—"अब दाऊद साहिब प्रान्तीय कांग्रेस के प्रधान बने हैं, इतनी प्रार्थना तो उनसे करना—वे अपने नाम के साथ गजनवी न लिखकर भारतीय लिखा करें। यदि कारण वश भारतीय लिखना उन्हें स्वीकार न हो तो लाहौरी ही लिख दिया करें और यदि इतनी भी हिम्मत न हो तो कम-से-कम अल्लामा मशरकी की तरह मौलाना मशरकी ही बन जायें। मैं नहीं जानता मेरे मित्र ने मौलाना तक मेरा सन्देश पहुंचाया अथवा नहीं परन्तु इतना तो मैं आज भी जानता हूं मौलाना गजनवी आज भी गजनवी ही हैं भारतीय नहीं।

लगभग छः महीने पश्चात प्रान्तीय धारा सभाओं का इलैक्शनी दौरदौरा था। हिन्दू सीटों पर तो कांग्रेस का निष्कण्टक राज्य है ही, परन्तु मुसलमानी सीटों पर लीगी उम्मीदवार का मुकाबला करना कांग्रेस के लिये लोहे के चने चबाना है। चौधरी मुहम्मद हुसैन और इफ्तखार दो मुर्गे जो सन ३५ में भूले भटके किसी तरह कांग्रेस के चक्कर में फ़ंस

गये थे वे अब फरार हो चुके थे। अब किस मुसलमान की हिम्मत थी वह कांग्रेस के टिकट पर खड़ा हो। तो क्या पंजाब-कांग्रेस केवल हिन्दू कांग्रेस बनकर रह जायगी। एक भी मुसलमान कांग्रेस टिकट पर सफल न होसका तो फिर कांग्रेस के राष्ट्रीय स्वरूप को तो बहुत धक्का लगेगा परन्तु किया क्या जाय, मुसलमान कांग्रेसी मुसलमान को तो मूसलमान समझते हो नहीं।

आखिर गजनवी साहिब का भाग्य फिर चमका। उनके भाग्य में एम. एल. ए. बनाना लिखा ही था। एक संयुक्त सीट से मौलाना का कामयाब बनाने के लिये कांग्रेस ने सिर धड़ की बाजी लगा दी। लगीं बड़ी-बड़ी अपीलें निकलने--भारत के सच्चे सपूत, कुर्बानीयें-मुजस्सिम दाऊद साहिब को वोट दीजिये। कौमके सच्चे खादिम, वतन के जानसार रहनुमा गजनवी साहिब को क़ामयाब बनाइये। अगर आप अपने मादरे वतन को आजाद देखना चाहते हैं तो मौलाना गजनवी के नाम पर्ची डालिये। कहते हैं मौलानाके सिर पर कामयाबी का सहरा बन्धवाने में कांग्रेस को अपने फंड में से एक लाख रुपया खरच करना पड़ा। गरीब मजदूरों किसानों की गाढ़ी कमाई को पानी की तरह बहाकर हिन्दू वोटों की महरबानी से आखिर मौलाना गजनवी एम. एल. ए. बन ही गये।

कुछ दिन पश्चात मुलतान जाता हुआ मैं लाहौर उतरा। वही मेरे मित्र मुझे मिल गये। इलैक्शन की बातें छिड़ गईं। मैंने कहा--भाई रामचन्द्र! योग्य से योग्य हिन्दू को ठुकरा कर रद्दी से रद्दी मुसलमान को इतना ऊंचा उठा देना—कांग्रेस की यह नीति मुझे पसन्द नहीं।

"लेकिन कांग्रेस-पार्टी में एकाध मुसलमान तो होना ही चाहिये।"

"तो ऐसा मुसलमान आप लोगों को मुस्लिम-सीट से ही लेना चाहिये था। एक तो हिन्दुओं की सीटें पहले ही थोड़ी हैं दूसरे कौमन सीट जिस पर हिन्दू बहुत जल्दी कामयाब हो सकता था वह भी आपने मियां को दिलवा दी।"

"लेकिन कांग्रेस की नजरों में तो हिन्दू-मुसलमान की कोई तमीज नहीं।"

"लेकिन कजदूरों की साट पर तो किसी मजदूर को ही कामयाब बनाना चाहिये था। मस्जिद में अजान देने वाले मुल्ला का मजदूरों से क्या सम्बन्ध। मुझे गजनवी साहिब की देश-भक्ति पर विश्वास नहीं।"

"आप कुछ भी कहें पराशरजी महाराज! अब तो पांच साल तक यह सीट मौलाना के ही पास रहेगी।"

"पांच साल ही नहीं, पचास साल तक रहे, भाई रामचन्द्र! लेकिन इतनी बात तो अभी से नोट कर लीजिये यह मियां तभी तक कांग्रेस में हैं जबतक कांग्रेस के प्रधान हैं। प्रधान पद से हटे और साथ ही काँग्रेस से भी हटे। इन्हें इतना महत्व न दीजिये"।

"मौलाना से हमें ऐसे व्यवहार की आशा नहीं"

"जफरअली खां, हसरत मोहानी, डाक्टर आलम, जिन्नाह से भी तो ऐसी कोई उम्मीद न थी"।

कुछ दिन पश्चात, शायद उन दिनों मैं गोंडा में कृष्णप्रसादजी के पास ठहरा था। प्रातःकाल ज्यूं ही एजन्ट ने "लीडर" मेज़ पर रखा एक फूलदार समाचार ने मुझे आकर्षित किया। मैंने पेपर उठाया। मेरा स्वप्न सत्य निकला। "मौलाना दाऊद गज़नवी कांग्रस को छोड़ मुस्लिम लीग में शामिल हो गये।" मेरे दिल पर एक जबर-दस्त चाट लगा। मुझे ऐसा लगा मानों मेरी आंखों के सामने मेरी कुलमाता को किसी दुष्ट ने ठोकर से अपमानित किया हो। कुछ दिन पश्चात वही मेरे लाहौरी मित्र मुझे हरिद्वार में मिले। मैंने भी तो आओ देखा न ताओ झट बम का गोला छोड़ ही दिया—"कहो भाई? क्या समाचार है तुम्हारे दाऊद गजनवी प्रधान एम० एल० ए० का"

"अजी पाराशरजी महाराज! जख्मों पर नमक काहे को छिड़कते हो। इस शख्स ने तो पंजाब में कांग्रेस की नाक ही काट डाली। हमें तो किसी को मुहं दिखलाने लायक न छोड़ा। कांग्रेस को छोड़

जाता कोई बात न थी परन्तु कांग्रेस को छोड़ हमारे दुश्मनों से मिल कर अब तो यही शख्स लीग का ढंढोरची बन कांग्रेस की जड़ें खोद रहा है।

"मैंने कहा, भाई रामचन्द्र! तुम्हारा रोना उचित है परन्तु इतना तो बताओ एक साधारण से मुल्ला को इतने महत्व के स्थान पर बिठलाने का अपराधी कौन ?

(३)

"अजी पाराशरजी महाराज! आप बहावलपुर का रोना रोते हैं परन्तु आप का यह हरिद्वार क्या बहावलपुर से कम है"––विश्वज्ञान मन्दिर के गंगा तट वाले दक्षिणी बरामदे में बैठे हुए श्री सन्त कृपालु देवजी को अपने भ्रमण वृत्तान्त सुना रहा था—किस प्रकार बहावलपुर में धीरे-धीरे मन्दिरों को मस्जिदों का रूप दिया जा रहा है, किस प्रकार मुसलमानों को झटपट बजाज बना उन्हें जाला परमिट देकर हिन्दुओं के परम्परागत कपड़े के व्योपार को नष्ट किया जा रहा है यह सब दुखड़े सुना ही रहा था कि सन्तजी महाराज गम्भीर मुद्रा धारण कर बड़े दुख के साथ बोले—"यह आपका हरिद्वार भी तो धीरे-धीरे बहावलपुर बनाया जा रहा है।"

"मैं सहम सा गया––हरिद्वार का बहावलपुर से क्या संबंध। मैंने कहा––परन्तु यहां तो बिल्कुल राम राज्य है।'

"यहां रहो तो पता लगे, रामराज है या इस्लामराज"

लेकिन यहां तो शहर कोतवाल ब्राह्मण है और यूनियन का चेयर-मैन भी एक कांग्रेसी है।"

"लेकिन हमारी किस्मत का मालिक तो वही है ज्वालापुर का अब्दुलअजीज"

"कौन है वह" ?

"वही जो आजतक दाने २ को मोहताज था आज हरिद्वार यूनियन का चेयरमैन बना बैठा है।".

"लेकिन चेयरमैन साहिब तो हिन्दू हैं"

"हैं तो, लेकिन उन्हें तो अपनी वकालत से ही फुरसत नहीं। नका तो नाम ही नाम है काम तो यही वायस प्रैजीडन्ट अब्दुल अजीज ही करता है। इस शख्स ने ज्वालापुर में मस्जिदें बनवाईं, अवधूत मंडल के पास नजूल की जमीन पर एक बहुत बड़ी मस्जिद खड़ी कर दी। १६ अगस्त के दिन इसी शख्स की रहनुमाई में मुसलमानों का एक बहुत बड़ा जलूस हर की पौड़ी पर तकबीर और याअली के नारे लगाता फिरा। अब यही शख्स हरिद्वार में मांस और शराब की दुकानें खुल-वाने की योजना बना रहा है।"

"लेकिन चेयरमैन साहिब को तो इसकी इन हरकतों पर जरूर ध्यान देना चाहिये।"

"दें कैसे। वे हैं कांग्रेसी और कांग्रेसी का सबसे प्रमुख सिद्धान्त है कि मुसलमानों के साथ जहां तक हो सके मिलकर रहा जाय। उन्हें यदिच्छा सब कुछ करने दिया जाय। जहां तक हो सके उनका हौसला बढ़ाया जाय। उन्हें थपकी दी जाय। यह बात कोई हरिद्वार के कांग्रे-सियों की ही नहीं सारे हिन्दुस्तान भर में यही कुछ हो रहा है। दिल्ली की केन्द्रीय सरकार के कांग्रेसी भी तो लीग के प्रति ऐसा ही व्यवहार कर रहे हैं।"

"लेकिन यहां इतने साधू-सन्त भी तो हैं।"

"इन्हें तो अपने हल्वे मांडे से ही फुरसत नहीं। यह लोग अपने अन्नदाता से क्यूं बिगाड़ पैदा करने लगे।"

"अन्नदाता, अब्दुलअजीज।"

"अन्नदाता न सही परमिट दाता हो सही और आजकल परमिट से ही तो अन्न मिलता है—ओ३म् श्री परमिट्टाय नमो नमः।"

"इन पंड़ों को ही कुछ न कुछ करना चाहिये।"

"इन पंडों की असली हालत आप जानते नहीं। अगर यह पंडे कुछ करने वाले होते तो आज ज्वालापुर में ही इनकी यह दुर्दशा न

होतो । इन पंडों ने ही तो अपने कुकृत्यों से पंचपुरी में यवनों की इतनी संख्या बढ़ाई । ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम के पास जो कबरें बनी हैं सब पण्डितानियों का ही तो पुन्य-प्रताप है । इन पंडों को हजार बार समझाया वे कनखल-हरिद्वार को ज्वालापुर से पृथक कर दें ताकि इन दोनों तीर्थ-स्थानों के प्रबन्ध में किसी भी कांग्रेसी, लीगी अथवा अहरारी मुसलमान का हाथ न रहे । मुसलमान भले ही वह कांग्रेसी ही क्यूं न हो मजहबी मामलात में तो वह पक्का मुसलमान है । क्या यह शर्म की बात नहीं कि हरिद्वार की किस्मत का फैसला ज्वालापुर के कसाई के हाथों में सौंप दिया जाय ? लेकिन यह पंडे नहीं माने ।"

"लेकिन यहां इतनी संस्थायें--ऋषिकुल-गुरुकुल भी तो हैं ।

"इन लोगों को हरिद्वार के भीतरी मामलोंसे क्या काम । यह लोग हरिद्वार में हरिद्वार के लिए थोड़े ही बैठे हैं यह लोग तो हरिद्वार के बड़े नाम का फायदा उठाने के लिये ही यहां डटे हुए हैं ।"

"और यह जो लाखों यात्री गाड़ियों में भर २ कर आते हैं ।"

"यह लोग तो यहां चार दिन की मौज मनाने आते हैं, कोई संघर्ष करने थोड़े ही आते हैं । इन्हें हरिद्वार की पवित्रता से क्या मतलब, इन्हें तो वासनामय सुखसे सरोकार है । जैसे यह लोग स्वयं थे वैसा इन्होंने हरिद्वार को बना लिया । मुझे अच्छी तरह याद है,पाराशरजी ! जब मैं पहला बार हरिद्वार में आया रेल से हर की पौड़ी तक कोई सड़क न थी । टांगा-टमटम भी एक न था और आज आप स्टेशन से हरकी पौड़ी तक का नजारा देख लीजिये । हरिद्वार में दो सिनेमा हैं । टांगे वाले और लाठियां बेचने वाले सभी मुसलमान हैं । इन यात्रियों को लाख समझाया कि सामान ठैले पर धरा और खुद पैदल चले गये आखिर स्टेशन से धर्मशाला है कितनी दूर अधिक से अधिक चार फरलांग । बद्रीनाथ तक तो यह लोग पैदल चल कर जा सकते हैं परन्तु स्टेशन से धर्मशाला तक पैदल चल कर नहीं जा सकते । आप सारे प्लेट फार्म पर घूम आइये । भगवदभक्ति और आत्मिक शान्ति का कहीं

नाम तक नहीं। चन्दएक पेशा-वर लोग यत्र-तत्रअपना मायाजाल फैलाये बैठे हैं। हरिद्वार तो अब हलवाई द्वार बन गया। हर एक अपने ही स्वार्थ की चिन्ता में है। हरएक का अपना २ रास्ता है। ऐसे केन्द्रीय तीर्थ स्थान पर भी एक होकर हम अपने भविष्य पर विचार नहीं करते। फिर अगर मुट्ठी पर अनपढ़, कमअक्ल, गरीब, सर्वथा साधन हीन मुसलमान आज इस पंचपुरी के कर्त्ताधर्ता बने बैठे हैं तो आप ही सोचिये पाराशर जी! इस हमारे दुर्भाग्य के लिये अपराधी कौन ?

(४)

एक प्राचीन गाथा है, सुन्द-उपसुन्द दो सगे भाई थे। थे बड़े वल-वान। घोर तपस्या द्वारा उन्होंने ब्रह्मा को प्रसन्न किया—वर मांगों ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर कहा।

"हम अमर हो जायें--हमें वर दीजिये।"

"अमरत्व का वरदान नहीं मिल सकता तथापि अपनी मृत्यु का प्रकार स्वयं चुन सकते हो।" ब्रह्मा ने कहा

"हमारी मृत्यु हमारे अपने हाथों से ही हो।"

"बहुत अच्छा।"

राक्षस प्रसन्न थे, उन दोनों में इतना प्रेम था कि एक दूसरे को देखकर जीते थे--फिर उनमें परस्पर संघर्ष कैसा। अब दोनों लगे स्वच्छन्द विचरने और मन माने अत्याचार करने। देवताओं ने हाहा-कार मचाई, सुन्द-उपसुन्द का नाश करने के लिये ब्रह्मा ने एक अत्यन्त स्वरूपवती कन्या की रचना की और इस कन्या को दोनों भाइओं के सामने भेज दिया। ज्यूं ही दोनों भाइओं ने तिलोत्तमा को देखा उसे प्राप्त करने के लिए दोनों में तकरार हो गया।

"यह मेरी है--अवे हट, इसे मैंने पहले देखा" बातों २ में धक्का-मुक्की होने लगी। नौबत मारपीट तक आगई और दोनों ही एक दूसरे के हाथ से मारे गये।

बीसवीं शताब्दि के किसी ब्रह्मा ने हिन्दू-मुसलमान को लड़ाने के

लिये मेम्बरी रूपी तिलोतमा का सृजन किया। इस चूंगी की मेम्बरीने न केवल हिन्दू-मुसलमान को ही बल्कि हिन्दू-हिन्दू को भी आपस में शत्रु बना दिया। चुंगी की मेम्बरी की अपार महिमा है। कुछ लोगों का तो यहां तक विचार है कि त्रेता और द्वापर युग की कामधेनु गौ ने ही कलियुग में चुंगी की मेम्बरी का रूप धारण कर लिया।

उन दिनों लाहौर के हिन्दुओं में हाहाकार मच गया। बात यह थी कि बरतानवी सरकार ने सन ४१ की मर्दुमशुमारी के मुताबिक लाहौर कौर्पोरेशन की सीटों की बन्दर बांट की। कार्पोरेशन की ४३ सीटों में से २ सिखों को १२ हिन्दुओं को और २६ मुसलमानों को। हिन्दुओं का यह कहना था कि ४१ की मर्दुमशुमारी गल्त की गई थी। कांग्रेस की अज्ञानुसार हिन्दुओं ने जनगणना का बहिष्कार कर दिया था, मुसलमानों ने एक-एक के दस-दस लिखाये। हिन्दुओं का यह कहना था कि सीटों का विभाजन राशन कार्डों के अनुसार की गई गणना के अनुसार हो क्योंकि यह जनगणना ठीक थी। परन्तु ठीक गणना के अनुसार चलने से सरकार का अपना स्वार्थ खतरे में था। ठीक गणना के अनुसार हिन्दुओं को यदि मुसलमानों की अपेक्षा अधिक सीटें दी जातीं तो कहर मच जाता, जमीन फट जाती, आसमान टूट पड़ता हलाकु और चंगेज की तलवारें खून की नदियां बहा देतीं परन्तु अपने साथ खुले आम अन्याय होता देख हिन्दू सन्तोष के घूंट पीकर रह जाता है।

हिन्दुओं ने कार्पोरेशन के बहिष्कार का निर्णय किया। हड़ताल हुई, धड़ल्लेदार लैक्चर भी हुए। कौंसल औफ एक्शन भी बन गई। बड़े-बड़े चौड़े घोषणा-पत्र भी प्रकाशित हुए; यह घोषणा की गई कि जबतक हिन्दुओं से न्याय न होगा बायकाट जारी रहेग।

मैं उन दिनों नकोदर में अपने बाल-सखा टेकचन्द के पास था। भाई टेकचन्द बोले—"श्याम ! इस बार तो लाहौर के हिन्दुओं ने बड़ी हिम्मत दिखाई"।

"देगची का उबाल है, टेकचन्द ! कुछ ही दिन में इस हिम्मत के करिश्मे खुद ही देख लोगे"।

"तो क्या तुम्हारे ख्याल में बायकाट कामयाब न होगा"।

"बिल्कुल नहीं"।

"कारण"।

"ऐसी हड़तालें पहले भी तो की जा चुकी हैं। यह बाजू पहले भी आजमाये जा चुके हैं। हम लोग भावुक हैं। पिछले दिनों व्योपारियों ने हड़ताल की। कई एक दुकानदारों ने दो घड़ी की इज्जत कमाने के लिये हड़ताल के दिनों का किराया माफ करने की घोषणा की। जनता ने तालियां बजाईं। समाचार पत्रों ने फोटो छापे परन्तु हड़ताल समाप्त होते ही यही मकानदार किरायेदारों के गले में अंगूठा दे हड़ताल के दिनों का भी किराया ले गये। हमारा रोना धोना हमारी स्वार्थपूर्ति तक ही सीमित है। मेरा ख्याल है कि सरकार कुछ एक बड़े-बड़े हिंदुओं को नामजद कर देगी और बस फिर खेल खत्म और पैसा हज्म।"

"तो क्या तुम्हारे ख्यालमें यह लोग नामजद होना स्वीकार करलेंगे।"

"यह सारा प्रपंच है ही इसीलिये।"

और सचमुच हुआ भी यही। संघर्ष-समितिके लगभग सभी सदस्यों को सरकार ने कारपोरेशन का मेम्बर नामजद कर दिया। बस फिर क्या था आप सुखी तो जग सुखी। सैनापतियों ने न केवल हथियार ही डाल दिये बल्कि वे तो अपनी सैना को छोड़ विरोधी सेना में जा मिले। एक खानबहादुर कार्पोरेशन के मेयर चुने गये। डिप्टी मेयर चुने गये अम्बेदकारी दल के सुखलाल। सेक्रेटरी और अण्डर सेक्रेटरी सब के सब मुसलमान और वे भी लीगी। एक करेला और दूसरा नीम चढा। नामजद सदस्यों को इतनी तो आशा थी कि किसी-न-किसी सब-कमेटी में उन्हें अवश्य ही लिया जायगा, परन्तु लीगी मेयर ने साफ ऐलान कर दिया, किसी भी गैर लीगी को किसी भी सब-कमेटी में नहीं लिया जायगा और न ही उसे कारपोरेशन में अन्य कोई स्थान ही प्राप्त होगा।

दूध से जैसे मक्खी निकाल बाहर फेंक दी जाती है उसी प्रकार ८० प्रति शत टैक्स देने वाले हिन्दू कार्पोरेशन से निकाल बाहर फेंक दिये गये। एक हिन्दू सदस्य ने थोड़ा सा प्रौटैस्ट किया—लीगी मेयर ने फिर खड़े होकर कहा--"कार्पोरेशन पर लीगियों का राज है। जो हमारे जी म आगया हम करेंगे। अगर तुम लोग यहां आकर चुपचाप बैठना चाहते हो तो सिर माथे पर नहीं तो तुम लोग शौक से घर जाकर आराम कर सकते हो। कारपोरेशन का काम तुम्हारे बिना भी चलता रहेगा।"

टेकचन्द बोले--"श्याम! यह तो हिन्दुओं की बहुत बेइज्जती हुई"

"यह तो होना ही था, टेकचन्द! जिस दिन यह स्वार्थी लोग अपने सिद्धांत को तिलांजली दे कौरपोरेशन में गये थे मेरा माथा उसी समय ठनका था। इन्हें चाहिये था अपनी मांगें मनवा कर पीछे कारपोरेशन में जाते, परन्तु स्वार्थी का दीन क्या, स्वार्थी का ईमान क्या और स्वार्थी को संतोष कहां। अपमानित हो यह स्वार्थी लोग वहां गये और आज यदि इन्हीं के कारण सारे हिन्दू समाज को अपमानित होना पड़ा तो आप ही बताइये--इसके लिये अपराधी कौन?

(५)

यह शायद २६ अक्तूबर का बात है। इसी दिन जिन्नाही लीगियों की चंडाल चौकड़ी शासन सभा में पद सम्भालते समय त.ज के प्रति वफादारी की शपथ लेने गौरांग-महाप्रभु के दरबार में उपस्थित हो रही थी। लीगियों के हौसले बेहद बुलन्द हो चुके थे अपने नेता से जो सर्वो-त्तम गुण उन्होंने प्राप्त किया था, वह था निरंकुशता। और आखिर यह गुण उनमें हो क्यूं न। जो वस्तु कांग्रेस को। निरंतर पचास वर्ष के संघर्ष, बलिदान और यातनाओं के पश्चात मिली, वही वस्तु लीग को आराम से घर बैठे ही मिल गई। भगतसिंह की तरह किस लीगी ने हंसते-हंसते गले में फांसी का डोरा डाला, स्वामी श्रद्धानन्दजी के समान किस लीगी ने फौजी संगीनों के सम्मुख छाती तानी; लाला लाजपतराय के समान किस लीगी ने छाती तान कर अपनी छाती में लाठियां बरस-

वाई, बिस्मिल, सुखदेव, राजगुरु के समान कितने लीगी फांसी के तख्ते पर भूले, लाखों कांग्रेसियों के समान कितने लीगियों ने कारागार की यातनायें भोगीं। इतना बलिदान करने के पश्चात जो कांग्रेस को मिला वही लीग को ! मुफ्त की शराब पीकर आज अगर लीगियों का दिमाग काबू से बाहर हो जाय तो इसमें आश्चर्य ही क्या।

आगे-आगे चले लयाकत, निश्तर, चुन्द्रीगर और गजनफर और उनके पीछे चले देशरत्न, जवाहर, पटेल, राजा और राजेन्द्र। उस दिन लीगियों ने अपनी सभ्यता का खूब ही प्रदर्शन किया। जिन्होंने वह दृश्य देखा यावत-जीवन वह उस दृश्य को न भूल सकेंगे। उस दिन की पाकिस्तानी सभ्यता का नमूना यदि साक्षात मुहम्मद साहिब आकर देखते गदगद हो जाते। लीगियों ने नेताओं का रास्ता रोक लिया। उनकी कार के शीशे तोड़ डाले, तिरंगे झंडे फाड़ दिये, जलते हुए सिगरेट उनकी कारों में फेंके, जिनसे गद्दियों को आग लग गई। कारों का आगे चलना असम्भव था, गुंडों ने वह हुल्लड़ मचाया वे वे गंदे शब्द कहे कि बस। ऐसे व्यवहार से अहिंसावादी कांग्रेसियों पर क्या बीती, यह तो वही महापुरुष जानें।

अभी कल ही की बात है, मैं सदर बाजार में वैद्य प्रह्लाददत्तजी के साथ दिल्ली के हाल ही के दंगें के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहा था। वैद्यजी बोले--पाराशरजी ! उस दिन सेक्रेटेरियेट के बाहर हमारे नेताओं की जो दुर्दशा हुई समाचार पत्रों में उसका वर्णन पढ़ हमारे तन बदन में तो आग लग गई। जो कौम अपने नेताओं का अपमान देखकर भी चुपचाप हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती है वह कौम काहे की, उससे तो मिट्टी भली, मार खाकर मुंह पर आती तो है। यह समाचार पढ कर हमसे तो रहा न गया। कुछ दिल जले नौजवान इकट्ठे हुए। निश्चय हुआ कि लीगी-गुंडागर्दी से नेताओं की मानमर्यादा की रक्षा अवश्य ही की जाय।

बस फिर क्या था। अगले दिन संघ के सूरमा भी रंग मंच पर जा

पहुंचे । अब चला चक्र शठेशाठ्यम् का। लीगी भी दल-बल सहित पहुंचे हुए थे। ज्यूंही उन्होंने गुंडापन का श्रीगणेश किया इधर से भी ईंट का जवाब पत्थर से मिला। अब किस लीगी की मजाल थी जो नेताओं के पास तक फटक पाये।

"सचमुच आपके स्वयंसेवकों ने बहुत अच्छा किया" मैंने कहा।

"लेकिन जिनके लिये किया उन्होंने तो आज तक न कहा कि अच्छा किया, उल्टे उस स्थल पर संघ के स्वयंसेवकों की उपस्थिति को बहुत बुरा मनाया। और आगे को वहां न आने का आदेश दिया। इन नेताओं को भी लीगी गुंडागर्दी का मजा चखने का शौक सा पड़ गया है। हमारे स्वयंसेवक तो वहां जायंगे नहीं आप ही बताइये अब यदि लीगी वहां उपद्रव मचायें, आवाजें कसें, मोटरों में सिगरेट फैंके, झंडे जलायें तो उनको गुंडापन के अर्थ उत्साहित करने के लिये अपराधी कौन ?

(६)

राष्ट्र-रथी जवाहर के लिए मेरे हृदय में जो सन्मान की भावना है उसे यहां शब्दों में व्यक्त करना आवश्यक नहीं। जिन भद्र पुरुषों ने मेरे लिखे ग्रन्थ जवाहर-दिग्विजय को पढ़ा है वे इस बात को भली प्रकार जानते हैं, मेरे हृदय में जवाहर के प्रति किस कदर सुन्दर भावना है। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि रियासत काश्मीर के भीतरी मामलों में दखल देते हुए शेख अब्दुल्ला के पक्ष को इतना महत्व देकर जवाहरलाल ने अच्छा नहीं किया। मैं अब्दुल्ला को अच्छी तरह जानता हूं। साधारण से स्कूल मास्टर की स्थिति से ऊपर उठते-उठते किस प्रकार उस शख़्स ने साम्प्रदायिकता का आश्रय ले ३१ में काश्मीर में खून की नदियां बहाईं, किस प्रकार इस शख़्स ने महाराज के महल को उड़ा देने का भयानक षड़यंत्र रचाया, फिर जमाने की रुख को पहचानते हुए इस छद्मवेषी ने राष्ट्रीयता का बहरूपियापन धारण किया। नेशनल कांफ्रेंस का ढ़ोंग रचा किस प्रकार इस शख़्स ने आलइंडिया शोहरत हासिल

का, यह भी मैं अच्छी तरह जानता हूं। १९३४ में अपनी स्वर्गीय माताजी के साथ जब मैं श्री अमरनाथजी की यात्रा पर गया था अनन्तनाग में मैंने शेख साहिब के दो लैक्चर सुने थे। वे लैक्चर काश्मीरी जबान में थे। उस व्याख्यान का शब्दश: भावार्थ तो मैं समझ न सका परन्तु इतना तो उनके भाषण से स्पष्ट था कि वे मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़का रहे थे।

शेख अब्दुल्ला अपने को काश्मीर का फ्युहरर समझता है। डोगरा राज को समाप्त कर वह काश्मीर को बी ग्रुप का एक शक्तिशाली अंग बनाना चाहता है। हैदराबाद के मामले पर तो वह खामोश है, परन्तु अमृतसर की सन्धि का शोर मचा-मचा कर वह ५० लाख रुपये में काश्मार की रियासत हैदराबाद के निजाम के हाथों बेच देना चाहता है। अभी पिछले दिनों इसी शख्स ने महाराज के शासन को उल्ट देने के लिए बड़ा भयानक षड़यंत्र रचाया। पुरोग्राम यह था कि सब पुलों को उड़ा दिया जाय। टैलीग्राफ के तार काट दिये जायें। मुस्लिम जनता विद्रोह कर दे, मुस्लिम सिपाही विद्रोही जनता का साथ दें। महलों को जला कर राख का ढेर कर दिया जाय—परन्तु महाराज का भाग्य अच्छा था उन्हें दीवान योग्य मिला था। शेख साहिब का षड़यंत्र विफल हुआ, शेख साहिब गिरफ्तार कर लिये गये।

मैं नहीं समझता काश्मीर में मुसलमानों को क्या कष्ट है, अलवत्ता मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि काश्मीर में हिन्दुओं को बेहद कष्ट हैं। मुझे अनेक ऐसे काश्मीरी हिन्दू मिले जिनकी सारी उमर काश्मीर राज्य की सेवा में बीत गई, परंतु जिन्हें आज भी वहां का नागरिक कहलाने का अधिकार नहीं मिला। जम्मू और श्रीनगर में उन्होंने स्थायी रूप से शानदार कोठियां बनाली हैं. स्थायी तौर पर उन्होंने काश्मीर को अपना घर बना लिया परंतु वे लोग न तो रियासत में नौकरी ही कर सकते हैं, न वकालत और न ही कोई अन्य बनज-व्योपार, कितने ही वैभवशाली वंशों को इसी कानून का शिकार बन

नष्ट-भ्रष्ट होते मैंने अपनी आंखों देखा। बाहर के पंजाबी हिन्दुओं का रियासत में कोई दखल नहीं परन्तु बाहर के मुसलमान रियासत में अच्छे से अच्छे ओहदों पर लगे हैं। हैदराबाद में हिन्दी का नाम तक लेना एक घोर अपराध है, हिन्दी प्रचारिणी सभा खिलाफे कानून जमायत है, उस्मानिया यूनीवर्सिटी में शिक्षा का माध्यम एम. ए. क्लास तक उर्दू है, लेकिन काश्मीर में उर्दू ही राजभाषा है। डाइरैक्टर औफ एज्यूकेशन उर्दू प्रेमी मुस्लिम सज्जन हैं। राज का सारा कार्य-भार उर्दू में ही चलता है। हैदराबाद में जितने भी अफसर हैं वे सब के सब मुसलमान हैं और वे भी यू.पी. और पंजाब से इम्पोर्ट किये हुए। हैदराबाद का खजाना न केवल हैदराबादी मुसलमानों के लिए बल्कि सारे संसार के मुसलमानों के लिए खुला है। हिन्दुस्थान में एक भी ऐसा शहर, कस्बा, ग्राम नहीं जहां की मस्जिद का मुल्ला निजाम साहिब से सौ सवा सौ मासिक वेतन न पाता हो, विपरीत इसके काश्मीर में काश्मीर से बाहर का कोई भी हिन्दू नौकरी नहीं कर सकता, जमीन नहीं खरीद सकता, जायदाद नहीं बना सकता। हैदराबाद में मुंजे, श्यामप्रसाद मुकर्जी, श्री सावरकर, भाई परमानन्द, रामचन्द्र दहलवी को आने की इजाजत नहीं काश्मीर में जिन्ना से लेकर दाऊद गजनी तक जितने भी लीगी हैं रियासतकी ओर से इनका स्वागत होता है। ऐसी काश्मीरी रयासत में अब्दुल्लाका पक्षपूरणे राष्ट्रपति जवाहर कार्य समिति की आवश्यक मीटिंग तक छोड़ काश्मीर की ओर चल दिये।

यह उस दिन की बात है जिस दिन रियासती पुलिस ने कोहाला के स्थान पर राष्ट्रपति को रोक लिया था और अखबारों ने यूँ ही खबर उड़ादी थी कि राष्ट्रपति कश्मीरी सेना की संगीनों से जख्मी हो गये। मेरे एक कांग्रेसी मित्र बोले--"रियासत के बेलगाम शासन के विरुद्ध अब्दुल्लाका नाराये बगावत बिलकुल वाजिब है" मैंने कहा अब्दुल्ला का नाराय बगावत वाजिब हो अथवा गैर वाजिब, परंतु

जवाहर का अब्दुल्ला की मदद के लिए भागे भागे जाना यह तो सरा-सर गैर वाजिब ही है।

"कदापि नहीं, हिन्दुस्तान और रियासतों की समस्या एक है। कांग्रेस को अब रियासती प्रजा की भा चिन्ता करनी है। पण्डितजी नें काश्मीर पहुंच कर भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इस नवीन अध्याय का श्री गणेश किया है।

मैंने कहा, कितना अच्छा होता अगर यही श्रीगणेश काश्मीर की बजाय हैदराबाद से ही किया जाता। बहावलपुर, भूपाल, रामपुर, जावरा, चरखारी, जूनागढ़ के काले करनामे कौन नहीं जानता। उस ओर से सर्वथा विमुख हो, टेहरी, फरीदकोट, काश्मीर को ही अपने कोपका भाजन बनाना मेरे ख्यालमें ठीक नहीं। कांग्रेसको रयासती मामलों में दखल देना ही है तो एक साथ सभी बड़ी-बड़ी रयासतोंपर धावा बोल देना चाहिए। जवाहरलाल काश्मीर में, पटेल बड़ोदा में, राजाजी ट्रावनकोर-मैसूर में, सरदार प्रतापसिंह पटियाला में, हाफिज इब्राहीम रामपुर में मो० आजाद भूपाल में, आसफअली हैदराबाद नें और डाक्टर किचलू बहावलपुर में इस संघर्ष का नेतृत्व करें। आप अब्दुल्ला की वकालत तो करने बैठ गये परन्तु आपने उसकी मांगों पर भी विचार किया। वह चाहता है काश्मीर नरेश पच्चास लाख रुपया लेकर रयासत उसके हवाले कर दें और काश्मीर मे भी पाकिस्तानी हकूमत की स्थापना की जा सके (२) काश्मीर में हिन्दी का कोई भी स्थान न हो। राज्य का सारा कार्य व्यवहार केवल उर्दू में ही हो (३) मुसलमानों को प्रत्येक उपाय से तबलीग की खुली छुट्टी हो (४) रियासत की ८० प्रतिशत नौकरियां अनपढ़ और उजड्ड मुसलमानों के लिए रिजर्व हों (५) पुरुष के मुसलमान बन जाने पर उसकी औरत को भी मुसलमान ही समझा जाय यदि औरत मुसलमान बन जाए तो पुरुष को पति तभी माना जाय जब वह भी इस्लाम स्वीकार कर ले। (६) गो हत्या की आम इजाजत हो।

यह हैं शेख साहिब की मूख्य मांगें। अब तुम ही बताओ यदि जवाहरलाल या कांग्रेस के दवाब से महाराज अब्दुल्ला की यह मांगें स्वाकार कर लें तो फिर देवभूमि काश्मीर का पाकिस्तान में बदल देवहत्या तथा गोहत्या के भीषण अपराध का अपराधी कौन ?

(७)

दिल्ली में सदर बाजार का जो चौक है उसे बारह टूटी कहते हैं। इस चौक के पूर्वी घेरे में एक काफी बड़ा कुआं है। यह कुआं उस जमाने की यादगार है जब लन्दन पर गोले बरसते थे। जापानी फौजें कौक्स बाजार तक बढ़ चुकी थीं और उनके दो बम कलकत्ता मेंभीगिर चुके थे। दिल्ली में सब जगह खाइयां पाट दी गई थीं। लोग गुजरते थे और आंखें फाड़ फाड़ कर इन खाइयों को देखा करते थे। वे खाइयां तो अपने आप ही भर गईं, परन्तु वह कुआं अब तक उसी अवस्था में सन ४२ के ब्लैक आउट की याद दिलाने को वहीं जमा बैठा है।

यह कुआं कमेटी ने बनवाया था, बिना वर्ण तथा जाति-भेद के इस कुएं पर सभी का अधिकार है। चौक के आस पास में अधिकतर गरीब रहगड़ों के घर हैं। यह लोग कोई भी ऐसा काम नहीं करते जिसकी बदौलत इन्हें अछूत समझा जाय, परन्तु स्वार्थ के अन्धों को समझाय कौन। जो इन्हें मारता है उनको यह गले मिलाते हैं, जो इनके लिए मरता है उन्हें यह अछूत समझते हैं। अमीरों की तो सब जगह मौज है, परन्तु गरीब की जिन्दगी हराम है। अमीरों के घर में ता यमुना माई स्वयं ही नालियों के रस्ते भागे २ आ विराजती है परन्तु वे गरीब जिन्हें कमेटी के नल से पानी लेना होता है उनकी तो मुसीबत हीं है। छोटा सा नल, टूटी मरोड़ो तो सां·· सां और बस ! पानी का एक बूंद नहीं, गर्मी के दिन और भी मुसीबत। एक ही घड़े को भरने में घंटों लग जाते हैं, तिस पर यदि किसी तुअस्सबी सक्के ने नल के मंह पर मश्क लगा दी तो बस फिर तो अल्ला २ खैरसल्ला। गरीब

बेचारे पानी कहां से भरें। कभी २ प्यास के मारे गरीब लोग इसी कुएं पर पानी भरने आ जाते हैं।

एक दिन शाम के लगभग पांच बजे होंगे मैं इसी कुएं के पास से गुजरा। दूर से ही मेरा माथा ठंका। वहां एक अच्छी खासी भीड़ थी। कान दबाकर एक आर से निकल जाने की तो मुझे आदत नहीं। ज्यूंही मैं मौके पर पहुंचा तत्काल मेरे कानों में यह शब्द पड़े—"हम तो तुम्हें इस बाल्टी से पानी भरने नहीं देंगे अगर पानी भरना ही है तो इस हमारे चमड़े के बोके से भरले।"—मैंने देखा एक मशटंडा सा दुष्ट कुएं का मानो चीफ मिनिस्टर बने खड़ा है और उसके सामने एक बेचारी अधेड़ उमर की रहगड़नीं सहमी सी खड़ी है। मुझसे तो रहा न गया। मैंने कहा—क्यूं वे तुम्हें यहां बाल्टियों का इन्स्पैक्टर बना कर किसने बिठाया। मेरे शब्द सुनते ही वह गुंडा आग आग होगया, आंखें क्रोध से भरकर बोला। "तुम कहांसे आ टपके इसके हिमायती।"

"लेकिन तुम किसी को पानी भरने से क्यूं रोकते हो।"

"इसकी बाल्टी गन्दी है"—वह बुढ़िया बाल्टी मेरी ओर दिखाती हुई बोली—देखो जी, मैं घर से अच्छी तरह बाल्टी धो मांज कर लाई हूं। मेरा हिन्दू का धर्म मैं इसके चमड़े का पानी कैसे पीलूं।"

वह मशटंडा फिर कड़क कर बोला—नहीं पीती तो जाओ घर बैठो।

मैंने कहा—देखो जी! जरा सोच समझ कर बात करो। कुआं तुम्हारे बाप का नहीं, सब का है। इस की बाल्टी तुम्हारे चमड़े के बोके से लाख गुना बहतर है। पाकिस्तान यहां नहीं बना सकते। पाकिस्तान यहां से अढ़ाई सौ माल दूर है जरा होश से बोलो—मैंने बुढ़िया की बाल्टी अपने हाथ में थामी और कहा—लो! मैं पानी भरता हूं जिसकी हिम्मत हो रोके।

वह गुंडा पीछे हटकर बोला—"तुम, हां तुम यदि चाहो तो भर

सकते हो। यह कुआं हिन्दू-मुसलमान का है चमारों को पानी नहीं भरने देंगे।

उसके यह शब्द मेरे लिये एक खुला चैलैंज था। मैंने बाल्टी माई के हाथ में दी--मैंने कहा, "माई! तुम पानी भरो और गुंडे को मैंने ललकारा--आओ हिम्मत है तो रोक कर दिखाओ।"

वह गुंडा फिर आगे बढ़ा, बोला--यह कुआं चमारों का नहीं हिन्दू-मुसलमान का है।

"जितने मुसलमान हैं इनमें से आधे पहले चमार थे। अगर एक चमार मुसलमान बनकर पानी भर सकता है तो वह हिन्दु रहता हुआ भी पानी भर सकता है।"--एक तरफ खड़े पोपले मुंह वाले लालाजी बोले--अरी बावली चमड़े के डोल से पानी भरने में हरज ही क्या है चेमारों से तो मुसलमान अच्छे ही होवें।

मुझे ऐसा लगा मानो किसी ने बड़े जोर से मेरी छाती में लात मार दी हो, और उस माई ने कांपते हुए हाथों से बाल्टी कुएं में डाल ही तो दी।

अपनी कुछ भी पेश न जाते देख उस गुंडे ने फिर एक नया पैंतडा बदला--बोला--"अच्छा जी! तुम पानी भरो अभी तुम्हारा अपना चिरंजी पहलवान ही तुम्हारी खबर ले लेगा। और थोड़ी देर में चिरंजी पहलवान मेरे सामने था। वह आते ही बोला "क्या बात है?" मैंने कहा पहलवान साहिब बात क्या है यह वेचारी पानी भरना चाहता है और यह पाकिस्तानीं गुंडा इसे परेशान कर रहा है। कहता है चमड़े के बोके से पानी भर ले बाल्टी से पानी नहीं भरने दूंगा--यह कौन होता है रोकन वाला।

"लेकिन यह कुआं हिन्दू-मुसलमान का है, चमारों को यहां पानी भरने की इजाजत नहीं।" पहलवान साहिब बोले।

अब तो मेरी हिम्मत टूट गई। मैंने कहा पहलवान साहिब! गजब है साईं का-एक सक्का गन्दे से गन्दा चमड़ा कुएं में डाल दे तब तो

कुआं भ्रष्ट नहीं होता और इस बेचारी को धुली मंजी बाल्टी से भी पानी भरने का अधिकार नहीं।

"हम बहस नहीं चाहते--चमार यहां पानी नहीं भर सकता" चिरंजी बोला--

"और अगर यही चमार मुसलमान बन जाय तो"

"हां तब भर सकता है, चमार रहता हुआ नहीं भर सकता।"

मैं आगे कुछ कहना ही चाहता था। चिरंजी एकदम तैश में आ गया। लोगों को उसने हटाना शुरू कर दिया। माई की बाल्टी उसने एक तरफ फैंक दी। मैं ऐसे खड़ा था मानो पत्थर की मूर्ति बनाकर मुझे वहां गाड दिया गया हो। माई एक ओर खड़ी सिसकियां भर रही थी और वह लीगी गुंडा सामने खड़ा व्यंगात्मक हंसी हंस रहा था। थोड़ी ही देर में वह औरत अपनी खाली बाल्टी ले अपने घर की ओर चल दी।

इस दुर्घटना से मुझ पर [illegible]पात हुआ, शहर का सारा कार्यक्रम छोड़ मैं घर की ओर चल दिया। घर पहुंचते दीपक जल चुका था। शान्ति ने कहा--रोटी खालो। मैंने कहा--भूक बिल्कुल नहीं; नींद आ रही है, सोऊंगा। मैं लेट गया, परन्तु आंखों में नींद कहां। सारी रात करवटें बदलते निकल गई। कानों में चिरंजी पहलवान के वही शब्द गूंज रहे थे। चमार पानी नहीं भर सकता मुसलमान हो जाने पर ही वह पानी भर सकता है। और फिर रह रह कर मेरी अन्तरात्मा से पुकार उठती अगर वह औरत और उस जैसे लाखों अभागे पानी के प्यासे तड़प तड़प कर मर जायें या प्राणों की ममता में चोटी कटवा विधर्मी बन जायें तो फिर--हां तो फिर धर्मराज के इसी इन्द्रप्रस्थ में पाकिस्तान की स्थापना का अपराधी कौन ?

(८)

इन्दौर से २२ मील उत्तर-पूर्व दिशा में देवास एक छोटीसी रियासत है। छत्रपति शिवाजी ने यह रियासत अपने दो सैनापतियों को

उनकी सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप दी थी। उन दोनों सरदारों में बेहद प्रेम था शरीर दो थे आत्मा एक थी, परन्तु दुर्भाग्य! उनका सा प्रेम उनकी सन्तान को प्राप्त न हो सका। एक ही रियासत दो बराबर हिस्सों में बटी है। छोटा सा केवल दस हजार की जनसंख्या का शहर आधा जूनियर कहाता है और आधा सीनियर।

जहां-जहां का दाना पानी होता है हर हीले चुगना ही पड़ता है। इन्दौर के भाई हरेन्द्रनाथजी ने मेरी अंग्रेजी पुस्तक Historical Researches into Hindu mythology के छपवाने का देवास में प्रबन्ध किया था। भाग्य में जो कष्ट भोगना लिखा है वह तो हर हीले भोगना पड़ता ही है। उस पुस्तक को छपवाने के सिलसिले में मैं लगभग ३ महीने देवास में रहा। मैंने तो बचने की बहुतेरी कोशिश की, परन्तु आखिर वहां के लोगों को किसी न किसी प्रकार इस बातका पता चल ही गया कि मैं लेक्चर भी दे लेता हूं। जूनियर के लोग तो बहुत दब्बू और डरपोक हैं, अलबत्ता सीनियर में अच्छा जीवन प्रतीत देता है। छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन की कुछ-कुछ झलक सीनियर में मुझे अवश्य दीख पड़ी। प्रताप जयन्ती का अवसर था। श्री कोठारीजी, पालीवालजी,पूर्णसिंहजी, भीमसिंहजी, मांगेलाल जोशी सभी पीछे पड़ गये। गले पड़ा ढोल बजाना ही पड़ा, जूनियर-सीनियर दोनों में भारत माता की कथा कहनी ही पड़ी।

मैं हिन्दुत्व का परम भक्त हूं, यद्यपि मेरा हिन्दू धर्म केवल हिन्दुस्तान तक ही सीमित नहीं। हिन्दू-धर्म का संदेश मनुष्य मात्र के लिये है। जो लोग हिन्दू धर्मकी तुलना इस्लाम, ईसाइअत अथवा किसी अन्य सम्प्रदाय से करते हैं मेरी दृष्टि में वे हिन्दू धर्म के साथ घोर अन्याय करते हैं। यह दूसरी बात है कि आज हिन्दू धर्म को संसार के सामने वास्तविक रूप में पेश नहीं किया जाता। हिन्दू धर्म के विशुद्ध सिद्धांत इन्सान को मुकम्मिल इन्सान बना देते हैं। आज इस देश को मुकम्मिल इन्सानों की ही आवश्यकता है। मैंने अपना सारा जीवन हिन्दू-धर्म के

महानतम सिद्धान्तों के प्रचार तथा प्रसार में लगाया है। परन्तु मेरा हिन्दूधर्म किसी की उन्नति अथवा आजादी में बाधक नहीं। यही कारण है कि मेरी कथा में सभी विचारों के लोग नियमपूर्वक सम्मिलित होते हैं और अपने आपको इस स्थिति में पाते हैं कि वे सत्यासत्य का अनुशीलन कर सकें।

राष्ट्र निर्माण सम्बन्धी मेरे परिमार्जित विचारों से कुछ एक बोहरा नवयुवक विशेषरूप से प्रभावित हुए। यह बोहरा लोग वास्तव में औदीच्य ब्राह्मण थे। आज तो मुस्लिम लीग के फेर में योगेन्द्रनाथ मंडल और भीमराव अम्बेदकर भी अपने को मुसलमान ही कहने लगे फिर भला खोजों और बोहरों का तो कहना ही क्या। परन्तु इन बोहरों में आज भी वे बुजुर्ग विराजमान हैं जो अपने को मुसलमान कहे जाना कदापि सहन नहीं कर सकते। इन लोगों का रहन-सहन, रस्मो रिवाज मुसलमानों की अपेक्षा आज भी हिन्दुओं से बहुत ज्यादा मिलता है। यदि धीरे धीरे यह लोग हिन्दुओं से दूर हटकर मुसलमानों के अधिक करीब होते जा रहे हैं तो इसमें हिन्दुओं की ही अपेक्षावृत्ति का दोष है।

इन बोहरा नवयुवकों से मुझे बड़ा स्नेह है। मेरे से बात करके वे बड़े प्रसन्न होते हैं और उनके साथ स्वयं बातें करते हुए मुझे भी बड़ी खुशी होती है। मेरे बोहरा मित्र एक दिन बोले--पण्डितजी ; मेरा एक हिन्दू दोस्त है, आजकल जरा मुसीबत में है। आप शायद उसको संकट से निकाल सकें इसीलिए उसकी कथा सुनाने लगा हूं। आपके हिन्दू नेता मुसलमानों पर यह अपराध लगाते हैं कि वे भोले-भाले हिन्दुओं को बहकाते हैं परन्तु मेरा तो ख्याल है इतने हिन्दू मुसलमानों द्वारा धर्मभ्रष्ट नहीं किये जाते जितने कि स्वयं हिन्दुओं द्वारा ही विधर्मी बनने पर मजबूर किये जाते हैं। मेरे मित्र की ही कहानी सुन लीजिये। लड़के का पिता है खंडेलवाल और माता है ओसवाल। बिरादरी ने शुरू में ही दोनों के विवाह को बुरा मनाया। खण्डेल वाल इसलिए बिगड़े

हुए हैं कि ओसवालों में विवाह क्यों किया और ओसवाल इसलिए गरम हो रहे हैं कि खंडेलवाल से विवाह क्यों किया। इन दोनों मियां बीवी की तो कट गई, परन्तु मुसीबत तो अब आ रही है। इनका लड़का काफी बड़ा हो गया है। पिछले साल उसने बी.ए. पास किया है। अब उसके विवाह का सवाल है। ओसवाल या खंडेलवाल दोनों में से कोई भी उसे अपनी लड़की देने को तैयार नहीं। बहुतेरी कोशिश की मगर कोई सुनता तक नहीं। अब आप ही बताइये क्या वह सारी उमर कँवारा ही रहेगा। फिलहाल तो वह फौज में भरती हो ईराक चला गया है, परन्तु अगले साल वह लौट आयेगा। फिर विवाह का सवाल पैदा होगा। इधर नीच से नीच हिन्दू भी उसे अपनी लड़की देने पर रजामन्द नहीं, उधर अच्छे से अच्छे मुसलमान उसे अपनी लड़की दे रहे हैं। मैं नहीं चाहता इतनी छोटी सी बात पर उस मेरे मित्र को मुसलमान बनना पड़े। उसके मुसलमान बन जाने पर मुझे सबसे अधिक दुःख होगा, लेकिन अगर सिर्फ विवाह के कारण वह मेरा मित्र मुसलमान बन गया तो आप ही बताइए पंडितजी महाराज ! इतने अच्छे नवयुवक को धर्मभ्रष्ट करने के लिए अपराधी कौन ?

(६)

मुझे सबसे अधिक मानसिक वेदना उस समय होता है जब मैं किसी हिन्दू के मुसलमान बन जाने की खबर सुनता हूं। हिन्दू से मुसलमान बन जाने पर किसी आदमी के सिर पर सींग तो नहीं लग जाते, परन्तु उस व्यक्ति के भीतर का विचार प्रवाह बिल्कुल बदल जाता है। हिन्दू से मुसलमान बनते ही सबसे पहला परिवर्तन जो मनुष्य में होता है वह यह कि मनुष्य एक दम स्वदेशभक्त से परदेश भक्त बन जाता है। जो व्यक्ति देश के लिए स्वयं हंसते-हंसते न्योछावर हो जाने को तैयार है, उसी आदमी के मुसलमान हो जाने पर फिर उस आदमी को देशभक्त बनाने के लिए जो-जो परेशानियां सहनी पड़ती

हैं वह कांग्रेस के इतिहास से अच्छी प्रकार समझी जा सकती हैं। इसी बात का मुझे दुःख होता है अन्यथा मेरा हृदय तो इतना विशाल है कि यदि कोई व्यक्ति इस्लाम के सिद्धांतों का भले प्रकार से मनन करता है, उसमें ही सुख और शांति प्राप्त करता है, उस के मुकाबले का संदेश उपनिषदों, महाकाव्यों, ब्राह्मण ग्रन्थों तथा भारतीय महापुरुषों के जीवनों में उसे कहीं प्राप्त नहीं होता और वह व्यक्ति बिना किसी प्रलोभन के, बिना किसी बाहरी दबाव के स्वेच्छापूर्वक आत्मोन्नति के लिए सच्चे हृदय से मुसलसान बनना चाहता है तो मैं पहला शख्श होऊंगा जो उस व्यक्ति को कन्धे पर उठाकर मस्जिद तक छोड़ आए। परन्तु ऐसा व्यक्ति आज़तक तो मुझे मिला नहीं और आगे मिलने की सम्भावना नहीं, प्रायः लोग औरतों के प्रलोभन में, दंगे फिसाद में मारकाट से भयभीत प्राणों के लोभ में तथा समाज के सताए हुए ही मुसलमान बनने पर मजबुर होते हैं।

उस दिन मैंने दैनिक पत्र में पढ़ा इन्दौर रियासत के २२ हजार बालाई इस्लाम की शरण में जाने को तैयार हैं। मेरे दिल पर धक्का सा लगा, परन्तु दूर दिल्ली में बैठा मैं कर ही क्या सकता था। कुछ हा महीनों पश्चात कार्यवश मैं इन्दौर में था, रामबिलास तथा सोलंकी महोदय ने सांवेर में एक बृहत् यज्ञ का आयोजन किया था। मुझे भी उस में निमंत्रित किया गया। यज्ञ के मौलिक सिद्धान्तों में विश्वास रखता हुआ भी मैं विशाल पैमाने पर बड़े २ यज्ञों के पक्ष में नहीं हूं तथापि इसी बहाने बालाई लोगों से चार बातें करने के लिये अच्छा अवसर जान मैं सांवेर पहुंच गया।

इन्दौर रियासत काफी लम्बी-चौड़ी रियासत है। सांवेर इन्दौर जिले का एक सब-डिवीजन है। इस इलाके में लग भग पचास हजार ऐसेराजपूत रहते हैं जो किसी समय राजपूताने से भाग आये थे और यहां आकर खेती बाड़ी तथा पशुपालन द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने लगे थे। यह लोग बड़े धर्मात्मा हैं। हिन्दू धर्म के

प्रति इन में अगाध निष्ठा है। यह लोग बड़े मेहनती, सज्जन, ईमानदार तथा श्रद्धालु हैं-परन्तु इन धर्माभिमानी हिन्दुओं की मति न जाने कहां भ्रष्ट हो गई जो यह लोग इन धर्म भक्तों के हाथ का दूध नहीं पीते। अब होता क्या है--हिन्दू तो इनके हाथ का दूध लेंगे नहीं इसलिये बीच में मुस्लिम दलाल आते हैं। वे इन बालाइओं से सस्ता दूध लेकर उसमें गन्दे नालों का, चमड़े की मश्कों अथवा जिस किसी का भी वे चाहें पानी मिला कर मंहगे भाव लाला लोगों की दुकान पर जा कर बेचते हैं। दूध वही है, अपने हिन्दू भाई के हाथ का शुद्ध दूध पीने से पंड़ित जी महाराज का धर्म भ्रष्ट होजाता है परन्तु मियां के हाथों का स्पर्श करते ही वह दूध लाला जी के लिये मानो गंगा जल बन जाता है। हिन्दू तो इन गरीब लोगों का दूध लेंगे नहीं इसीलिये मुसलमान एजेण्ट इन लोगों से मनमाने भाव लेते हैं। इन्हीं कष्टों से तंग आकर इन्हीं बालाईओं में से कुछ लोग मुसलमान हो गये। जो मुसलमान हो गये उनसे हिन्दू परहेज नहीं करते। उन्हें कुएं पर भी चढ़ने से नहीं रोकते। उनके हाथ का दूध भी खुशी२ पी जाते हैं। मुसीबत उन बेचारों की है जो इस कदर कष्ट उठाते हुए भी हिन्दू धर्म के साथ श्रद्धापूर्वक चिपटे हुए हैं।

बालाई लोग मेरे पास आ अपने दुखड़े रोने लगे। मैंने कहा शहर में जाकर मैं इन हलवाईयों को समझाऊंगा। और मैंने सचमुच उन हलवाईयों को समझाया भी बहुत। आखिर कुछ हलवाई सीधे बालाइओं से दूध लेने पर राजी हो गए। परन्तु 'वाह रे धर्मावतारो तुम्हारी लीला। जिन हलवाईयों ने मुस्लिम एजेन्टों द्वारा दूध लिया वह तो तीन चार घंटों में ही बिक गया और जिन्होंने सीधे बालाइयों से दूध लिया वह रात के दस बजे तक वैसे का वैसा धरा रहा। बेचारे हलवाई भी कितने दिन तक खोया मारते रहते। मैं खुद लोगों के पास गया। बहतेरा समझाया। हाथ पैर जोड़े। धर्म का वास्ता दिया। बंगाल और सिन्ध की घटनाएं सुनाई। मैंने कहा इन धर्म बन्धुओं

को परेशान करके पाकिस्तानियों की संख्या न बढ़ाओ। परन्तु यह लाग नहीं माने। बेचारे दुकानदार भी बालाईयों से दूध लेकर कब तक अपने घर में ही उसे इस्तेमाल करते रहते।

इन्दौर में शर्मा जी के खादी स्टोर में बैठे इसी समस्या पर आंसु बहा रहे थे। शर्मा जी भी दुखी थे, मेरी अन्तरात्मा भी कल्प रही थी, चार पांच बालाई भी पास बैठे थे। वे अपने भावी कार्यक्रम का निर्णय मुझ से जानना चाहते थे। मंहगाई के दिन, बाल-बच्चों के पालन पोषण की समस्या, पशुओं का निर्वाह परन्तु दूध का ग्राहक एक भी न--तो क्या फिर इन धर्म वीरों को मुस्लिम एजेन्ट की ही शरण लेनी पड़ेगी। आठ आने सेर का दूध क्या उन के पास पांच ही आने में बेचना पड़ेगा। शर्मा जी बोले, पाराशर जी ! आप हिंदुओं के लिए इतने मरते फिरते हैं, आप ही बताइये अब यह बालाई तंग आकर मुसलमान बन जायें तो इस हिन्दू रियसत में पाकिस्तान की भूमिका बांधने के लिए अपराधी कौन ?

(१०)

गजब है साईं का, दुहाई है राम के नाम की यू० पी० और बिहार में तो सैकंड लैंगूएज के नाम पर प्रत्येक हिन्दी पढ़ने वाले को उर्दू पढ़ना लाजमी है परन्तु पन्जाब, सिन्ध, फ्रन्टियर में उर्दू पढ़ने वालों के लिए हिन्दी पढ़ना एक जबरदस्त गुनाह है, । हिन्दी प्रांतों में जहां उर्दू को प्रोत्साहन देने के लिए पानी की तरह रुपया बहाया जाता है वहां पच्छमी पंजाब तथा फ्रन्टियर में हिन्दी पढ़ाने वाले स्कूलों पाठशालाओं की ग्रान्ट बन्द कर दी जाती है।

गोरखपुर का नाम सभी ने सुना होगा। गीता प्रेस वालों ने गोरखपुर का नाम संसार के कोने २ में गूंजा दिया है। यह वह शहर है जहां आज भी अदालती भाषा हिन्दी ही है। लेकिन अजब बात देखिए गोरखपुर के स्टेशन पर उतरते ही आप के कानों में आवाज आएगी--उर्दू बाजार, चलो कोई उर्दू बाजार और जब आप तांगे में

वैठ उर्दू बाजार पहुंचेंगे तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उस बाजार में न तो आप को कोई उर्दू जानने वाला ही मिलेगा, न ही कोई वहां उर्दू का मदरिसा ही और न ही कोई साईनबोर्ड ही उर्दू में मिलेगा। फिर भी न जाने क्यूं उस बाजार को उर्दू बाजार कहा जाता है :

इसी गोरखपुर जिले की बात है। एक स्थान पर मैंने हिन्दी के पक्ष में बहुत जबरदस्त व्याख्यान दिया। मैं हिन्दी का भक्त हूं, इस लिए कि यह वैज्ञानिक भाषा है। उर्दू कोई भाषा नहीं. हिन्दी को आप फारसी लिपी में लिखिये बस वह उर्दू बन गई। उर्दू को तो कुछ हिंदू वकीलों तथा प्रताप-मिलाप-वीर भारत ने ही जिन्दा कर रखा है। खैर ! मैं यहां उर्दू की कबर खोदने तो बैठा नहीं मैं तो एक आप बीती घटना पाठकों को सुनाने लगा हूं। जिस महाशय के हां मैं ठहरा था वह वहां की म्युनिस्पैलिटी के सदस्य थे। मैं ने उनसे प्रेरणा की वे अपने स्कूल में प्रत्येक व्यक्ति के लिए हिन्दी पढ़ना अनिवार्य कर दें। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया बोर्ड की अगली मीटिंग में वह इस प्रश्न को उपस्थित कर देंगें। मुझे सन्तोष हुआ। बोर्ड में कुल दस सदस्य थे। आठ हिन्दू, २ मुसलमान अतः यह प्रस्ताव पास हो जाना स्वभाविक ही था।

कुछ दिन पीछे मैंने अपने मित्र से उस प्रस्ताव के सम्बन्ध में पत्र द्वारा पूछताछ की। उक्त महाशय ने लिखा "आपकी इच्छानुसार हिन्दी सम्बन्धी प्रस्ताव बोर्ड की मीटिंग में प्रस्तुत किया गया। परन्तु आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि आठ हिन्दू सदस्यों में से पांच ने मेरे प्रस्ताव का विरोध किया। एक धर्मावतार तो उक्त प्रस्ताव पर आपे से बाहर होकर बोले—आपने यह प्रस्ताव पेश करके हमारी मातृ भाषा का अपमान किया है। हिन्दी का पढ़ना अनिवार्य होजाने पर मुसलमान भी इसे पढ़ेंगे। जिस भाषा ने ऋषि-मुनियों के श्रीमुख को पवित्र किया हम नहीं चाहते विधर्मी लोग उस भाषा का उच्चारण कर उसकी जन्म-

जात पवित्रता को नष्ट भ्रष्ट करें। आज मुसलमान हिन्दी पढ़ेंगे, कल रामायण महाभारत बांचेंगे, परसों वेद पढ़ने लगेंगे, हम इसे कदापि सहन नहीं कर सकते। अतः इसी आधार पर हम इस प्रस्ताव का विरोध करते हैं। परिणाम यह हुआ कि तीन वोट पक्ष में और सात विरोध में। आपको मेरे पत्र से दुःख अवश्य होगा, परन्तु हमारे ही प्रांत में, हमारे ही नगर में यदि हम अपनी भाषा, अपनी संस्कृति का प्रसार करने में असफल हुए हैं तो इस हमारी असफलता के लिये अपराधी कौन ?

(११)

१९१९ से ही मेरी जन्मभूमि नकोदर में कांग्रेस का बड़ा बोलबाला रहा है। जंगे आजादी के प्रत्येक दौरमें नकोदर के देशभक्तों ने बढ़-चढ़ कर कुर्बानियां की हैं, परन्तु देश के दुर्भाग्य के साथ मेरे शहर का भाग्य भी तो बंधा है। जब समूचे भारत में लीग का तूफान उठा मेरा नकोदर भला इस असर से कैसे अछूता बचा रहता। तीन मुसलमान जो कांग्रेस में थे, जो कभी कांग्रेस के प्रधान और प्रधान-मन्त्री तक रह चुके थे समय के फेर ने उनकी बुद्धि को भी फेर में डाल दिया। जमाने का रंग बदलता देख वे भी बदल गये। कांग्रेस को छोड़ सबके सब लीग में जा मिले। जिस नकोदर की गलियों में नित्य प्रति वन्देमातरम् और भारतमाता की जय के जयकारे गूंजा करते थे, उन्हीं गलियों में अल्लाहू-अकबर की सदायें गूंजने लगीं। जिस पवित्र पुरी के दरोदीवारपर क्रान्ति चिरायुहो का विजय-घोष अंकित था आज उन्हीं ईंटों पर काले तार-कोल से "मुस्लिम है तो मुस्लिम लीग में आ" लिखा मिलेगा। हाय दुर्दैव ? क्या इन्कलाब जिन्दाबाद का यही मतलब था।

उस दिन अहले-इस्लाम के कुल तीन छोकरे ठेठ हिन्दू मुहल्ले में आ खुले आम गालियां निकाल गये, परन्तु एक हिन्दू भी तो घर से बाहर नहीं निकला। इस घटना के तीन चार दिन पीछे मैं नकोदर पहुंचा बात अभी गरम थी, मैंने पूछा--भाई टेकचन्द ! यह उल्टी गंगा कब से बहने लगी ? टेकचन्द मेरे बाल सखा हैं, बारहवीं जमात तक एक ही

सीट पर बैठे इकट्ठे पढ़े हैं। टेकचन्द ने नगर के हिन्दू नवयुवकों का अच्छा संगठन किया है। संघका संचालन भी टेकचन्द के ही हाथों में है, मैंने कहा भाई टेकचन्द! आखिर यह तुम्हारे अखाड़े कब काम आयेंगे। टेकचन्द बोले—श्याम! हमारी अपनी कमजोरियां ही अपनी शत्रु हैं। पास में ही एक अच्छा खासा जवान बैठा था, उसकी ओर संकेत करते हुए टेकचन्द बोले यह देखिये हमारा शेर। गुंडे जिसका नाम सुनते ही थर्रा उठते हैं—कुछ दिन हुए हमारे एक स्वयं सेवक को अकेले पा कुछ लीगी गुंडों ने उसे घरमें बन्द कर खूब मारा-पीटा। आखिर यह खबर हमारे तक भी पहुंची। यह हमारा महावीर अकेला ही उस महल्ले में जा गर्जा। किसकी मजाल थी जो इसके मुकाबलेपर आए। मुहल्ले भरमें हाहाकार मच गया। पचासों फट्टर हुए। जो सामने आया डंडों की मार का प्रशाद पाया। पचासों गुंडों ने इसे एक साथ घेरा, परन्तु मुंह की खाई। अपनी वीरता के जौहर दिखा यह हमारा सूरमा अपने साथी को राजी खुशी वहां से निकाल लाया।

और इन मुसलमानों की आदत तो आप जानते ही हैं। सबसे पहले खुद ही ताकत के घुमंड में शरारत शुरू करते हैं, इक्के दुक्के पर वार करते हैं, पीठ में छुरियां मारते हैं, राह जाती बहुबेटियों पर आवाजें कसते हैं। जहांतक बस चलता है विरोधी को चोट पहुंचाते हैं और अन्त में सच्चे होने के लिये थाने में जा रोने पीटने भी लगते हैं। हाय लुट गये, हाय मर गये—हाय मार दिये गये, हाय लूट लिये गये की दुहाई मचाते हैं—और हिन्दू कभी पहल तो करेगा नहीं, जब पानी ही सर से गुजरने लगेगा तो आत्मरक्षा के लिये दो-चार हाथ-पैर मारेगा और यदि इस संघर्ष में पिट भी गया तो भी चुप-चाप पट्टी बांधकर घर के भीतर जा लेटेगा। उस दिन नकोदरमें भी यही कुछ हुआ। पुलिस ने तो अपनी कानूनी कार्यवाही करनी ही थी। हमारे शेर को हिरासत में ले लिया गया। अगर ऐसा शूरवीर किसी दूसरे दल में होता तो उसे इसकी बहादुरी के पुरस्कार स्वरूप विक्टोरिया क्रास दिया जाता, परन्तु यहां तो

यह हाल था कि मैं पचासों धनिकों के पास फरियाद लेकर गया लेकिन कोई इसकी जमानत तक देने को तैयार न हुआ। मैं कितने ही लोगों से मिला, किसी ने भी तो सहानुभूति प्रकट न की। उल्टे वे-वे बातें सुननी पड़ीं, शाम ! कि क्या बताऊं। एक बोला—अजी रहने दो साले को हवा-लात में पकी पकाई रोटी तो मिलेगी। दूसरा बोला–अजी इसने ऊधमभी तो बहुत मचा रखा था। तीसरा बोला––हां भाई ऊधम क्यों न मचाता खून भी तो नया है। चौथा बोला––अब तक तो हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई की तरह रहते थे अब तो ऐसे सूरमे पैदा हो गये। सिर पर पगड़ी बांधकर फिरा करो। पांचवां बोला––अजी अखाड़ों में दंड बेकार थोड़े ही पेले जाते हैं। छठा बोला––अजी जब से यह संघ चला तभी से झगड़े भी चले, नहीं तो बड़ी आराम से कटती थी। सभी एक साथ रहते थे क्यों भाई नत्थू ! कभी पहले भी तुम्हारी होश में हमारे इस शहर में हिन्दू-मुसलमान में मारपीट हुई। और नत्थू बोला—अजी अभी देखा ही क्या, अभी तो संघ चला ही है आगे देखना क्या गुल खिलेंगे ; अब तो इस शहर की खैर नहीं ! यह लोग तो भाई, शहर की ईंट-से-ईंट बजा कर ही दम लेंगे।

आखिर खुद अपनी जमानत पर इसे छुड़ाकर लाया। अब आगे का तमाशा सुनिये। घर में घुसा ही था कि बाप ने चार तमाचे जड़े "अबे उल्लू के पट्ठे हमें इस शहर में रहने देगा कि नहीं। दीखता नहीं मुस-लमानी मुहल्ले में तो हमारा घर है। इन्हीं से बैर बांध कितने दिन जी सकेंगे। आया है बड़ा सूरवीर। लिया फ़िरता है संघ को, अरे बावले हमने किसी के घर खाने जाना है। जीते जहान, हम रहेंगे तो स्वराज भी देखा जायगा। बच्चा, तू तो घर की ईंट-से-ईंट बजाकर ही दम लेगा। फिर किसी ने काम नहीं आना। चढ़जा बेटा सूली कहने वाले तो बहुत होते हैं।––उस दिन से यह घर नहीं गया। अगले सोमवार पेशी है। कोई हिन्दू वकील फीस लेकर भी इसकी पैरवी के लिये तैयार नहीं। अदालत में जाकर गवाही तक देने की किसी में हिम्मत नहीं,

वैसे दुकानों पर बैठे सभी बातें मारते हैं, जिन लोगों ने सब कुछ अपनी आंखों देखा वे भी तो सच्ची-सच्ची बात अदालत में कहने को तैयार नहीं। मुखालफों के हौसले बेहद बुलन्द हैं। उनके अपने वकील हैं और ७० के लगभग गवाह हैं। अगर हम इसका उत्साह बढ़ाते तो इसे देख कितने ही और ऐसे नौजवान पैदा होते ! जब इसीकी यह दुर्दशा है तो दूसरा अपनी ऐसी दुर्दशा कराने क्यों इस आग से खेले। यह तो है हमारे अपने लोगोंकी हालत ऐसी अवस्थामें अगर तीन गुंडे हमारे ही घर में आकर हमें लताड़ गये, यदि वह लोग स्कूल में जाते हमारे बच्चों का तंग करते हैं, अगर यही गुंडे नूरमहल की सड़क पर जमा हो हमारी बहुबेटियों पर आवाजें कसते हैं तो आप ही बताइये उन गुंडों के हौसले इतने बुलन्द करने के अपराध का अपराधी कौन ?

(१२)

हैदराबाद में तो मैं आज तक पहुंच ही नहीं सका तथापि हैदराबाद से दूसरे नम्बर पर इस्लामी रियासत बहावलपुरमें मैं अनेक बार गया हूं। पाकिस्तानी हकूमत का अगर किसी ने नमूना देखना है तो बहावलपुर में जा कर देख सकता है। बहावलपुर का नाम बदलकर बगदादुल्जदीद रख दिया गया, सभी शहरों के पुराने नामों को अहमदपुर शरकिया, रहीमयारखां इत्यादि नामों में बदल दिया। प्रत्येक सरकारी नौकर के लिये तुर्की टोपी पहनना लाजमी है। शासन सभा में एक भी हिन्दू वजीर नहीं। प्रत्येक प्राचीन मंदिर को किसी-न-किसी बहाने से मस्जिद में बदलने का षड़यंत्र दिन रात जारी है। सरकारी नौकरियोंसे तो हिन्दुओं को जवाब मिला ही था अब धीरे-धीरे उनकी परम्परागत तिजारत को भी नष्ट करने की कोशिश की जा रही है। सचमुच मैं तो बहावलपुर के बचे खुचे हिन्दुओं को धन्य समझता हूं जो इतने भयंकर अत्याचारों को सहते हुए भी अपनी हिन्दू माता के साथ चिमटे हुए हैं।

लैक्चरों पर तो रियासत में कड़ी बन्दश है परन्तु कथा की छूट है क्योंकि नवाब साहिब अच्छी तरह जानते हैं कि पंडित जी महाराज की

कथा में सिवाय "धर टका" के और तो कुछ होता नहीं। सौभाग्य से हमारा भी कथा प्रणाली से हा अधिक स्नेह है। और वह कथा कैसा होती है अधिकांश पाठक इससे भली भांति परिचित हैं। वैसे तो रियासत की आर्य समाज में कोई जान नहीं, परन्तु जिन दिनों मैं बहावलपुर में था उन दिनों वहां के आर्यसमाज की बागडोर ऐसे भद्र पुरुषों के हाथ में थी जिनके दिल में सच्चे अर्थों में समाज, देश और जाति की निःस्वार्थ सेवा की लग्न है। रियासती वायुमंडल में रहते हुए, मैं समझता हूं वे लोग अपनी सामर्थ्य से बढ़कर समाज सेवा करते थे। समाज के मन्त्री श्रीमुरलीधर जी बजाज तो घंटों मेरे पास बैठ देश और जाति के भविष्य पर आंसू बहाते। रियासत में हिन्दुओं में किस प्रकार संघ-शक्ति पैदा की जाय, दिन रात उन्हें यही एक चिन्ता थी।

एक दिन बाबू मुरलीधरजी बहुत घबराए हुए मेरे पास आए। मैंने कहा, क्यों भाई मुरलीधर, आज घबराहट कैसी। बोले—पाराशर जी क्या बतायें, यहां तो रोज ही कोई-न-कोई प्रपंच रहता ही है, किस-किस को समझाया जाय। अजब परेशानियां हैं। एक लड़की है सोलह सत्रह वर्ष की। उसके बाप ने १३ सौ रुपये में उसे बेच दिया या विवाह दिया आप कुछ भी समझ लें। मुश्किल यह है कि जिस लड़के से विवाह का नाटक रचाया गया वह गूंगा है, बहरा है और पागल है। लड़की बड़ी सुशील और पढ़ी लिखी है। अब लड़की का तो जीवन नष्ट हुआ न। श्वसुर महाशय की पुत्र-वधू पर बुरी दृष्टि है। मानों १३०० रुपया देकर लड़के के बहाने स्वयं अपने लिए ही उन्होंने उस लड़की को पत्नि रूप में खरीदा हो। श्वसुर महाशय ६० से कम क्या होंगे। लड़की दुःखी है। उसका-दुःख उसके कहे बिना ही हर कोई समझ सकता है। घरमें दूसरी काई औरत नहीं। आप ही बताइये बेचारी पर क्या बीतती होगी। कल हम चार पांच आदमी मिल कर श्वसुर महोदय के पास पहुंचे और उन से प्रार्थना की वे अपनी पुत्रवधू के जीवन पर तरस खायें। हम उसका १३०० रुपया भी वापिस दे रहे थे। समाज में अच्छे

२ खानदानों के कई नवयुवक उस अबला से विवाह करने को तैयार हैं। परन्तु श्वसुर महोदय तो लट्ठ लेकर हमें मारने को दौड़े--"तुम मेरी पुत्रवधु को वरगला रहे हो। मैं तुम्हारी नीचता नहीं चलने दूंगा। कल अदालत में तुम्हारे खिलाफ दावा दायर कर दूंगा"--मुसलमानी रियासत है। यहां अजब २ कानून हैं। रियासत खुद इस ताक में रहती कि हम किसी न किसा तरह किसी मुकदमे में फंसें सही। अब आप ही बताइये--पाराशर जी ! उस लड़की का क्या बने। यह दुष्ट रजामन्दी से तो उसे दूसरे विवाह का इजाजत न देगा। उसका रजामन्दी के बिना मौजूदा कानून हमें कुछ करने नहीं देता। लड़की सारी उमर यूं तो बैठी न रहेगी। कल अगर वह पास में ही किसी मुसलमान के घर बैठ जाय तो आप ही बताइये इस हिन्दू कौम की नाक पर दिन रात छुरी चलाने के लिए अपराधी कौन ?

यहां एक ही नहीं एक दो तो रोज ही ऐसे केस हो जाते हैं। एक दूसरे हलवाई महाशय हैं। ७० वर्ष के हो गये। मुंह में दांत एक नहीं। तान हजार में एक १३ वर्ष की छोकरी व्याह लाये। उस दुष्ट को बहुतेरा समझाया—मूर्ख! यह लड़की तो तेरी पोती के समान हैं। काहे को मनुष्यता पर कलंक का टीका लगाता है। अच्छा है इसे अपनी पोती के समान अपने हाथों किसी नवयुवक से व्याह दे। लाख समझाया नहीं माना--बोला, मैं तुम आरियोंकी सब कारस्तानियां जानता हूं, तुम इस लड़की को मुझ से छीनना चाहते हो याद रखो—कुत्ते भले ही खा जायं, तुम्हें खाने नहीं दूंगा।"

और इस घटना के तीसरे ही दिन वह लड़की दस हजार का जेवर लेकर पास में चार दुकानें छोड़ कर दर्जी के हां बैठ गई। वह दर्जी मुसलमान था। अब लाला जी क्या कर सकतेथे मन मसोस कर बैठगये। पुलिस ने भी कुछ मदद न की, सनातन धर्म वालों ने भी ध्यान न दिया आज सुबह रोते २ मेरे पास वर पर आया, परन्तु इस अवस्था में मैं क्या कर सकता था। मैंने कहा--लाला साहिब ! आप ही तो कहते थे

कुत्ते भले ही खाजाएं किसी हिन्दू को खाने न दूंगा" अब रोते काहे को हो--कुत्ते मजे में खा रहे हैं, पास बैठे दिन रात देखते रहिये।

एक ओर लड़कियों का यह हाल है, दूसरी ओर गरीब लड़कों का बिना पैसे विवाह होना मुश्किल। अभी कुछ दिन की बात है कालिज का एक लड़का था। फीस नहीं दे सका। उसके पास ही कुछ न था। कई दिन बेचारा मारा मारा फिरा किसी हिन्दू ने बात नहीं सुनी। मीर साहिब ने चुपचाप आखिरी दिन ६० रुपए प्रिंसीपल को उस लड़के के हिसाब में भेज दिये। अगले दिन एक फौजी अफसर ने अपनी लड़का उसे आौफर की। आज वही दीननाथ अब्दुलरहमान बना फिरता है।

एक ही तो नहीं अनेक मुसीबतें हैं आपको कहां तक सुनाऊं, पंडित जी महाराज--यहां तो कोई ही ऐसा विरला दिन जाता होगा जिस दिन एकाध हिंदू मुसलमान न बना लिया जाता हो। अभी दस दिन हुए एक अच्छे सम्भ्रान्त कुल का हिन्दू अपने अच्छे खासे परिवार के समेत मुसलमान बन गया। हमने उसे वापिस लाने की बहुतेरी कोशिश की लेकिन कठिनाई तो यह है कि एक बार मुसलमान बन कर फिर कोई हिन्दू बन सकता ही नहीं--यहां कानून ही ऐसा है।

मैंने पूछा—मुरलीधर, लेकिन वह परिवार धर्म-भ्रष्ट हुआ क्यूं।

पंडितजी महाराज ! आप यह तो अच्छी तरह समझते ही हैं इस लड़ाई में बने थोड़े बिगड़े बहुत, विशेष करके इस रियासत में जह कन्ट्रोल की आड़ में हिन्दुओं का सब प्रकार का बिजनैस बर्बाद कर दिया गया। कुछ वर्ष हुए आर्थिक संकट में परेशान हो, उस आदमी ने एक लाला के पास ८०० में मकान गहने रख दिया, वह ८०० बढ़ता २ बारह सौ होगया। दिन बदले नहीं। वह आदमी रुपया नहीं दे सका। बनिये को मकान हथियाने का मौका मिला। उस दुष्ट ने उस भले मानस को बहुत परेशान किया, क्योंकि वह नीच अपने रुपया के बदले में उसका मकान लेना चाहता था, लेकिन उसे मकान देकर परिवार सहित वह

रहता कहां। उसने बहुत हाथ पैर जोड़े परन्तु वह शाइलौक तो माना नहीं।

अब यहां की एक और मजेदार बात सुनिये—एक हैं मीर साहिब, हायकोर्ट के रिटायर्ड जज। बड़े दीनदार, बड़े मिलनसार और बड़े चालाक। उन्होंने एक फंड खोल रखा है, जिसमें प्रत्येक मुस्लिम अफसर अपनी आमदनी का दस प्रतिशत दान देता है, और लोग भी इस फंड में काफी रुपया देते हैं। लगभग दस लाख इस फंड में जमा हैं। यह लोग हमेशा ऐसे दीन-दुखियों की टोह में रहते हैं। उस आदमी की कहानी सुनते ही अगले दिन मीर साहिब ने १२०० रुपये उस बनिये को देकर उस घर घिरिस्थी का पिंड छुड़ाया। यह भी इस्लामी तबलीग का एक बहतरीन ढंग है, और इस रियासत में ऐसा ढंग बहुत जोरों पर है। मीर साहिब ने तो उसे मुसलमान नहीं बनाया परन्तु मीर साहिब के इस उपकारी कार्य से उनके प्रति वह हिन्दू आकर्षित जरूर हुआ और धीरे धीरे स्वयं ही उन के एजन्टों के चक्र में फ़ंस गया। वह बनिया जिसने १२०० लिया, बहुत अमीर आदमी है, दस बारह उसकी इमारतें हैं अगर वह अपने धर्म बन्धु को मुसीबत में देख उसके नन्हें २ बच्चों पर तरस खा अपना रुपया छोड़ देता या किन्हीं भले दिनों तक इन्तजार करता तो आज वह परिवार हमारे हाथ से काहे को जाता। ऐसे ही स्वार्थान्धों ने तो हमें यह दिन दिखाये जब कि रियासत में कुल १० प्रतिशत हिन्दू शेष रह गये और अगर इसी रफतार से धीरे २ यह १० प्रतिशत भी खत्म हो जायें तो आप ही बताइये इस हमारे सर्वनाश के लिए अपराधी कौन ?

(१३)

जिन्ना के पाकिस्तानी स्टंट के प्रचार से इतना लाभ तो जरूर हुआ है कि मुसलमान जो पहले प्रत्येक अवस्था में बाहिर झांका करते थे अब उन्होंने कुछ-कुछ भीतर ताकना भी सीखा है। हिन्दुओं के मख्य-मख्य तीर्थों के पास ही उन्होंने भी अपन तीर्थ रच लिये हैं। इन

अपने पवित्र स्थानों को वे 'शरीफ' करके पुकारा करते हैं जैसे कलियर शरीफ, अजमेर शरीफ, विहार शरीफ। पाठकोंको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यह शरीफों की डिग्री बड़ी तेजी से बहुत शहरों को प्रदान की जा रही है। बटाला शरीफ, कादियां शरीफ। अब तो यह तरीका बन गया है कि जहां फरजिन्दाने तौहीद की ५६ प्रतिशत संख्या हुई झट उस शहर को शरीफ की डिग्री अता कर दी गई।

ऐसे ही भाग्यशाली शहरों में बहावलपुर रियासत का उच्च नगर भी है। इसे भी उच्च शरीफ कहते हैं। मैं स्वयं तो उच्च नहीं गया, परन्तु बहावलपुर में कुछ उच्च के शरीफ लोग मिले थे। मैंने पूछा—कहो भाई ! उच्च में तो राम-राज है। बोले हां कभी रामराज था परन्तु आज कल तो पूरा इस्लाम राज है। 'वह कैसे' मैंने पूछा। बोले—हमारे यहां पूरे पचास घर स्वर्णकारों के हैं। आखिर स्वर्णकारी में क्या बुराई है, जो हिन्दू उनके घर का खाते नहीं। हिन्दू की तो माया ही अद्भुत है, धुले हुए कपड़ों से उसे प्रेम है धोबी से उसे बैर है। सिले हुए चमड़े के बूट में उसकी शान है, परन्तु उस बूट को बनानेवाले को वह नीच समझता है। बुने हुए कपड़े तो बढ़-बढ़कर पहनेगा परन्तु कपड़े बुननेवाले के साथ नहीं छुयेगा। विवाह शादी पर गहनेतो वह जरूर बनवायेगा, बिना गहनों के विवाह करने से उसकी नाक कट जाती है परन्तु गहने बनानेवाले को वह नीच समझता है। जिन लोगों का समाज को कुछ भी लाभ नहीं, उन्हें तो उसने सिर पर चढ़ा लिया और जिनके सहारे यह समाज खड़ा है उनकी उसने जड़ें काटीं।

और इस हिन्दू समाज का ढोंग तो देखिये, स्वर्णकारों के हां का सूखा अन्न तो ले लेंगे परन्तु पका हुआ नहीं लेंगे। मुसलमान के हाथ की डबल रोटी खालगे, परन्तु हिन्दू स्वर्णकार के हाथ की सिंगल रोटी नहीं खायेंगे। अपने प्रति धर्माचार्यों के इसी दुर्व्यवहार को देख शहर के सभा स्वर्णकारों ने धर्म के ठेकेदारों को अल्टीमेटम दे दिया। "अगर हम हिन्दू तो आप बताइये हमारे हाथ का खाना आप क्यों स्वीकार

नहीं करते । हमारे में कोई दोष हो तो हमें बताया जाय ताकि हम उन दोषों को दूर करने की कोशिश करें । हमें बताया जाय कि हम हिन्दू हें अथवा नहीं । यदि आप हमें हिन्दू ही समझते हैं तो आप हमारे हां का शुद्ध पवित्र भोजन ग्रहण कीजिये, यदि आप ग्रहण नहीं करेंगे तो इसका अर्थ यह हुआ कि हम हिन्दू नहीं । फिर हमें अधिकार होगा कि हम इस धर्म को, जो मनुष्य को मनुष्य से फटाता है जो एक निर्दोष सदाचारी ईमानदार को, दूसरे मूर्ख उजड्ड निरक्षर भट्टाचार्य के मुकाबले पर नीच समझता है त्याग दें ।"

चाहिये तो यह था कि उन लोगों के कहे की लाज रखी जाती और इस छूतछात को मिटा दिया जाता, परन्तु उन बेचारों की उस बात पर विचार तक न किया गया—और उसका परिणाम जो होना था हुआ । वे सब-के-सब स्वर्णकार मुसलमान बन गये । आज उन्हीं का शहर में दौरदौरा है । वे धनी हैं, जमीनों जागारों वाले हैं, जो लोग पहले उन्हें नीच समझते थे आज वे ही उनके आगे जाकर नाक रगड़ते हैं । जबतक यह लोग हिन्दू थे तब तक हमारे उच्च में सचमुच रामराज था, अब यदि वहां इस्लाम राज है तो इस इस्लामराज को वहां स्थापित करने का अपराधी कौन ?

(१४)

"पण्डित अब्दुलगनी शास्त्री, काव्यतीर्थ बी० ए० ।"

यह शब्द पढ़ते ही दिल पर एक चोट सी लगी । पण्डित और अब्दुलगनी दोनों चीजें साथ-साथ तो चल नहीं सकतीं । वास्तविकता जानने के लिये मैं उतावला हो उठा—आखिर एक दिन समय आ ही गया, शास्त्रीजी से साक्षात्कार हो ही गया—"नमस्कार शास्त्री जी महाराज"—"आदाबअर्ज पण्डितजी साहिब"—मैं श्रीमान् जी से एक ऐसी शंका का समाधान करने आया हूं, मुझे तोजिसके पश्चात् बड़ी ही शान्ति मिलेगी, शायद आपको दुःख हो ।"

"आप मुझसे यह पूछने आये हैं कि मैंने अपने नाम के साथ पण्डित क्यों लगा रखा है।"

"नहीं ! मैं आपसे यह पूछना चाहता हू कि आपने अपने नाम में पंडित के साथ अब्दुलगनी क्यों लगा रखा है।"

"इसलिए क्योंकि मैं जन्म से ब्राह्मण हूं।"

"मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आज तक भी आपके अन्दर ब्राह्मणत्व का स्वाभिमान है, परन्तु क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं आप अब्दुलगनी कब से बने।"

"यह गुजरे हुए जमाने को कहाना, अच्छा है आप इसको याद न ही करायें।"

मैंने जानने पर हठ किया"—शास्त्रीजी बोले, तो लीजिये सुनिये—मैं हूं रहनेवाला गुरुदासपुर का। पिता का देहान्त बचपनमें ही हो गया! मां ने बड़ी मुसीबतों से पढ़ाया-लिखाया! मैंने शास्त्री पास किया। एक दिन मैंने समाचार-पत्र में पढ़ा सनातनधर्म हाई स्कूल में पण्डित का जगह खाली है। मैं स्वयं मैनेजर के पास पहुंचा। लेकिन मुझे निराशा हुई, मैनेजर बोला—हमें उस शास्त्री की जरूरत है जो अंग्रेजी भी पढ़ा हो।

मेरे दिल पर चोटसी लगी, परन्तु मैंने हिम्मत नहीं हारी। साधारण सी ट्यूशन लेकर मैं बी० ए० परीक्षा की तैयारी करने लगा और कुछ ही वर्षों में मैं "पण्डित वेदमित्र बी० ए० शास्त्री, काव्यतीर्थ बन गया। मुझे पता लगा एक आर्य हाई स्कूल में संस्कृत-अध्यापक का स्थान खाली है। मैं मैनेजर से मिला, वह बहुत खुश होकर बोला—हम आपको ३५) मासिक देंगे। अपर मिडिल क्लासिस को आपने हिन्दी-संस्कृत पढ़ाना होगा।

मैंने कहा—बाबूजी ! सेवा तो जो मुझसे हो सकेगी करूंगा परन्तु इतना तो ध्यान कीजिये। थर्ड मास्टर साहिब केवल बी० ए० हैं वे ७५) पाते हैं और मुझे काम भी उनसे ज्यादा करना होगा और मेरे

पास उपाधियां भी उनसे अधिक हैं—इस मंहगाई के जमाने में क्या ३५) में मेरा गुजारा हो भी सकेगा।

'होगा या नहीं, यह सोचना हमारा काम नहीं। आपको ३५) मंजूर हों तो काम पर आ जाइये।"

"मैंने कहा—बाबूजी! हम घर में पांच प्राणी हैं। इतना तो आपको ख्याल चाहिये। अधिक न सही थर्ड मास्टर के बराबर तो मेरा दर्जा मानिये। मैंने आखिर कौन-सा अपराध किया। क्या मेरा यह अपराध है कि मैं संस्कृत पढ़ाऊंगा और वह अंग्रेजी। आप लोग तो संस्कृत के बहुत भक्त हैं, इस देवभाषा का उद्धार चाहते हैं, तो क्या यह बातें केवल लोगों के जजबात को भड़काने के लिये ही सभा-सोसायटियों के मंच पर से बार-बार कही जाती हैं······

मैनेजर साहिब बीच में ही बोल पड़े—"देखो भाई तुम जहां नौकरी की दरखास्त करने आये हो न कि उपदेश करने। हमारा जो ग्रेड है हम उसी पर चलेंगे। आपको ३५) ही मिलेंगे, नहीं गुजारा होता तो फ़ाल्तू टाईम में टयूशन कर सकते हो।"

आखिर ३५) पर ही झख मारनी पड़ी। दस से पांच तक स्कूल में पढ़ाता, फिर आप जानते हैं धर्म-स्कूल का पण्डित-संस्कार भी मुझे ही निबटाने पड़ते। और पण्डित को जो टयूशनमें मिलता है वह तो आप जानते ही हैं। अंग्रेजो टयूशन के पच्चास तो हिन्दी-संस्कृत टयूशन के पांच। आखिर ऐसे कब तक चलता। रोग ने घर में आ डेरा जमाया। हवन में अन्य घरों में सेरों घी आग में डाला जाता मेरे घर में रोटी चुपड़ने तक को घी न था। मां बीमार पड़ गई। इलाज के लिये पैसे तक पास न थे। बड़े-बड़े आदमियों के दर तक पहुंचा किसी ने ध्यान तक न दिया—मां चल दी, पत्नी सूखकर कांटा हो गई। बच्चे हड्डियों का पिंजर बन रह गये। उनका दुःख मुझसे देखा न गया—और आज मैं यहां हूं। इस जमायत के रीसर्च विभाग का सुपरिण्टेंडेण्ट हूं। उन लोगों को मेरी चिन्ता न थी, उन्हें तो अपने ग्रेड की रक्षा के लिये

मर मिटना था। आज यहां मुझे पांच सौ रुपये मासिक वेतन मिलता है। यह मकान, बिजली, पानी सब फ्री है। हिन्दू-समाज के प्रति चाहे मेरी जो भी भावनायें हों परन्तु हिन्दूधर्म के उच्चतम आदर्शों के प्रति आज भी मेरे हृदय में प्रेम और श्रद्धा है। अलवत्ता आपको मेरे वर्तमान वाह्य-स्वरूप को देखकर दुःख अवश्य होगा, परन्तु आप जाइये उन समाज के चौधरियों, संस्कृति के उद्धारकों, देव-वाणी के प्रचारकों के पास और पूछिये उन्हें, महाशय ! धर्म मित्र को अब्दुलगनी बनाने के अपराध का अपराधी कौन ?

(१५)

"क्यूं भई तांगे वाले एक बात पूछूं बुरा तो न मानोगे।"

तांगे वाला मुंह से तो कुछ न बोला, लेकिन जरा गरदन मेरी तरफ मोड़ कुछ ऐसी नजर से उसने मेरी ओर देखा कि बोलने से भी कुछ ज्यादा बोल दिया। मैंने पूछा--टांगे वाले ! तुम्हारा नाम क्या है। "अब्दुलगफूर"--लेकिन तुम देखने से तो अब्दुलगफूर लगते नहीं।

"फिर जो कुछ लगता हूं वही कह दीजिये।"

मैंने कहा--भाई ! तुम तो देखने में बिल्कुल हिन्दू लगते हो।

"इसमें शक ही क्या है, महाराज ! हिंदू तो हम हैं ही अभी तक भी हमारे सगे सम्बन्धी सब हिन्दू ही हैं।"

मानों उसके पूर्व-संस्कार एक दम चेत गये हों--वह फिर बोला मैं अपनी मरजी से मुसलमान नहीं बना मुसलमान बनकर जीने की मझे कोई खुशी नहीं।

"परन्तु तुम मुसलमान बने क्यू ?"

"तो क्या इसमें मेरा दोष है ? हम लोग चमार हैं, महाशय जी ! लेकिन चमार का काम तीन पुस्त से नहीं किया। महनत मजदूरी से अपना पेट पालते हैं।"

"लेकिन अगर तुम चमार का काम करते भी तो इसमें बुराई क्या है। अगर चमड़े की चीजें बनाना बुरा है तो चमड़े की बनी हुई चीजों

का इस्तैमाल करना भी बुरा है और अगर चमड़े के बूट पहनना, घरोंमें चमड़े के बक्स रखना, घड़ियों में चमड़े के तस्मे बांधना अच्छा है तो निश्चय ही चमार का स्थान सोसाइटी में उन चीजों का प्रयोग करने वालों की अपेक्षा कहीं अच्छा है।"

"लेकिन सब लोग तो आप सरीखे विचार के नहीं। यदि सबके विचार ऐसे ही होते तो आज हम लोगों को यह दिन काहे को देखने पड़ते।"

"लेकिन तुम पर मुसीबत क्या पड़ी।"

"महाराज! मेरा अच्छा खासा परिवार है। बड़ी महनत करके मैंने चार पैसे जमा किये। सोचा महनत मजदूरी कबतक चलेगी, मैंने एक टांगा-घोड़ा खरीद लिया। यहां हरिद्वार के पास ही मेरा गांव है। सोचा था बाल-बच्चों की अच्छी तरह गुजर हो जावेगी। लेकिन जिसे मैंने मुसीबतों का अन्त समझा था वह तो मुसीबतों का श्रागणेश निकला। मेरे नये टांगे को अड्डे पर देख सभी टांगे वाले तो आग आग हो गये मानों मैं ही उनके हिस्से की जायदाद का एक नया दावेदार आगया होऊं। देखिये महाशय! यह हरिद्वार है, हिंदुओं का तीर्थ है। लाखों यात्री यहां तीर्थ करने आते हैं और इन सब के बीच में मुसलमान तांगे वाले बड़ी शान के साथ रहते हैं। ढाका, नवाखली में कुछ भी हो, यह टांगे वाले इन्हीं हिन्दुओं को मूंड मूंड कर खूब कमाई बना रहे हैं। ज्यूंही मैंने तांगा चलाना शुरू किया, कैसा गजब का तांगेवालों में मैंने इत्तिहाद देखा। सर्वप्रथम अड्डे के चौधरी ने मेरे तांगे का विरोध किया—हम चमार का तांगा नहीं चलने देंगे। मैं रोता पीटता कांग्रेस वालों के पास गया। उनके कहने सुनने पर चौधरी ने तो मुझे नहीं रोका परन्तु अब एक अनोखी मुसीबत थी। मेरा टांगा साफ-सुथरा फर्स्ट क्लास था, घोड़ा भी बहुत बढ़िया—परन्तु ज्यूंही दो चार सवारियां टांगे में बैठीं कि पीछे से झट मुसलमान टांगे वाले ने आवाज कसी—अबे चमार के बच्चे अब हरिद्वार में दुनिया का धर्म भ्रष्ट करेगा—

सवारियां सहम सी जातीं । एक दूसरा मुसलमान आता और सवारियों को सुनाकर कहता--अजी ! यह जात का चमार है, चमार । सवारियां अपने आप ही उतर जातीं और मैं मुंह देखता रह जाता । हिन्दू टांगे वाले थोड़ी भी मेरी ममद करते तो मैं हिम्मत न हारता, परन्तु इस षडयन्त्र में तो वे मुसलमानों से घी खिचड़ी हो चुके थे । पहले तो मुसलमान तांगे वाले ही मेरा विरोध करते थे अब कुछ एक धर्मावतारों ने भी मेरे तांगे का विरोध शुरू कर दिया । जमाना कैसा जा रहा है, महाराज ! यह आप से छिपा नहीं । एक ओर मुस्लिम तांगे वाले मुझे परेशान करते थे दूसरी ओर मुझे यह प्रलोभन दे रहे थे कि यदि मैं मुसलमान बन जाऊं तो फिर मुझे कोई रोक टोक नहीं । लेकिन उनके झांसे में आकर मैं अपना धर्म छोड़ने को तैयार न था ।

इन हिन्दुओं के दिल में इतनी भी दया नहीं आई कि मेरे बाल-बच्चों का मेरा और मेरे घोड़े का क्या बनेगा । इन्होंने इतना भी न सोचा कि ऐसे मैं कब तक गुजारा कर सकूँगा । भूखों मरने तक की नौबत आगई । एक दिन मेरे तांगे में चार सवारियां बैठीं, चलने ही लगा था कि--झट किसी ने कह दिया अजी ! यह तो चमार का तांगा है । उस समय मेरे सिर पर चोटी थी, धोती और कुर्ता था, मैंने कहा--"चमार क्या आदमी नहीं होते" लेकिन चारों सवारियां तो वहीं दिल तोड़ बैठीं । दो तत्काल उतर गईं, दो भी अनमनी-सी हो रही थीं । तुर्की टोपी लगाए दूसरा तांगेवाला झट तांगा बढ़ा लाया । चारों सवारियों ने उस मियां के तांगे में बैठकर मानों अपना डूबता हुआ धर्म बचा लिया । इस घटना का मेरे दिल पर बहुत बुरा असर हुआ । मेरा दिल टूट गया । आखिर मेरा कुछ अपराध भी तो हो । मुझे रात भर नींद नहीं आई । और अगले ही दिन·· जब मैं प्रभुदयाल की अजाय अब्दुलगफूर बनकर आया मानो मेरा सभी कष्ट जाता रहा ।

अड्डे का चौधरी भी अब मेरी इज्जत करता है । हिन्दू टांगे वाले मुझ से खौफ खाते हैं, मूस्लिम तांगे वाले मुझे अपना समझते

हैं। धर्मावतारों का धर्म अब मेरे तांगे में बैठने से खराब नहीं होता। आप लोगों की दुआ से १०, १२ रोज कमा लेता हूं। घर की हालत रुपया पैसे के लिहाज़ से तो अच्छी है, लेकिन चित को शान्ति नहीं-अपनी तो नहीं, मगर बच्चों की मुझे चिन्ता है। मैं नाममात्र को मुसलमान हूं, दिल अभी तक हिन्दू धर्म के रंग में रंगा हुआ है। मैं अब भी हिन्दू धर्म को अच्छा समझताहूं। गंगाजी को सिर झुकाता हूं, पंडित जी को प्रणाम करता हूं। हिन्दुओं की बहु बेटियों की इज्जत करता हूं, परन्तु मेरी सन्तान पढ़ लिखकर समझदार हो जाने पर जब अपनी असलियत को पहचानेगी, जब वह मेरी मुसीबतों की करुण कहानी सुन कर मेरे धर्म भ्रष्ट होने के रहस्य को जानेगी फिर अगर वह अपने पिता के अपमान का बदला लेने के लिए जिन्ना, सुहरावर्दी, के रूप में प्रकट हो तो फिर आप ही बताइये, पंडित जी महाराज मेरी सन्तान के इस भयंकर पाप के लिए अपराधी कौन ?

(१६)

उसके सिर पर चोटी भी थी, गले में यज्ञोपवीत भी था, तुर्की टोपी और शलवार को भी उसने जीवन भर हाथ न लगाया होगा। परन्तु था वह मुसलमान। इसका नाम था रफीक अहमद। मैंने जरा डरते डरते पूछा, भाई रफीक अहमद ! अमृतधारा की बोतल पर नाईट्रिकएसिड का यह लेवल कैसा। रफीक अहमद ने मेरी ओर देखा। मैं जरा सहम सा गया। कोई जमाना था कि मुसलमान यह सुनकर प्रसन्न होते थे कि वे कभी हिन्दू थे, परन्तु आजकल किसी मुसलमान को यह पूछना कि वह मुसलमान कैसे बना। जान को हथेली पर रख कर ही ऐसा प्रश्न पूछा जा सकता है। फिर भी मैंने हिम्मत की, सच पूछो तो उस के सिर पर फहरा रहा राष्ट्रीय झंडा देख कर ही मैंने इतनी हिम्मत की।

"लेकिन आप पहले यह बताएं आप हैं कौन ?"

"आदमी हूं। हाड़-मांस का बना इन्सान हूं। और क्या हूं जो

कुछ हूं आपके सामने हूं । वैसे एक लेखक हूं, देश का एक सिपाही हूं । मुझे आपके इस रूप को देखकर बहुत खुशी हुई लेकिन आपके नाम का सुनकर मुझे दुःख हुआ ।"

"यह आपकी कमजोरी है । आज तो जमाना हिन्दू-मुस्लिम इत्तिहाद का है । एक ही शरीर में गंगा-यमुना का संगम देखकर आपका दुःखी होना उचित नहीं ।"

"गंगा-यमुना का संगम होता तो मुझे प्रसन्नता ही होती लेकिन यहां तो पूर्व-वाहिनी गंगा और पश्चिम-वाहिनी दजला बनावटी तौर पर मिले हुए दिखा दिये गये हैं। अप्राकृतिक तथा बनावटी चीज़ को देखकर असलियत की चिन्ता में आंसू बहाना उचित ही है ।"

"तो क्या किसी हिन्दू के मुसलमान बन जाने पर आपको दुःख होता है ।"

"यदि कोई हिन्दू इस्लाम की दार्शनिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक महत्ताको सोच-समझकर उसकी शरणमें जाता है तो मुझे न दुःख होता है न सुख, परन्तु समाज का सताया हुआ, पथ भ्रांत, नौकरी, जमीन, औरत, धन के लोभ में यदि कोई हिन्दू मुसलमान बनता है अथवा तलवार के जोर से डरा धमका कर मुसलमान बनने पर मजबूर किया जाता है तो मुझे इतना दुःख होता है जो कहने की चीज़ नहीं, अनुभव की ही चीज़ है ।'

"तो आप कांग्रेसी होते हुए भी हिन्दू-मुस्लिम एकता में विश्वास नहीं रखते ।"

"जिस एकता से आपका तात्पर्य है वह एकता किसी भी सूरत में हो नहीं सकती । हिन्दू-मुस्लिम एकता का शोर केवल अंग्रेज को डरानें धमकाने के लिये ही है ! हिन्दू-मुसलमानों के सिद्धान्त शतप्रतिशत परस्पर विरोधी हैं । इन दोनों में एकता हो ही नहीं सकती । इस्लाम के पास कोई ऐसी चीज नहीं जो हिन्दू-धर्म के पास न हो । बाहर के मुसलमानों की तो मैं कह नहीं सकता परन्तु हिन्दुस्थान में तो इस्लाम

का सारांश हिन्दुओं की प्रत्येक सामाजिक, नैतिक, ऐतिहासिक, तथा सांस्कृतिक बात का विरोध करना है। परन्तु यह बहस जो आपने छेड़ दी है यह कोई अच्छी बहस नहीं। मैं तो आपसे केवल यही जानना चाहता हूं—गंगा की वादियों में यह दजला अफरात की नदियां कैसे बहा रखी हैं।"

"इसको जान लेने से क्या लाभ।" मैं इस कौम को यह बता सकूंगा—उसने अपने ही हाथों अपनी दौलत को कैसे बरबाद किया।"

मैं ठाकुर हूं, पण्डितजी महाराज! मेरी एक लड़की है—मैंने घोषणा की जो भी हिन्दू नवयुवक मेरी कन्या से विवाह करना चाहेगा मैं उसे हाथी दहेज में दूंगा। आज तक एक भी ऐसा नवयुवक मुझे नहीं मिला।

"लेकिन आप ठाकुर से मुसलमान बने कैसे।"

ठाकुर साहिब का छिपा हुआ स्वाभिमान जाग उठा—बोले! कौन कहता है मैं मुसलमान हूं। मैं आज भी ठाकुर हूं और जीवन भर ठाकुर रहूंगा।"

"भगवान आपकी ऐसी सुबुद्धि को जीवन-पर्यन्त बनाये रखे—परन्तु मैं आपकी बनवास गाथा सुनने को उत्सुक हूं।"

मैंने कोई अपराध नहीं किया, मैंने किसी ब्राह्मण का अपमान नहीं किया, मैंने किसी गौ को लात नहीं लगाई, मैंने वेद और पुराण की निन्दा नहीं की, मैंने किसी का घर नहीं जलाया, मैंने किसी की आजीविका नहीं छीनी, मैंने जो कुछ किया, मैं आज तक भी मानता हूं मैंने अच्छा किया।

"लेकिन आपने किया क्या।"

"हमारे मुहल्ले में एक अच्छे भले घर की बेटी, विवाह के दस ही दिन पीछे विधवा बन गई। उस बेचारी ने पति-दर्शन तक न किया था। मुझे बताया गया कि अब आयु-पर्यन्त उस देवी का विवाह नहीं हो सकता। मैंने कहा—आखिर इस देवी ने क्या अपराध किया।

उत्तर मिला--इसके पूर्व कर्मों का फल। मैंने कहा--जब इसके पुन-र्विवाह द्वारा इसके जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है तो जो बात हमारी सामर्थ्य में है उसे न करते हुए पूर्व-कर्मों का बहाना बनाकर खाहमखाह एक प्राणी के जीवन को नष्ट करना यह कहां की बुद्धिमत्ता है। परन्तु मेरी किसी ने न सुनी।

वह अपने मां बाप की एक लड़की थी। पिता का कुछ वर्ष पहले ही देहांत हो गया था। पुत्री के विधवा होजाने पर माता के दिल पर भी वह धक्का लगा कि फिर वह संभल न सकी। और एक ही व॰ पश्चात वह भी चल दी।

अब वह देवी इतने बड़े घर में बिल्कुल अकेली थी। मैंने कहा—गृहस्थ के सुख की दृष्टि से न सही वैसे भी इतने बड़े घर में इस देवी का अकेला रहना असम्भव है, एक दो दिन की बात हो सो नहीं यहां तो जिन्दगी भर का सवाल है। लेकिन सब प्रश्नों का मुझे एक ही उत्तर मिला—शास्त्र में विधवा विवाह की आज्ञा नहीं। मैं मन मसोस कर रह गया। मैंने देखा गुंडे लोग उस देवी को पथ-भ्रष्ट करने के लिये उस घर के चारों ओर एक भयंकर जाल बिछा रहे थे, मैंने कहा--एक ही डंडे से आप सबको हांकना चाहते हैं, अवस्था और परिस्थिति का भी तो कुछ ध्यान करना चाहिए। अपने-अपने समय के अनुसार ही शास्त्र बनाए जाते हैं। और सच बात तो यह है पंडितजी महाराज, जो शास्त्र-शास्त्र की दुहाई मचाते हैं उन्होंने शायद किसी शास्त्र को खोलकर भी न देखा हो। जिस बात को कहने से उनका अपना स्वार्थ पूरा हो और प्राणी को कष्ट हो वही इन लोग के लिये शास्त्र है। मैंने कहा--गुंडों के जाल में फंस जाने पर क्या धर्म की नाक नहीं कटेगी? परन्तु मेरी बात पर किसी ने ध्यान न दिया! एक बड़े धर्मात्मा बोले—गुंडों के साथ भले ही भाग जाये, परन्तु विधवा विवाह का शास्त्र में कोई विधान नहीं। पंडित की बात मुझे तीर के समान लगी। उन्हीं दिनों हमारे नगर में समाज का उत्सव हुआ। बड़े जोरदार लैक्चर हुए

एक वक्ता महोदय ने विधवाओं का बड़ा भयानक चित्र खैंचा। मैं उस समय २५ वर्ष का नवयुवक था, अविवाहित था। मैंने वहीं बैठे-बैठे संकल्प किया मैं उस देवी को अपनी धर्मपत्नी के रूपमें स्वीकार करूंगा।

और बिरादरी के घोरतम विरोध होने पर भी मैंने अपना संकल्प पूरा किया। मैंने उस देवी को धर्म पत्नी के रूप में स्वीकार किया। मैं एक बहुत बड़े खानदान का आदमी हूं। अच्छा खासा जमींदार हूं। मैं यदि चाहता, अन्य स्थानों पर वीसियों विवाह कर सकता था, परन्तु एक आर्य देवी का उद्धार करना मेरा कर्त्तव्य था : मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया।

मेरा विवाह क्या हुआ, मानो चारों तरफ बदतमीजी का एक तूफान सा उठ खड़ा हुआ। "धर्म डुब गया, धर्म डूब गया" की दुहाई मचने लगी। धर्म तभी बच सकता था अगर वह देवी किसी गुंडे के साथ भाग जाती या अपने ही घर में किसी गुंडे के साथ बैठ जाती। बिरादरी ने हमें खारिज कर दिया। हमने कोई परवाह न की। कुओं पर हमारा चढ़ना बन्द कर दिया गया। मैंने कहा--जब इन कुओं से मुसलमान पानी भर सकते हैं तो हम क्या मुसलमानों से भी गये गुजरे हैं--लेकिन हमें पानी नहीं भरने दिया। हमने घर में नलका लगवा लिया। मैं और मेरी धर्म पत्नी ही जानते हैं वे तूफ़ानी दिन हमने कैसे गुजारे। इस कशमकश के दिनों में कुछ एक कांग्रेसी तथा आर्य समाजी भाइयों नें हमारा जरूर साथ दिया लेकिन जिस समय उन्हें हमारा साथ देना चाहिये था उस समय यह लोग भी आंखें दिखा गये। मेरी एक लड़की है। जब वह सोलह सत्रह वर्ष की हुई हमें उसके लिये वर की खोज करना था। लड़की में कोई दोष नहीं, लेकिन यह हिन्दू समाज मेरे और मेरी धर्म पत्नी के अपराध का दंड मेरी पुत्री को देना चाहता था। मैंने सोचा कहीं किसी आर्य समाजी घरों में ही कोई वर मिल जाय, परन्तु न जाने क्यो मुझे सब ओर से निराशा हुई। आप ही बताइए मैं लड़की को कब तक घर में बिठाये रखता। लड़की सब प्रकार

से गुणवता है उसका दोष केवल इतना है कि वह उस प्रेम का फल है जिसे समाज की आंखें देख न सकीं। इधर हिन्दुओं में यह हाल था कि नाच-से-नोच हिन्दू भी एक बाल-विधवा की पुत्री से विवाह करने को तैयार न था और उधर यह हालत थी कि एक ब त बड़े खानदान के मुसलमान जिनका खानदान एक ही पीढ़ी पहले बहुत अच्छे प्रकार का ठाकुर वंशी था उनका लड़का एम. बी. बी. एस. क्लास में पढ़ता था। वह खुद मेरे पास आए, बोले—मैं अपने लड़के को आपकी झोली में डालता हूं। हमारे घर में कभी मांस नहीं बनता, हमारे बच्चे सभी हिन्दी पढ़ते हैं। मुसलमान होते हुए भी हमने अपने पुरुखाओं की परिपाटी को नहीं छोड़ा। आपकी पुत्री मेरे घर में बिल्कुल अनुकूल वातावरण पायगी। मैंने एक बार फिर हिन्दू समाज में वर प्राप्ति के लिए सिर तोड़ कोशिश की परन्तु निष्फल। एक ओर थी घृणा, कठोरता, अविश्वास और दूसरी ओर था विश्वास, नमृता और प्रेम।—मैंने विश्वास और प्रेम का पल्ला पकड़ा। आज मेरी पुत्री अपने घर में सुखा है परन्तु जिस बात का आपको दुःख है उसका मुझे भी दुःख है परन्तु ऐसी दुःखपूर्ण परिस्थिति में हमें लाने के लिये अपराधी कौन ?

(१७)

"सच मानिये पंडितजी महाराज ! मेरी लड़की तो साक्षात देवी है।"

मैंन बात काटते हुए कहा, किन्तु भाई साहिब ! देवियां दूध-मलाई की बनी नहीं होतीं। देवियों के शरीर में भी खून का प्रवाह बहता है, विधवा होने के पश्चात भी देवियों का रक्त रक्त ही रहता है, पानी नहीं बन जाता; उनका हृदय-हृदय ही रहता है, पत्थर का ढेला नहीं बन जाता; उनकी अन्तड़ियां-अन्तड़ियां ही रहतीं हैं, लोहे की जंजीरें नहीं बन जातीं। किसी देवी के वैधव्य पर तरस खाकर कामदेव उसका पीछा नहीं छोड़ देता। देवी की पदवी प्राप्त कर लेने पर स्त्री-स्त्री ही रहती है वह पत्थर की मूर्ति नहीं बन जाती। आदर्शवाद के काल्प-

निक जगत से नीचे उतर वास्तविकता के संसार में बैठ कर सोचना सीखिये। जानते हो जमाना कैसा जा रहा है? पूर्वी बंगाल में विधवाओं पर जो जो अत्याचार हुए, और इन अत्याचारों के कारण समस्त हिन्दू जाति को जिस जिल्लत का सामना करना पड़ा, क्या हमारा फर्ज नहीं कि उन अपनी गल्तियों के लिये पश्चाताप करें और उनसे कुछ शिक्षा प्राप्त करें। पूर्व पत्नी के देहान्त पर यदि पति को विवाह करने की खुली छुट्टी है तो पूर्व-पति के देहान्त पर पत्नी को भी पुनर्विवाह का पूरा-पूरा अधिकार है।

"परन्तु धर्मशास्त्र में तो विधवा विवाह की आज्ञा कहीं भी नहीं"

"सन्तान होते हुए भी, यहां तक कि पोते और पोतियां होते हुए भी अनेकों विवाह रचाने की आज्ञा क्या आप मुझे किसी धर्मशास्त्र में दिखा सकते हैं" मैंने कहा--"भाई साहिब! जिन शास्त्रों की तुम दुहाई मचाते हो वे उस समय लिखे गये थे जब आयुएं लम्बी थीं। दूध, दही, घी की नदियां बहती थीं। लोगों का जीवन बिल्कुल प्राकृतिक था। खाना पीना खूब मिलता था। जीवन की आवश्यकताएं कम थीं। मशीनरी का जमाना न था। लोग हाथ से काम किया करते थे, तीर्थ यात्रा भी पैदल करते थे। स्वास्थ्य सबका उत्तम था। अकाल मृत्यु नाम को भी न थी। आपस में प्रेम था, श्रद्धा थी, तथा विश्वास था।सर्वत्र सुख शांति थी, आज जैसे दंगे फिसाद न थे, मुसलमान यद्यपि यहां थे, परन्तु जिन्ना टाईप की मनोवृत्ति उनमें बिलकुल न थी उन मुसलमानों में से जो थोड़े बहुत पितृ-पक्ष से गजनवी थे भी उनके दिल में भी हिन्दूत्व के प्रति श्रद्धा थी। जो कारणवश हिन्दुओं से मुसलमान बने थे वे नाममात्र को मुसलमान थे, स्वयं वे अपने को धर्म से पतित हुआ मानते थे। इसके लिए उन्हें स्वयं ग्लानि थी। अपने अपराधों के लिए वे प्रायश्चित करने को तैयार थे। यही कारण था कि मुसलमान होते हुए भी वे हिन्दुओं के लिये अपने प्राणों तक का उत्सर्ग करने को तैयार थे। परन्तु अब जमाना बदल चुका है। प्रत्येक

मुसलमान आज हिन्दू को अपना शत्रु और हिन्दू के शत्रु को अपना मित्र समझता है। जिन्ना ने उनके दिलमें यह ख्याल जमा दिया है कि उनका गरीबी, कंगाली, तथा अन्य कमजोरियों का एकमात्र कारण हिन्दू ही है। आज प्रत्येक नगर प्रत्येक ग्राम ज्वालामुखी बना हुआ है। हिन्दुओं और मुसलमानों के आपस में मन फट चुके हैं। संसार की कोई भी शक्ति इन्हें अब जोड़ नहीं सकती, ऐसे सन्दिग्ध वातावरण में मर्दों का ही जीवन संशयपूर्ण बन चुका है, फिर अबलाओं का तो कहना ही क्या। आपने कभी सोचा ऐसे आपत्काल में असहाय विधवा देवियों की क्या दुर्गति होगी।"

मेरी बातों को उन्होंने बहुत ध्यानपूर्वक सुनी, परन्तु बात रही वहीं की वहीं। बोले--"आपका कहना यथार्थ है, परन्तु हमारी बिरादरी में विधवा विवाह आजतक नहीं हुआ। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं कि मैं पहल कर सकूँ।

इस घटना के कुछ ही महीने पश्चात् वही सज्जन मुझे मिले। मैंने उन्हें बेहद हतोत्साह, खिन्न, दुःखी तथा संतप्त पाया। मुझे देखते ही उनकी आंखें अश्रुओं से परिपूर्ण हो गईं। मेरा माथा ठंका। बिजली के समान एक ख्याल दिमाग में दौड़ गया। उस ग्राम में जहां इनकी पुत्री ब्याही थीं और जहां वह अपने पूर्व पति की पुनीत स्मृति में माला फेरती हुई अपने वैधव्य के अरक्षित जीवन को व्यतात कर रही था, उसी ग्राम में अभी हाल ही में भारी उपद्रव मचा। अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हजारों गुण्डों ने ग्राम पर धावा बोल दिया। प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही रक्षा में तत्पर था। सभी को अपनी ही जान की फिकर पड़ी थी। सभी लोग घरों के दरवाजे बन्द कर जान छिपाए भीतर बैठ थर-थर कांप रहे थे। इस उपद्रव में उस देवी पर भयंकर विपत्ति आई होगी। मैंने दिल मजबूत करके पूछा—कमला आजकल यहीं है अथवा सुसराल।

अश्रुओं की धारा फूट कर बह निकली। उनका कंठ रुक गया।

वह कुछ बोल न सके । मैंने कहा उस ग्राम में बड़ा भारी उत्पात मचा था, कमला सुरक्षित तो है ।

"उसे असहाय, अबला, अनाथ समझ गुण्डों ने घर पर धावा बोल दिया । औरत की जात, इन गुण्डों से अपना रक्षा कैसे कर सकती । घर बरबाद हो गया । कमला का कोई पता नहीं । अभी-अभी आर्य-समाज के मन्त्री से मिलकर आया हूं । हिन्दू सभा के प्रधान से भी मिलूंगा ।

लेकिन आर्य समाज के मन्त्री ने ही तो आप को कहा था, पुत्री का शीघ्र ही पुनर्विवाह कर दो । उस समय क्या आपने आर्यसमाज की परवाह की । यदि कमला का संरक्षक उसके पास होता बेचारी को कुछ तो आसरा मिलता । कन्ट्रोल और करफ्यू के जमाने में कभी तुमने सोचा औरत की जात घर के भीतर छिपकर कब तक निर्वाह कर सकेगी । विवाह से तो धर्म डूब जाता, अरक्षित अवस्था में उसके अप-हरण पर धर्म का बेड़ा बराबर तैरता रहा । उस समय कुछ अधिक कहना मैंने उचित न समझा । लालाजी बहुत दुःखी थे । मैंने देखा मेरे शब्दों से उन्हें और भी दुःख हो रहा है । मैंने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा--लालाजी ! जितना दुःख आपका है उतना ही मुझे भी है, लेकिन आपकी और आप और मेरे द्वारा इस समस्त जाति की इस दुर्गति के लिए अपराधी कौन ?

(१८)

उस दिन हजरते कायदे आजम ने बी. बी. सी. लन्दन से अमरीका के नाम ब्रौडकास्ट किया । शायद मेरा ऐसा लिखना ठीक न हो । यूं कहना चाहिये, उस दिन चर्चल एण्ड कम्पनी अन-लिमिटेड ने पाकिस्तानी सभ्यता का एक बहतरीन नमूना संसार के सन्मुख पेश करने के लिये अपने कायदे आजम को ब्रिटिश ब्रौडकास्टिग कार्पोरेशन के लन्दन स्टेशन पर खड़ा किया । संसार का आंखों में कांग्रेस और हिन्दुओं को जलील करने की कोशिश करते हुए इस शख्स ने कहा--कांग्रेसी हकूमत चोरों,

डाकुओं, लुटेरों और कातलों की हकूमत है। बिहार में लाखों घरवाले बेघर होगये और तीस हजार जान से मार डाले गये--उस दिन मैं विश्वज्ञान मन्दिरमें था। श्री स्वामीजी महाराज समाचार पढ़ते ही बोले पराशरजी ! जिन्ना ने जो कुछ कहा क्या यह सर्वथासत्य है। मैंने कहा इन बातों का सत्य के साथ दूर का भी वास्ता नहीं।

लाखों शरणार्थी जो बिहार को छोड़ बंगाल में बसने जा रहे हैं, क्या यह भी झूठ है ?

"बसने वे जा रहे हैं, जिनका बिहार में अपना कुछ भी नहीं। न तो जिनका घर है न दर; न जमीन न जायदाद, न नौकरी न रोजगार। उन्हें कुछ दिन बिहार-बंगाल की सीमा के पासही बसा देना यह मुस्लिम लीग की एक प्रौपेगंडा की चाल है। कुछ दिन यह लोग आसनसोल में पड़े रहेंगे और लीगी अखबार खूब हाशिये बना-बनाकर खबरें छापेंगे बुखारी ब्रादर्ज की जद्दी जायदाद बना हुआ आल-इण्डिया रेडियो भी बढ़ा-चढ़ाकर खबरें सुनायगा। और कांग्रेसियों की बात तो आप जानते ही हैं, जिन पांडवों ने संसारकी दिग्विजय की, जिस धनुर्धारी अर्जुन ने गाण्डीव की टंकोर से धरती को छेद दिया अपनी सती साध्वी द्रौपदी को भरे दरबार में अपमानित होते देखकर भी वे कुछ न कर पाये। लीग प्रौपेगंडा से भयभीत हो बिहार की कांग्रेसी सरकार उन्ही निखट्टुओं को लौटने के लिये प्रार्थना करेगी; हाथ पैर जोड़ेगी और यही आवारागर्द लोग पहले जिन्हें भीक मांगने पर भी कोई एक धेला तक न देता था बिहार की कांग्रेसी सरकार इनके लिये नये-नये काम तलाश करेगी और जब तक काम न दिलायगी तबतक बैठों ठालों को दूध चाय सप्लाई करेगी।

"लेकिन तीस हजार जो मरने की बात लिखी है।"

"वह भी सरासर झूठ।"

"अगर झूठहै तो बिहार सरकार इसका प्रतिवाद क्योंनहीं करती।"

"करती तो है, परन्तु डर-डर कर छिप-छिप कर वह कहती है—

बिहार के दंगों में हताहतों की संख्या अधिक नहीं। अकेले नागरनासा में जिसके सम्बन्ध में पहले ५०० मरने की खबर थी पीछे यह संख्या कुल २५ ही निकली जिनमें १५ मुसलमान और दस हिन्दू थे।"

"तो फिर लीग एक ही तरफा प्रचार क्यों करती है।"

"कलकत्ता के दंगे में संतप्त बिहारी अपना सर्वस्व खोकर बिहार लौटे। तत्पश्चात पूर्वी बंगाल का उपद्रव हुआ। वहां से हिन्दू देवियों को भगा-भगा कर उत्तरी बिहार में लाया जाने लगा। उधर उत्तरी बिहार में भी लीगी उपद्रव की तैयारियों में थे। संघर्ष शुरू हो गया। जवाहरलाल उस दिन कलकत्ता में थे। दंगे की खबर सुनते ही, बिना मौका देखे, बिना सच्ची-सच्ची घटनाओं को जाने, केवल इसलिये कि बिहार हिन्दू प्रान्त है जवाहर ने स्वयं सर्वप्रथम हिन्दुओं को ही लताड़ना शुरू किया। जवाहर ने समझा यह मौका उसे परमात्मा ने दिया है। बिहार के उपद्रवों का सारा दोष हिन्दुओं के मत्थे मढ़कर वह कबायली इलाके के वजीरियों को अपने मुस्लिम पक्ष-पाती, न्यायकारी, समदर्शी होने का बहुत अच्छा सबूत दे सकेंगे।........बस फिर क्या था एक के बाद दूसरा और दुसरे के बाद तीसरा--जयप्रकाश से लेकर जवाहरलाल तक, शाहनवाज से लेकर मौलाना हिफजर्रहमान तक जितने भी कांग्रेसी थे वे हिन्दुओं के ही पीछे हाथ धोकर पड़ गये। सर्वप्रथम इन्हीं लोगों ने बिहार की मृत्यु संख्या को बढ़ा-चढ़ा कर कहना शुरू किया, सर्वप्रथम इन्हीं लोगों ने बिहार की घटनाओं को हद से ज्यादा महत्व दिया। शुरू-शुरू में एक भी कांग्रेसी नेता ने इतना भी नहीं कहा कि दंगों में कुछ हिन्दू मरे और कुछ मुसलमान। सबने यही कहा—केवल मुसलमान ही मारे गये। तो आज हमारी ही अपनी भूलों से फायदा उठा कर यदि जिन्ना संसार की नजरोंमें हमें गिराने की, कातल और जालिम साबित करने की कोशिश कर रहा है तो आखिर उसे इस प्रकार के विषैले प्रचार के लिये सामग्री (Raw-material) सप्लाई करने के लिये अपराधी कौन ?

(२०)

"जो ताकत गांधी और जवाहर बीसियों वर्ष जेल की तकलीफें सहने के बाद, हजारों नौजवानों को फांसी के तख्ते पर लटका देने के बाद, लाखों नर-नारियों को जेल में बन्द कराने के बाद भी हासिल न कर सके, वह ताकत मैंने आराम से बैठे हासिल कर ली। मैंने एक भी मुसलमान को जेल नहीं भेजा, एक भी मुसलमान को फांसी पर नहीं लटकाया, मुसलमान की जेब से एक धेला भी अंग्रेज के खजाने में जुर्माने की शक्ल में दाखिल नहीं किया फिर भी मैंने मुसलमान के हाथ में कांग्रेस से भी ज्यादा ताकत, ज्यादा सरकारी नौकरियां, ज्यादा पौलीटिकल हकूक दिलवा दिए हैं" यह थी गर्वोक्ति जो कि लीग के कायदे आजम ने दिल्ली की सुनहरी मस्जिद में मुसलमानों को मुखातिब करते हुए की।

वैसे तो मूसलमानों के मजमे में किसी हिन्दू का लैक्चर सुनने जाना कोई आसान बात नहीं। हिन्दुओं के जलसों में मुसलमान खूब बन ठन कर तुर्की टोपी लगा कर जाते हैं और व्याख्यान में एक मुसलमान को देख वक्ता महोदय की आशाओं पर मानो घड़ों पानी फिर जाता है। तत्काल वक्ता महोदय, अपने वास्तविक स्वरूप को छोड़ "समोऽहम सर्व भूतेषू न मे द्वेषोऽस्ति न प्रिय" का लघुतम स्वरूप धारण कर लेते हैं और दूसरी ओर इस्लामी जलसे में कोई धोती वाला चला भी गया अव्वल तो उसकी जान की ही खैर नहीं और अगर कहीं लैक्चरार महोदय की नजर चढ़ गया तो बस फिर तो जो कुछ सुनना पड़ेगा सो थोड़ा परन्तु हमें भी सुनने का ऐसा चस्का पड़ा है कि बस दो साथी साथ ले सर पर कफन बांध मस्जिद में घुस ही तो गये।

वहां तो खैर! खैरियत से कट गई, परन्तु लाठियां खाकर भी शायद मुझे इतनी चोट महसूस न होती, जितनी जबरदस्त चोट यह शब्द सुनकर मुझे महसूस हुई। मस्जिद से निकलते ही मेरा मित्र बोला—देखिये पाराशरजी! इस शख्स का हौसला कितना बुलन्द हो चुका है।

मैंने कहा—"बुढ़ापे में इज्जत मिली है और मिली भी हमारी अपनी ही गल्तियों की बदौलत। आज इसका हौसला बुलन्द क्यों न हो।

"लेकिन इस शख्स को यह इज्जत अंग्रेज की बदौलत ही तो नसीब हुई है"

"अंग्रेज पर इलजाम लगाना, अपनी कमजोरियोंको अंग्रेज के गले मढ़ना यह तो भारतीय देशभक्ति का एक फैशन सा बन चुका है। मैं अंग्रेज को बिलकुल निर्दोष नहीं कहता, परन्तु अंग्रेज से भी बढ़कर इस शख्स को महत्व हमीने दिया। सन ३१ में इसकी लीग में चार मैम्बर भी न थे। सन ३५ के इलैक्शनों में इस शख्स को एक भी प्रांत में सफलता नहीं मिली। पंजाब और सिन्ध और बंगाल जिनकी शह पर यह शख्स आज दनदनाता फिरता है इन तीनों में सर सिकन्दर, अल्लाबख्श और फजलुलहक की हकूमत थी। जिन्ना को यह लोग समझते ही क्या थे। उस अवस्था में भी गांधी महाराज इस शख्स की मिन्नत खुशामद करने मालाबार हिल पर पहुंचे। आज तो भले ही यह शख्स मुसलमानों का प्रतिनिधि होने का दावा करे और उसे महत्व देने वाले भी उस के इस दावे को स्वीकार कर लें परन्तु ३८, ३९ में तो इसके पास ऐसा दावा करने का कोई बहाना न था, उस समय जिन्ना को क्या समझ कर उसके हाथ में कोरा चैक दिया गया। अंग्रेज इस शख्स को ऊंचा उठा सकता था लेकिन गांधी को इसके घर पर जाने के लिए मजबूर नहीं कर सकता था। गांधी और कांग्रेस साफ घोषणा कर देते—भारतीय राजनीति में जिन्ना की सिवाय व्यक्तिगत पोजीशन के और कोई हैसियत नहीं। उस की लीग का किसी भी प्रांतीय असेम्बली में कोई महत्व नहीं फिर कांग्रेस उसके साथ क्यों बातचीत करे। कॉंग्रेस को साफ शब्दों में घोषणा कर देनी चाहिये थी कि मुसलमानों के हितों के सम्बन्ध में उसे कोई बात करनी होगी तो वह मौ०आजाद, गफ्फार, खांसाहिब, अल्लाबख्श, किदवई, हुसैन अहमदमदनी, अताउल्लाशाह बुखारी, डाक्टर जाकिर हुसैन के साथ

करेगी। जो मुसलमान कांग्रेस के साथ थे, जो मुसलमान कांग्रेसी झंडे के नीचे जेलों में गये उनकी तो कांग्रेस ने कुछ भी परवाह न की, और अंग्रेजों के इस शो बोआये के दरे दौलत पर उसने जाकर बीसियों बार सजदा किया। अंग्रेज यही तो चाहता था। गांधी जवाहर ने भारतीय राजनीति में जो उच्चतम स्थान प्राप्त किया है, अंग्रेज यह चाहता है कि वही स्थान एक ऐसा व्यक्ति प्राप्त करे जो दिलो-जान से भारत मे अंग्रेजी राज का पक्षपाती हो। अंग्रेज को वह शख्स मिला--मुहम्मदअली जिन्ना। अंग्रेज ने इस शख्स को तलाश किया, कांग्रेस ने इस शख्स को लीडर बनाया और सेवाग्राम के सन्त ने इसकी लीडरी पर "कायदे आजम" का ठप्पा लगा दिया। जिस शख्स को भारत में तो क्या बम्बई तक में कोई पूछता न था आज वही शख्स भारतीय राजनीति का कर्णधार (Moving Figure) बना हुआ है। विट्टो उसके हाथ में है। सोते समय अगर वह बड़बड़ाता भी है तो अखबार मोटे अक्षरों में उसकी खबर छापते हैं। बुढ़ापे में इसे यह इज्जत नसीब हुई है। ऐसा खुशनसीब शख्स आज लाखों के मजमे में इतनी बड़ी-बड़ी बातें बनाता है, तो आप ही सोचें इस शख्स को इतना शक्तिशाली बनाने के लिए अपराधी कौन ?

(२०)

दिल्ली का नाम पहले शाहजहानाबाद था। असली दिल्ली आधुनिक दिल्ली से १३ मील दूर दक्खिन की ओर यमुना के किनारे महरौली ग्राम के आस-पास थी। उस दिल्ली को जाने का आज भी दिल्ली में एक दिल्ली दरवाजा है। वैसे तो दिल्ली में आज भी हिन्दुओं की संख्या मुसलमानों की अपेक्षा अधिक है परन्तु सौ दो-सौ वर्ष पहले दिल्ली में ८० प्रतिशत हिन्दू थे। हिन्दुओं की अपनी ही गल्तियों से थोड़े ही वर्ष हुए मुहल्ले के मुहल्ले मुसलमान बन गये। लाल कुएं में एक कूचा है जिसका नाम है कूचा पण्डित। कोई जमाना था जब इस कूचे में सब पण्डित ही पण्डित थे परन्तु आज आप इस कूचे में जाइये। चराग

लेकर ढूँढने पर भी पण्डित तो क्या इस कूचे में दूसरा भी कोई हिन्दू आपको न मिलेगा। यही हाल बाड़ा हिन्दूराव का है।

सदर बाजार से होती हुई दिल्ली क्लाथ मिल की ओर जो ट्राम चलती है, जहां पर यह ट्राम समाप्त होती है उस स्थान का नाम है बाड़ा हिन्दूराव। कोई जमाना था जब यह स्थान हिन्दू शूर-वीरों का सर्वश्रेष्ठ गढ़ था, परन्तु खुदा का फजल समझिये, हमारी अपनी गल्तियों का फल समझिये अथवा इसी सौभाग्यशालिनी दिल्ली का दुर्भाग्य समझिये आज यही बाड़ा हिन्दूराव हिन्दुओं के लिये एक मुसीबत बना हुआ है। जितने भी पाकिस्तानी जलूस दिल्ली में निकलते हैं सबका श्रीगणेश यहीं से होता है। सदर बाजार के बड़े-बड़े दुकानदार इसी स्थान पर रहते हैं। यह दुकानदार लाखों करोड़ों का ब्योपार करते हैं। बहुत धनी-मानी लोग हैं। कोई जमाना था यह लोग सहगल, महरोत्रे क्षत्री थे। इनका गौरवर्ण तथा डीलडौल ही इनके उच्चकुलोद्भव होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। दो-तीन वर्ष पहले तक तो यह लोग कभी तुर्की टोपी नहीं पहनते थे, हजामत भी इन्सानों की ही तरह बनवाते थे; सर पर अनेक छिद्रधारी तिनकों की बनी टोपी पहनते थे परन्तु नई पनीरी शतप्रतिशत पाकिस्तानी पैदा हो रही है। बड़े बुजुर्गों की टोपी तो पुरानी ही है परन्तु हजामत ने Two inverted commas and one semicolon का रूप धारण कर लिया है। नई पौद की टोपी बिल्कुल लाल हो चुकी है।

इसी बाड़ा हिन्दूराव से आप चलें सदर की ओर तो दस कदम पर दायें हाथ कुछ भड़भूजों की दुकानें आपको मिलेंगी। भड़भूंजे प्रायः सब के सब हिन्दू ही होते हैं। यह घटना लगभग दस वर्ष पहले की है। उस दिन लीग वाले कोई अपना दिन मना रहे थे मैंने देखा एक भड़भूजा शक्लोसूरत से जो बिल्कुल हिन्दू ही प्रतीत देता था उसकी दुकान पर लीगी परचम फहरा रहा था। मेरा माथा ठंका। उस समय तो ट्राममें बैठे-बैठे ही मैं आगे निकल गया, परन्तु असलियत को जाने बिना मुझे

चैन कहां ! तीन-चार दिन बाद मैं उसकी दुकान पर पहुंचा। कुछ चने खरीदने के बहाने। दो आने के मैंने चने लिये। जब ले चुका तो मैंने बहुत ही अच्छे ढंग से उस बूढ़े से पूछा--बाबा ! तुम्हारा नाम क्या है।···बूढ़ा चौंक पड़ा ? उसने नाम नहीं बताया। उसका लड़का पास ही बैठा था, बोला--नाम पूछने से आपका मतलब ? मैंने उस समय अपने को बहुत सम्भाला। किसी नये मुसलमान से जो स्वयं नहीं बल्कि हिन्दू-समाज का सताया हुआ मुसलमान बनने पर मजबूर हुआ हो और फिर जमाने की थपेड़ें सहता वह देखा-देखी खूब पक्का मुसलमान बन चुका हो उसे यह पूछना कि वह मुसलमान कैसे बना, जान को हथेली पर रखकर ही ऐसा कदम उठाया जा सकता है। परन्तु मुझे तो पूछे बिना चैन ही न थी। मैंने कहा भाई साहिब ! बुरा मत मानना आज तक जितने भी मैंने भड़भूजे देखे सब हिन्दू थे। हिन्दू तो आप भी दीखते हैं लेकिन यह दुकान पर हरा झंडा कैसा।"

"हम हिन्दू नहीं मुसलमान हैं ?" वह लड़का बोला।

असली मुहिम्म का आगाज तो अब था। "मुझे माफ करना"—मैंने अत्यन्त नम्रतापूर्वक कहा--"आप तो बिल्कुल हिन्दू लगते हैं। अपने को मुसलमान कहना आपने कब से शुरू किया।" मेरे शब्दों ने बूढ़े के भीतर छिपी हिन्दुत्व की भावना को मानो चेता दिया--बोला, हिन्दू ही थे पण्डितजी ! परन्तु कर्मों का खेल ? इतना कहकर बूढ़ा चुप हो गया। मैंने कहा—बाबा ! कर्मों का खेल कैसा, जबरदस्ती तो कोई किसी का दीन नहीं बिगाड़ सकता।

"जब हम जबरदस्ती बिगड़े बैठे हैं फिर आप कैसे कहते हैं कि नहीं बिगाड़ सकता।"

"लेकिन जबरदस्ती आप बिगड़े कैसे।"

"पण्डितजी महाराज ! आप जानते हमारी दुकान सबसे पहले है। जरा भी दंगा-फिसाद हुआ हमारी दुकान की शामत आई। हिन्दू तो सब अपने-अपने घरों मे जा छिपते हैं, हमारी दुकान मुसलमानों के

बीच। करें तो क्या करें। पिछली बार जब दंगा हुआ बहुत बड़े हजूम ने हम पर धावा बोल दिया। या मरो या मुसलमान बनो। करते क्या? सोचा अभी तो जान बचाओ पीछे देखा जायगा। बहुत होगा तो यह दुकान छोड़ कहीं दूसरे बाजार में दुकान कर लेंगे। मैंने कहा, भाई! मैं बाल-बच्चेदार हूं हमने तो चने बेच अपना पेट पालना है। हमें मार कर तुम्हारे हाथ क्या आयेगा। हमारी जान बख्शो। उस समय मैंने मुसलमान बन जाने का वचन देकर जान बचाई। जुम्मे के दिन वे लोग मुझे मस्जिद में ले गये। मुझसे कलमा पढ़वाया। मैंने भी सोचा पढ़ लो कलमा। कलमा पढ़ लेने मात्र से क्या कोई मुसलमान थोड़े ही बन जाता है। जब दिल हिन्दू है तो संसार की कोई ताकत किसी को मुसलमान नहीं बना सकती।

समय टल गया। दिल्ली में फिर शान्ति हुई। मेरे कलमा पढ़ने की बात बिरादरी को मालूम हो चुकी थी। अब बिरादरी का कोर्ट-मार्शियल लगा। मैंने कहा—मैं दिल से कभी मुसलमान नहीं बना। उस समय एक तरफ मौत थी और दूसरी तरफ थोड़ी-सी नीति द्वारा जान बच सकती थी। मैंने सोचा शठों के साथ शठता का ही वर्ताव करना चाहिये। कुत्तों की मौत मरने से क्या लाभ। मैंने उस समय आपद धर्म का पालन किया, और कलमा पढ़कर जान बचाई। अब मैं वह दुकान छोड़कर अन्यत्र चला जाऊंगा। फिर मुझे क्या खतरा है। बिरादरी जो मेरे लिये प्रायश्चित निश्चित करे मैं वह प्रायश्चित भी करने को तैयार हूं। पहले के ही समान मुझे हिन्दू ही समझा जाय और मेरे साथ यथापूर्व रोटी बेटी का सम्बन्ध बनाये रखा जाय। मैंने बहुत हाथ-पैर जोड़े। बिरादरी की लाख मिन्नत खुशामद की, परन्तु पण्डितजी महाराज! यह बिरादरी वाले तो दूसरे के घर को आग लगाकर ही दम लेते हैं। इन्हें तो दूसरे को फांसी पर चढ़ा कर ही सन्तोष होता है। बिरादरी ने अपना अन्तिम निश्चय किया—हमारी क्षमा-प्रार्थना को बेदर्दी से ठुकरा दिया गया। हमारे साथ सब प्रकार का रोटी बेटी का

सम्बन्ध बन्द कर दिया। बिरादरी का यह दण्ड मेरे लिये मृत्यु-दण्ड से भी बदतर था, अच्छा होता मैं इस अपमान को सहन करने से पहले ही इस संसार से उठ जाता। परन्तु बच्चों के लिये जीना ही पड़ा। मैं तो आज भी नाममात्र का मुसलमान हूं परन्तु बच्चों पर जमाने की सोहबत का पूरा-पूरा रंग चढ़ता जा रहा है। यह झंडे सब बच्चों ने ही लहराये हैं, मैं तो इनके पक्ष में नहीं। अभी-अभी बच्चों के इस्लामी जोश का यह हाल है, कल न जाने कैसा आयेगा। अगर यही बच्चे हिन्दू रहते समाज के रत्न बनते - अब न जाने क्या बनेंगे। कभी-कभी सोचता हूं यही बच्चे कल अगर मौला बनकर दिल्ली के चांदनी चौक में प्रकट हुये तो फिर—फिर इस हमारे पाप और सन्ताप के लिये—अपराधी कौन ?

(२१)

उस दिन सीतारामजी के दिल में बैठे-बिठाये न जाने क्या वलवला उठा, एकदम जाकर उन्होंने अल्टीमेटम दे ही तो दिया। "चौबीस घंटे के अन्दर-अन्दर या तो तुम सब लोग हिन्दू बन जाओ नहीं तो यहां से डेरा डांटा उठाकर चलते बनो।" यह बात कनखल की है। सीतारामजी कनखल की ओर से हरिद्वार यूनियन के मेम्बर हैं। जिन दिनों नोवा-खालीके सम्बन्धमें बड़ी भयंकर खबरें आ रही थीं उन दिनों सीतारामजी के दिल ने भी जोश मारा कनखल के चौक में बीसियों वर्ष से कुछ गूजर-मुसलमान रहते थे। सीताराम एकदम उनके पास पहुंचे और तत्काल उन्हें चौबीस घंटे में या तो कनखल खाली कर देने अथवा हिन्दू बन जाने का नोटिस दे दिया।

"हम तो यहीं जन्मे और यहीं मरेंगे, दादा ! अब तो हम यहां से जाने से रहे। सारी उमर तो कनखल में बिताई, अन्त वेले में कनखल छोड़ कहां जायें। तुम चौबीस घंटे कहते हो, हम तो कहते हैं तुम अभी हमें हिन्दू बना लो। लो बना लो अभी, इससे बढ़कर हमारा बड़ा भाग्य और क्या होगा। लेकिन भाई सीताराम ! हमें यह तो बता दो—हमें पंडित बनाओगे, खत्रियों में शामिल करोगे, बनियों में मिलाओगे,

पुरोहित बनाओगे—क्या बनाओगे ? भंगी चमार तो हम बनने से रहे ··।'

अब तो पण्डित सीतारामजी चकराये । "खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचे" वाली बात और कुछ न सूझा तो एकदम जोश में आकर बोले—मैं कुछ नहीं सुनना चाहता । चौबीस घंटे का वक्त है खूब सोच-विचार लो" इतना कहकर सीताराम वहां से खिसकते बने । ऐसी बात छुपी रह जाए, यह तो बिल्कुल नामुमकिन । चौबीस घंटे बीत गये । सीताराम का अल्टीमेटम सीताराम के लिये ही जान का बवाल बन गया । २४ घंटे बीत गये । अल्टीमेटम की अवधि पूरी हो चुकी । परन्तु सीताराम खुद अपने अल्टीमेटम के लिये बेकार हो चुके थे । गूजर तो रहे वहीं के वहीं और बात ज्वालापुर तक ही नहीं सहारनपुर और लखनऊ तक बढ़ गई ।

इस घटना के चार रोज बाद मैं कनखल आश्रम में पहुंचा । उन दिनों क्या दिल्ली, मेरठ और सब जगह वातावरण ही लड़ाई-झगड़े की बातों से भरपूर था । श्रीस्वामीजी महाराज बोले—पाराशरजी ! हमारे यहां भी दंगा होते-होते बचा । मैंने पूछा—वह कैसे । उत्तर में श्रीस्वामी जी ने सीतारामजी के अल्टीमेटम की कथा सुनाई । तत्पश्चात श्रीस्वामी जी बोले—"पाराशरजी ! आप दिन रात इस हिन्दू कौम की चिन्ता में लगे रहते हैं और इस कौम की यह हालत है कि लोग अपनी इच्छा से अपना उद्धार कराने के लिये प्रार्थनाएं करते हैं, परन्तु हममें हिम्मत ही नहीं कि उन लोगो का उद्धार कर सकें, दूसरी ओर नोवाखाली की घटनाएं आपके सामने हैं जहां तलवार की नोक पर जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन किया जा रहा है । ऐसी अवस्था रहते हुए यदि भगवान न करे सौ-पच्चास वर्ष में सर्वत्र ऐसे ही उपद्रव जोर पकड़ जायें तो आप ही बताइये इस देवभूमि भारतवर्ष में देवासुर-संग्राम मचाने के लिये अपराधी कौन ?

(२२)

उस दिन मेरे आश्चर्य की सीमा न रही । मेरे एक बहुत पुराने

कांग्रेसी मित्र, मैं कार्यवश उन्हें मिलने गया, मैंने देखा उनके कमरे में एक भी कांग्रेसी नेता का चित्र न था। एक ही सप्ताह पूर्व की बात है, मैं उन्हें जब मिला था मैंने देखा कमरे में सर्वत्र गांधी, जवाहर, पटेल, गफ्फार के चित्र सुशोभित थे। मैंने दीवारों पर पूर्ण हड़ताल देखते ही पूछा, क्यों भाई "इन्क्लाब जिन्दाबाद" का श्री गणेश इन दीवारों से ही शुरू किया गया ? क्या खुनामी हो गई इन दीवारों से। बोले—सारा जीवन कांग्रेस में होम दिया लेकिन अब कांग्रेस पर से श्रद्धा जाती रही।

मैंने कहा—जीवन में भावुकता का समावेश कोई अच्छा गुण नहीं। शायद बिहार और नवाखाली की घटनाओं का यह प्रभाव है।

"नहीं इनके इलावा और भी बहुत सी बातें हैं। मुझे पक्का विश्वास हो चुका है कि कांग्रेस हिन्दुओंके साथ न्याय नहीं कर सकती।"

"जब स्वयं हिन्दू ही हिन्दुओं से न्याय नहीं करते तो फिर यदि कांग्रेस ने भी अन्याय कर लिया तो कौनसी बड़ी बात है।"

"अलीगढ़ में मुस्लिम-यूनिवर्सिटी के तालवेइल्मों ने वह ऊधम मचाया कांग्रेस ने हिन्दुओं के आंसू पोंछने के लिये यूनीवर्सिटी पर २ लाख जुर्माना किया। इस घटना को दो वर्ष होने को आए कांग्रेस पूरी ताकत लगा कर भी एक पाई तक वसूल न कर सकी। इलाहाबाद में मुसलमानों पर उपद्रव का टैक्स लगाया गया, मुसलमानों ने टैक्स देने से साफ इन्कार कर दिया। कांग्रेस मुंह देखती रह गई एक कानी कौड़ी तक न मिली। उधर हापुड़ में स्पष्ट रूप से मुसलमानों की ओर से पहल होते हुए भी कांग्रेसी सरकार ने केवल हिन्दुओं पर ही दो लाख रुपया दण्ड लगाया और असलियत को जाने बिना अगले दिन पुलिस यह दण्ड वसूल करने भी लग गई। मैं कहता हूं क्या यह अन्याय नहीं ? गढ़मुक्तेश्वर के लिए कांग्रेस नें तहकीकाती कमेटी बिठाई। डासना में एक भी आदमी को गिरफ्तार तक न किया गया। यह एक ही शहर का रोना नही कांग्रेसी हकूमतों में नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में यही

अन्याय का राज्य है। जिन लोगों की वोटों से पन्तजी प्रधान बने, जिन लोगों की वोटों से कांग्रेस ने इतना बड़ा रुतवा पाया उन्हीं के प्रति ऐसा अन्याय और ऐसा विश्वासघात।...... ..."

जोश में वह और न जाने क्या कुछबोल जाते। मैंने उनके जोश को ठंडा करते हुए कहा--भाई साहिब! हकूमत करना और चीज़ है, हकूमत पर नुक्ता चीनी करना बिल्कुल दूसरी चीज है। कांग्रेस के प्रति आपका रोष मिथ्या कदापि नहीं। यह दिल भी आप ही के समान इस दर्द से भरा है, लेकिन इस बात को आप न भूल जाइए इसी कांग्रेस के कर्णधर सेवाग्राम के सन्त महीनों से नवाखली में धूनी रमाये बैठे हैं। अस्सी वर्ष की आयु में ग्राम-ग्राम पैदल घूमते हुवे, पाकिस्तान की उस भूमि को "रघूपति राघव राजा राम" के जयगान से परम पवित्र बनाने का यज्ञ रचाये हैं। जिन हिन्दुओं के लिए आप इतने चिन्तित हैं आप ही बताइये ९० लाख साधुओं में से कितने राम के भगत पूर्वी बंगाल पहुंचे। लाखों विधवाएं दुखी हैं, करोड़ों अनाथ और हरिजन दुखी हैं गरीब अनाथ और दलित्त दुखी हैं इन हिन्दुओं न क्या अपने हिन्दू भाइयों पर कभी तरस खाया। घर में बैठे-बैठे बातें करना आसान है आप जरा प्लेटफार्म पर कांग्रेसी राज्य के विरुद्ध एक अक्षर तो कहकर देखिए। आपके कथन की यथार्थता को मानते हुए भी कोई हिन्दू आपकी बात तक सुनने को तैयार न होगा। आप इस विषय में कोई पुस्तक लिखिये, कोई उसको पढ़ने तक को तैयार नहीं। हिन्दुओं पर कांग्रेस का वह रंग चढ़ चुका है जिसे कोई भी कैमिकल एक्शन उतार नहीं सकता। कांग्रेस के नशे में ही तो हिन्दुओं ने भाई परमानन्द और श्यामप्रसाद मुकर्जी तक की जमानतें जब्त करवा दीं। सिंध की लीगी वजारत ने सत्यार्थप्रकाश पर पाबन्दी लगाई, अगर हिन्दुओं को यत्किञ्चित भी अपने भले बुरे का ज्ञान होता वे कम से कम दो प्रांतों में बम्बई और बिहार में हिन्दू महासभा का मन्त्रीमंडल बनन देते। सिन्ध की लीगी वजारत से बम्बई के मराठा टक्कर लेते

बंगाल से बिहार निपिट लेता । सिन्ध में अगर सत्यार्थप्रकाश पर पाबंदी लगती बम्बई कुरान पर पाबन्दी का एलान कर देता । लीगी वजारत के होश एक ही दिन में ठिकाने लग जाते । जिन हिन्दुओं की आप चिन्ता करते हैं, क्या खुद उन्हें कभी भी अपनी चिन्ता हुई । जाइये और इन्हीं हिन्दुओं से जरा पूछिये लीगी प्रांतों में हिन्दुओं की जान की रक्षा करने के लिये क्या वे हिन्दुस्तान के किसी एक प्रांत में हिन्दू महासभा का मंत्रीमंडल बनाने को तैयार हैं ? यदि नहीं तो मैं आप से पूछता हूं बताइये हिन्दुओं के सर्वनाश के लिए, हिन्दू देवियों के अपहरण, सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश की जब्ती, नवाखाली तथा पूर्वी बंगाल के अन्य उत्पातों के लिए अपराधी कौन ?

(२३)

शाम के साढ़े चार बजे से सुहागपुर की चौपाल में ग्राम की पंचायत उस देवी की किस्मत का फैसला करने के लिए बैठी । सारी रात बीत गई प्रातः के ६ बज गये लेकिन हिन्दू समाज का चीफ कोर्ट नौन स्टाप इमरजैन्सी डिस्कशन के पश्चात भी किसी निर्णय पर पहुंच न सका । मीटिंग खत्म नहीं हुई - वह अभी चालू थी । अभियुक्त को फांसी के तख्ते पर लटकाये बिना वह समाप्त कैसे हो सकती थी ।

बात केवल इतनी ही थी कि एक १८ वर्ष की लड़की, जिसके पती का दो वर्ष पहले देहान्त हो चुका था उसके पुत्र पैदा हुआ । परमात्मा की लीला भी कितनी विचित्र है । जो चाहते नहीं, जो मांगते नहीं उनकी इच्छा के विपरीत परमात्मा छत फाड़कर उनके घर में डाल जाता है । जो मांगते हैं, तरसते हैं अनेक प्रकार के अनुष्ठान करते हैं, परमात्मा उनकी ऐप्लीकेशन पर गौर तक किये बिना उसे रद्दी की टोकरी में डाल देता है । उस देवी ने परमात्मा दरबार में कोई प्रार्थनापत्र नहीं भेजा था, तथापि परमात्मा ने उसे एक पुत्र का परमिट दे ही दिया ।

संसार में शायद एक भी देवी ऐसी न होगी जिसके हृदय में माता

बनने की लालसा न हो। यदि मेरे इस कथन के विपरीत संसार में कोई है भी, वह देवी नहीं पाषाण की मूर्ति ही हो सकती है। विधवा और सधवा का विचार तो हमारी अपनी ही कल्पना मात्र है। समाज की गति को नियंत्रण में रखने के लिए हमीं ने कुछ एक नियम बना रखे हैं, परन्तु एक ही नियम तीन काल के लिए पत्थर की लकीर नहीं बन जाता। देश काल को ध्यान में रखते हुए ही उस नियम की उपयोगिता परखी जा सकती है। समाज के नियम मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के लिए हैं न कि उसे बन्धन में डालने के लिए। यदि कोई व्यक्ति, स्त्री हो अथवा पुरुष, समाज के बनाए हुए नियम को अपने ऊपर अत्याचार समझता है उसे अधिकार है वह उन नियमों के प्रति विद्रोह करे।

हां! तो मैं हिन्दू समाज की उस चीफ कोर्ट का वर्णन कर रहा था। मैं उस चौपाल के पास से गुजरा थोड़ी ही देर में मैं सारा मामला भांप गया। एक बूढ़ा बाबा जोर-जोर से धर्म-धर्म की दुहाई मचा रहे थे। मैंने कहा, बाबा! आखिर कौनसी परलो आ गई। बोला, अजी! विधवा के लड़का हुआ। मैंने कहा लड़का तो हो चुका अब तुम चाहते क्या हो—"हम इस औरत को बिरादरी में नहीं रहने देंगे। मैंने कहा, बाबा! एक क्षण के लिए मान लो कि बेचारी औरत से थोड़ी सी भूल हो भी गई, लेकिन वह बिरादरी को कुछ दे ही रही है, छीन तो नहीं रही। तुम इस लड़की को दंड देना चाहते हो, लेकिन जो बालक अभी धरती पर आया ही है, जो अभी तक अच्छी तरह मां के स्तन का दूध तक पीना नहीं सीखा उसे तुम कौन से अपराध में दंड दे रहे हो? माता पिता के दोष के लिए निर्दोष पुत्र को फांसी पर क्यों चढ़ाया जाय। उस औरत को बिरादरी से निकाल देने पर आखिर बिरादरी का कौनसा भला होजायगा?

"हम ऐसे चरित्रभ्रष्ट लोगों को बरादरी में नहीं रख सकते"

"लेकिन जो चरित्रभ्रष्ट लोग अपने रुपये के जोर पर चुंगी और

बोर्ड के मैम्बर बने हैं उनके सामने जाकर तुम लोग काहे को नाक रगड़ा करते हो? बरादरी से निकलकर वह औरत रहेगी तो इसी शहर में। अगर वह इसी मुहल्ले में भी रहना चाहे तो आप उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। अच्छा तो यही है, तुम लोग उस देवी को हौसला दो ताकि वह अपने नवजात शिशु का भली प्रकार से पालन पोषण कर उस बालक को भावी भारत का राष्ट्रपति बनाए।"

"लेकिन इस औरत ने जो पाप कर्म किया है"

"पाप कर्म नहीं किया, बल्कि बड़े से बड़ा पुण्य कर्म किया है। इसने हमारी जाति को एक रत्न दिया है। यह देवी है, हमें इसके प्रति आभार मानना चाहिये। आज वोट युग है। जिन लोगों का गिनती ज़्यादा होगी उन्हीं के हाथ में राज-शक्ति होगी। जो कर्म हमारी संख्या को घटाता है वह पाप है, जो हमारी संख्या में वृद्धि करता है वह धर्म है। पाप और पुण्य की यही कसौटी है।"

लेकिन मेरे समझाने का उन लोगों पर कुछ भी असर न हुआ। पंचायत के कुछ आदमी जरूर मेरी हां में हां मिलाने लगे, लेकिन असली समझाना तो औरतों का होता है। औरतों को समझाये कौन—मुझे जो दुःख हुआ, नहीं जानता शब्दों में कैसे प्रगट करूं।

पूरे पांच वर्ष पश्चात एक बार मैं उस लाइन से गुजर रहा था। पुरानी स्मृतियां फिर से ताजा हो गईं। सुहागपुर में मैंने एक दिन ठहरने का निश्चय किया। मेरी शंका सोलह आना सत्य निकली, हिन्दू समाज के इन चौधरियों ने उस देवी को बिरादरी से खारिज करके ही दम लिया। आखिर वह देवी एक मुसलमान स्कूल मास्टर के हत्थे चढ़ गई। मैंने उस बालक को जिसके जन्म के समय उसकी मां को बिरादरी से खारिज किया गया था, देखा। वह कितना सुन्दर था, मानो वह साक्षात देव बालक प्रतीत देता था। उस बालक का नाम था अश्फाक। यदि अश्फाक के स्थान पर उसका नाम रमेश होता, उस बालक को आशीर्वाद देकर मुझे कितना आनन्द प्राप्त होता, परन्तु अब उसका

नाम अश्फाक था। अत्याचारी समाज की वह जीति जागती निशानी था। उस बालक को देखते ही पहले तो मुझे बेहद खुशी हुई परन्तु तत्काल ही वह खुशी एक अवर्णनीय दुःख में बदल गई। दिल में ख्याल आया यदि यह बालक बड़ा होकर और असलियत को जान कर अपनी माता के अपमान का बदला लेने के लिए दिल्ली के मौला का रूप धारण कर ले तो फिर हमारे उस सर्वनाश के लिए अपराधी कौन ?

(२४)

कल जब मैं ट्राम से उतरा, मैंने देखा बाड़ा हिन्दूराव में दूर-दूर तक हरे रंग का झंडियां लगी हैं। स्वागत द्वारों का निर्माण हो रहा है, बिजली के रंग-बिरंगे बल्ब भी फिट किये जा रहे हैं। मैंने ट्राम से उतरते ही एक मियां भाई से पूछा--कहो भाई, आज क्या बात है ? जवाब मिला--आज कायदे आजम की इकहत्तरवीं साल गिरह है। मैंने कुछ भी नहीं कहा, चुपचाप करौलबाग की ओर चल दिया। दूसरों के बारे में तो मुझे कुछ कहने का अधिकार नहीं, परन्तु नवम्बर के उपद्रवों में बाड़े के टांगे वालों ने जो जो गुल खिलाए, मैंने यह निश्चय किया है कि जीवन पर्यन्त कभी किसी मुसलमान के तांगे पर नहीं बैठूंगा। उस रोज यद्यपि रात्री सामने प्रत्यक्ष दीख रही थी, और मंजिल अभी तीन मील तय करनी थी तथापि मैंने बड़ी तेजी से पैदल ही मंजिल की ओर बढ़ना शुरू किया। एक मिल गए सरदारजी उन्होंने भी करौलबाग जाना था। सोचा, अच्छा ही हुआ एक साथी तो मिला, और वह साथी भी कृपाणधारी सिंह।

दस बारह-कदम चलने पर सरदार जी बोले--यह जिन्ना न जाने कहां से टपक पड़ा। हमारी उमर भी पच्चास के लगभग होने को आई। २० वर्ष तो दिल्ली में ही रहते हो गये। जिन्ना की सालिग्रह मी एक दो साल से ही मनाई जाती देखी।

मैंने कहा--सरदार जी ! यह दिन तो आना ही था, अच्छा हुआ हमारे सामने ही आ गया।

"लेकिन यह दिन आया ही क्यूं ।"

मैंने कहा—सरदार जी ! यह दिन आना ही था। हमारी गल्तियों ने यह दिन लाना ही था। माता ने लड़के को स्कूल में भेजा। लड़का था शरारती, उसने मचाया शोर या कर बैठा कोई और गुस्ताखी। मास्टर ने उसको दण्ड देते हुए उसका नाम ही स्कूल के रजिस्टर से काट दिया। लड़के ने बहुतेरी अनुनय विनय की। बहुतेरे हाथ पैर जोड़े। "मास्टर जी ! मुझे बैञ्च पर खड़ा कर दो, मास्टर जी ? मेरे दो चार बेंत मार लो, मास्टर जी ! मुझे जो चाहे दण्ड दे लो लेकिन मुझे स्कूल से, न निकालो इससे मेरा जीवन ही नष्ट हो जायगा। मेरे में दोष हैं तभी तो मेरे मां बाप ने मुझे यहां आपके पास भेजा। अगर मैं पहले ही समझदार होता तो यहां काहे को आता। आपका फर्ज़ है आप अच्छे तरीके से मेरे दोषको दूर करने का यत्न कीजिये। लेकिन मास्टर माना नहीं। उसने तीन चार लड़कों की मदद से उस बालक को कमरे से बाहिर निकाल दिया। उसका नाम रजिस्टर से काट दिया और साथ में यह भी लिख दिया कि जिस बालक को आज निकाला गया है, जब तक सूर्य और चन्द्रमा रहें तब तक यह बालक तथा इसके वंश का कोई भी बालक इस स्कूल में दाखिल न किया जाय। लड़के ने फिर भी हाथ जोड़ कर कहा—मास्टर जी ! कसूर मैंने किया, आप मेरी आने वाली सन्तान को उनके किस अपराध में दण्ड दे रहे हैं। उनके जन्म से पहले ही आपने कैसे अनुमान लगा लिया कि वे भी ऐसा ही शोर मचायेंगे। क्या ज़रूरी है कि चोर का लड़का चोर ही हो ? क्या ज़रूरी है कि साधू के घर में साधू ही पैदा हो ? क्या हरणाकश के घर में प्रहलाद नहीं पैदा हुआ ? क्या उग्रसैन के घर में कंस नहीं जन्मा ? लेकिन मास्टर ने कुछ न सुनी। वह अपनी हठ पर बराबर कायम रहा।

बालक ने बाहर खड़े २ भी बहुत संतोष किया बहुत अनुनय विनय की परन्तु सब बेकार। आखिर निराश होकर वह किसी अज्ञात स्थल की ओर चल दिया। ऐसे को तैसा मिले करकर लम्बे हाथ। आगे कुछ

दूर जाने पर उसे एक आदमी मिला। वह भी पहले इसी स्कूल में पढ़ता था, उसके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया था। उस आदमी ने उस बालक को सन्तोष देते हुए कहा--तुम चिन्ता मत करो। उस पहले स्कूल का ख्याल बिल्कुल भूल जाओ। तुम्हारे लिये मैंने एक नया स्कूल खोला है। इस स्कूल में न कोई फीस है, न कोई डीसिप्लन है और न ही नियम पूर्वक कोई पढ़ाई का कोर्स ही है। एक बार स्कूल में जाकर नाम लिखा दो, फिर सालभर जहां चाहो दुडंगे लगाते फिरो। साल बाद जब नतीजा बोलेगा तो बस पहली से लेकर दसवीं तक सारे ही पास। इस स्कूल का नाम है--पाकिस्तान !

उस पाकिस्तानी स्कूल में दाखिल होकर भी वह बालक पहले स्कूल में जाने को तड़प रहा था। अनेक बार वह पहले स्कूल के मास्टर के पास गया। कहा--अब तो दरवाज़ा खोल दो। मास्टर ने कहा--दरवाज़ा नहीं खुल सकता। स्कूल की ईंट से ईंट भले ही बज जाय, दीवार तोड़ कर, छत फाड़ कर भले ही भीतर आजाओ, अपने हाथों से दरवाज़ा नहीं खोलूंगा। निराश होकर वह बार २ उसी पाकिस्तानी स्कूल में लौट आता रहा। आखिर वह बिल्कुल निराश हो गया, उसने पहले स्कूल का ख्याल ही दिल से भुला दिया। पाकिस्तान के स्कूल में पढ़ता हुआ वह पाकिस्तान के गीत गाने लगा। कितने ही मलकाने, कितने ही राजपूत, मेवाती, वर्षों ही हिन्दू बनने को तड़पते रहे, हमने उनकी कुछ भी परवाह न की—सरदार जी ! अब आप ही सोचिये आज यही शेखसाहिबान अगर पाकिस्तान के शहन्शाह का जन्म दिन मनाते हैं तो इस के लिये अपराधी कौन ?

(२५)

दिल्ली में अन्य बातों का भले ही कष्ट हो, परन्तु मुफ़त अख़बार पढ़ने की तो बड़ी ही मौज है। फतहपुरी में आप चांदनी चौक की ओर जाने वाले ट्राम-स्टौप पर दो मिंनट खड़े हो कर एक ही नज़र में देश भर के सभी अख़बार पढ़ जाइये। अख़बार पढ़ना भी आज कल

के सभ्य सांसारिकों का एक अमल सा बन गया है और फिर मुफ़्त की अख़बार......काज़ी साहिब ने तो मुफ़्त की शराब तक न छोड़ी थी फिर भला मुफ़्त की अख़बार कौन छोड़े। दिल से मैं अख़बारों के बहुत विरुद्ध हूं। यदि किसी अज्ञात शक्ति की महत्तम प्रेरणा से हिन्दुस्तान के सभी अख़बार बन्द हो जायं, मुझे सब से ज्यादा खुशी होगी। यदि आज सभी अख़बार बन्द हो जायें मेरा देश दो ही दिन में स्वर्ग बन जाय। यदि हमारे देश में अख़बार का और छापेखाने का रिवाज न चलता मेरा ख़याल है मेरा देश कभी का आज़ाद हो चुका होता। अखबारों ने ही जिन्ना को कायदे आज़म बनाया, अख़बारों ने ही दो कौड़ी कीमत के आदमियों को आसमान पर चढ़ाया, अख़बारों ने ही एक दूसरे पर कीचड़ उछाल कर भाई को भाई से लड़ाया।

अब तो मुझे अख़बार पढ़ने का उतना शौक नहीं, परन्तु फिर भी फतहपुरी का एक चक्कर तो रोज़ ही लगा आता हूं। कल जब मैंने अख़बारों पर नज़र दौड़ाई, मिलाप की सुर्खी पढ़ कर मेरा दिल बैठ सा गया—"कांग्रेस की मुस्लिम लीग को नई पेशकश"। मेरे दिल पर बहुत चोट लगी। पास ही में एक दूसरे सज्जन खड़े थे, बोले—कांग्रेस फिर वही गल्ती करने जा रही है। मैंने कहा, निश्चय रखिये कांग्रेस अब वही गल्ती नहीं करेगी। यह सब अख़बारी प्रोपेगंडा है। आज कल अख़बारी दुनिया में बड़ा भारी कम्पीटीशन है। कोई ज़माना था लाहौर से केवल दो अख़बार निकलते थे अब उसी लाहौर से पूरे एक दर्जन दैनिक तो उर्दू केही निकलने लगे। अख़बार अपनी सुर्खियों के कारण ही बिकते हैं खबर में कुछ असलियत्त हो या न अख़बार वाले ऐसी सुर्खी ज़रूर देंगे जिस से पढ़ने वाले के जिस्म में सनसनी सी पैदा हो और पूरा हाल जानने के लिये एक दवन्नी निकाल कर वह ज़रूर ही एजन्ट महोदय की भेंट चढ़ा दे।

मैंने तो अख़बार ख़रीदा नहीं परन्तु साथ वाले आदमी ने दवन्नी निकाल एजन्ट की ओर फेंक ही दी और अखबार उठा लिया। मोटी

खबर के नीचे छोटी सुर्खी थी—"ग्रुपबन्दी के सवाल पर कांग्रेस अंग्रेज के सामने झुक जायगी"—फिर खबर थी—"गुट्टबन्दी के बारे में कांग्रेस मन्त्री मिशन के ६ दिसम्बर वाले एलान को मान लेगी" अखबार हाथ में लिये हम दोनों कम्पनी बाग की ओर चल दिये। वे महाशय बोले—तो आसाम को लीग के हवाले कर दिया जायगा? मैंने कहा—आपने कुछ दिन पहले गांधी जी का वह सन्देश पढ़ा था जो उन्होंने आसाम के सम्बन्ध में आसाम वासियों के नाम प्रकाशित किया था—

"आसाम को कभी भी बंगाल के प्रति आत्म समर्पण नहीं करना चाहिये। अगर आसाममें मर्द रहते हैं तो मर्दानगीके साथ उन्हें अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करनी होगी, संसार भी अगर अपना सारा जोर लगाकर आसामको बंगालके साथ बांधना चाहे तो आसाम को पूरी ताकत के साथ आत्मरक्षा करनी चाहिये। अगर स्वयं गान्धी भी आसाम को बंगाल के प्रति आत्मसमर्पण की सलाह दे तो आसांम वासियों को गान्धी की बात भी नहीं माननी चाहिये। विधान परिषद के गुट्टों में विभक्त होते ही आसाम को परिषद से अलग हो जाना चाहिये। गान्धी महाराज द्वारा ऐसी स्पष्टोक्ति के पश्चात् इस प्रकार की खबर बिल्कुल निराधार है।"

"लेकिन कौम्युनल एवार्ड के सम्बन्ध में भी तो कांग्रेस न आरम्भ में ऐसी ही दृढ़ता दिखाई थी, पीछे Neither accepted nor Rejected रद्द न कबूल का बहाना बना आखिर कांग्रेस ने कौम्यूनल एवार्ड रूपी विष का प्याला पी ही लिया। अगर आसाम को बंगाल के हवाले करना अन्याय है तो शत प्रतिशत बंगाली डाक्टरों, बैरिस्टरों, प्रोफैसरों, साहित्यिकों, आचार्यों को बिल्कुल निरक्षर तुअस्सबी, अयोग्य लोगों की मातहती स्वीकार करने के लिये मजबूर करना क्या यह अन्याय नहीं? यू० पी० के १४ मुसलमानों को ४० प्रतिशत और पंजाब में ४६ प्रतिशत हिन्दुओं को ३६ प्रतिशत सीटें देना क्या यह अन्याय

नहीं ? केन्द्र में १० करोड़ हरिजनों को एक सीट और चार पांच करोड़ लीगियों को पांच सीट देना क्या यह अन्याय नहीं ? और क्या कांग्रेस ने इस अन्याय को स्वीकार नहीं किया ? लीग ने स्वयं ही घर बैठे जब हिन्दुओं को Caste Hindus और Non Caste Hindus सवर्ण तथा अवर्ण इन दो हिस्सों में बांट दिया, क्या कांग्रेस ने शिमला सम्मेलन के समय इसे स्वीकार नहीं किया ? जब पहले भी इतने अन्यायों को अन्याय समझती हुई भी कांग्रेस उन्हें सहर्ष स्वीकार कर चुकी है, फिर यदि आज आसामके बारेमें भी हमारे दिल में वैसा ही सन्देह पैदा होता है तो आप ही बताइये महाशय ! इस सन्देह को हमारे हृदयों में जागृत करने के लिये अपराधी कौन ?

मैंने कहा, पीछे जो कुछ हुआ सो हुआ । कांग्रेस में अब इतनी हिम्मत आगई है कि वह सार्वजनिक रूप से अपनी गल्ती को माने । अभी जवाहरलाल एटली के विशेष निमंत्रण पर लन्दन गये उन्हें नहीं जाना चाहिये था । जवाहरलाल ने खुले आम अपनी इस भूल को स्वीकार किया ।

"लेकिन मेरा सन्देह भी झूठा नहीं महाशय ! कांग्रेस में मुसलमानों का जो फिफ्थ कॉलम शामिल है वही कांग्रेस की कमज़ोरी का कारण है । जवाहरलाल, पटेल, राजेन्द्रप्रसाद, गांधी महाराज की महानता में, दूरदर्शिता तथा न्याय प्रियता में कोई सन्देह नहीं । खान अब्दुलगफारखां, मौलाना आजाद, डाक्टर खान साहिब का व्यक्तित्व चन्द्रमा के समान निर्मल है परन्तु जमीयतुल-उलेमा, अहरार, खाकसार, तथा कुछ एक तथाकथित आज़ाद और कौम परस्त मुसलमान ऐसे वक्तों में कांग्रेस की दृढ़ता को डांवाडोल कर देते हैं, अपने को सच्चा मुसलमान और पक्का मुसलमान साबित करने के लिये वे कांग्रेस पर अपना दबाव डालते हैं, वे इस बात की धमकी देते हैं, यदि कांग्रेस ने उनकी बात नहीं मानी वे सर्वसाधारण मुसलमानों की दृष्टि में गिर जायेंगे । कांग्रेस को छोड़ कर वे लीग में शामिल हो जायेंगे ।

ऐसा बातें सुन कर कांग्रेस का दिल हिल जाता है। जो काम मुस्लिम लीग से अपूर्ण रह जाता है उसे यह कौम परस्त पुरा कर देते हैं। इन लोगों ने लीग की अन्याय पूर्ण मांगों की कभी भी मुखालफित नहीं की। एक भी मुसलमानने इस बातका प्रौटैस्ट नहीं किया कि ९० प्रति शत हिन्दू संख्यां वाले आसाम को क्यू बंगाल के साथ बांधा जाता है। विपरीत इसके मौलाना हिफजुर्रहमान से लेकर अल्लामा मशरकी तक सभी लोग, गुटबन्दी के प्रश्न पर कांग्रेस ने जो दृढ़ता दिखाई है इसके लिये कांग्रेस को ही बुरा भला कह रहे हैं। मुसलमान मानों दोनों हाथों से खा रहे हैं। लीग अंग्रेज़ से बहुत कुछ ले लेती है और उस अन्याय की मांग पर कौम परस्त कांग्रेस द्वारा स्वीकृति की मोहर लगवा लेते हैं। सन २७ से बरावर इनकी यही नीति रही है। कांग्रेस शायद जिन्ना के साथ बात न करती, उसे इतना महत्व न देती परन्तु इन्हीं कौम परस्तोंने कांग्रेस को मजबूर किया कि वह जिन्नाके साथ बात चीत करे। लीगियों तथा दूसरी तथा कथित कौम परस्त मुस्लिम जमाग्रतों में व्यक्तिगत मतभेद Personal differences भले ही हैं, सिद्धान्तों का भेद कुछ भी नहीं। शत प्रतिशत मुसलमान पक्के मुसलमान हैं और सबके सब पाकिस्तान अर्थात् इस्लामी प्रभुत्व के पक्के पक्षपाती। कांग्रेस आज़ादीकी तरंग में मस्त है।उसके सिर पर केवल एकही धुन सवार है, जैसे भी हो सके अंग्रेज़ को हिन्दुस्तान से निकाला जाय। भले ही सारा हिन्दुस्तान नवाखली और ढाका का नमूना बन जाय।

"मैंने कहा—" भाई साहिब ! यह सब आपका भ्रम है। कांग्रेस आसाम के मामले पर नहीं झुकेगी।"

यदि उसमें ऐसी दृढ़ता थी तो उसे मई सन ४६ में ही ब्रिटिश योजना को ठुकरा देना चाहिये था। १६ मई के बयान में मन्त्री मिशन ने साफ २ कह दिया था कि आसाम बंगाल के साथ रहेगा। यही नुक्ता तो बन्दर के विचार के समान मिशन की योजना का आधार है। अंग्रेज़ की दोनों तरह मौज है। अगर कांग्रस ने ६ दिसम्बर वाली व्याख्या

को मान लिया तो समझिये लीग-ब्रिटिश संघ ने बिना तोप और तलवार चलाए आसाम को फतह कर लिया। यदि कांग्रेस ने उसे स्वीकार न किया तो विधान-परिषद् की योजना ही वापिस ले ली जायगी। कांग्रेस इस बात को जानती है। कौम परस्त मुसलमान अंग्रेज़ की चाल को फेल कर देने का बहाना बना कर कांग्रेस को लीग के प्रति आत्म-समर्पण की सलाह दे रहे हैं। अबतक के लक्षण तो यही बता रहे हैं कि कांग्रेस ६ दिसम्बर वाले एलान को मान लेगी। परमात्मा करे वह न माने, परन्तु यदि कौम्यूनल एवार्ड के समान ऊटपटांग सा बहाना बना कर उसने आसाम को लीग के हवाले कर ही दिया तो आप ही बताइये महाशय इस हिन्दुस्थान में पाकिस्तान की स्थापना करने के भीषण अपराध का अपराधी कौन ?

"क्या हम आगे बढ़ रहे हैं या पीछे हट रहे हैं। मंत्री-पद ग्रहण करने से हमारी स्थिति सुदृढ़ नहीं हुई बल्कि कमजोर हो गई है। कदम-कदम पर हमारे नेताओं को ब्रिटिश सरकार के छिपे हुए किंतु वास्तविक विरोध का मुकाबला करना पड़ा है। कांग्रेसियों को उन लीगियों के साथ एक ही सरकार में मिलकर काम क्यों करना चाहिए जो कि प्रांतों में कांग्रेसी सरकार का विरोध कर रहे हैं तथा लोगों को जघन्य हिंसा व बर्बरता के लिए उकसा रहे हैं। हम यह नहीं चाहते कि आप पद-त्याग कर दें पर हम चाहते हैं कि अपनी नीति बदल डालें।"

मा० मोतासिंह

"भारत कभी भी शांतिपूर्ण उपायों से ब्रिटेन से आजादी हासिल नहीं कर सकता। हमें अन्तःकालीन सरकार से अलहदा होकर ब्रिटिश सरकार से लड़ना होगा। पं० नेहरू के कल के भाषण से मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि अनेक परीक्षणों के बाद कांग्रेस आखिर अपनी ८ साल पुरानी जगह पर ही लौट आई है। **पटवर्धन**

: ३ :

पाराशर-स्मृति

कृते तु मानवा धर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः।
द्वापरे शंखलिखिताः कलौ पाराशरः स्मृताः॥

प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा से विराट पुरुष ने घोर तप कर के १० महर्षियों को सर्वप्रथम उत्पन्न किया। इन दश प्रजापतियों ने सात मनु, देवताओं तथा ब्रह्मर्षियों को उत्पन्न किया। पूर्वजन्म के शुभकर्मों का फल देने के लिये उस परमात्मा ने, कल्पना मात्र से स्वर्ग की रचना की। इस स्वर्ग का नाम उसने आर्यावर्त रखा। यह पुण्य भूमि भारत ही वास्तव में स्वर्ग है। अनेक जन्मों के सञ्चित शुभ कर्मों के फल स्वरूप ही मनुष्य को इसपवित्र स्वर्ग-पुरीमें जन्म मिलता है।

आदि सृष्टि में इस समस्त धरती पर आर्यों का निवास था। महाभारत पर्यन्त समस्त भू मंडल पर एक मात्र भारतीय आर्यों का प्रभुत्व रहा। चन्द्रगुप्त-अशोक तक भी भारत गौरवशाली रहा। दाहर, हर्ष तथा भोज तक भी वह गौरव बना रहा, परन्तु दाहर के पश्चात वह गौरव नष्ट-भ्रष्ट हो गया। पृथ्वीराज, प्रताप, शिवाजी महाराज, गुरुतेगबहादुर, गुरुगोविन्दसिंह, वीरबन्दा वैरागी, स्वामी दयानन्द, महात्मा गान्धी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भारत को पुनः गौरवशाली बनाने का पूरा२ यत्न किया, परन्तु दुर्दैव टला नहीं। गुलामी का पिशाच पहले से भी अधिक अपने पांव जमा रहा है।

जिस समय धरती बनी ही थी, उसके पुत्र परस्पर प्रेम से रहते; न कोई राजा था, न कोई प्रजा थी, न कोई अपराध था और न ही अपराधी। संसार का व्यवहार सत्य से परिपूर्ण था। उस युग को सत्युग कहते थे। पुनः जब सत्य ने राजनीति का पर्दा ओढ़ लिया। सांसारिक प्रभुता पाने के लिये संघर्ष चले। उस संघर्ष में भारत सब देशों का सिरमौर था वह त्रेतायुग था। पुनः जब अपने देश के बाहिर हम ने स्वयं ही अपना प्रभुत्व

ढीला कर दिया, परन्तु अपने देस में हम स्वतन्त्र थे वह द्वापर युग था, पश्चात् जब इर्षा, द्वेष, स्वार्थ के वशी भूत हो हमने अपने हाथों अपनी स्वाधीनता को नष्ट करके मध्य-एशिया से आए हुए मूर्ख, उजड्ड, असभ्य मुगलों की पराधीनता स्वीकार की तब से कलियुग का आरम्भ हुआ।

सत्युग में केवल एक ही वर्ण था, त्रेता, द्वापर में चार वर्ण थे। कलियुग ने स्वदेशी शरीर तथा विदेशी विचार वाला एक पांचवां वर्ण संकर भी उत्पन्न हुआ जिसे "मुसलमान" कहा जाता है : वर्णों में ऊंच नीच का भेद कुछ नहीं। मशीन को चलाने के लिये जैसे सभी पुर्जे अपने २ स्थान पर श्रेष्ठ हैं वैसे ही समाज की रचना के लिये प्रत्येक वर्ण समान रूप से मूल्यवान है।

जन्मसे सभी शूद्र हैं, पश्चात् गुण, कर्म स्वभावानुसार मनुष्य का वर्ण निश्चित किया जाता है। ब्राह्मण के घरमें पैदा हुआ नीच वृत्ति का पुत्र शूद्र है और शूद्र कुल में उत्पन्न हुआ आचारवान तथा विद्वान पुत्र ब्राह्मण है। एक ही जन्म में एक ही मनुष्य ब्राह्मण भी हो सकता है, क्षत्री मी, वैश्य भी और शूद्र भी।

वर्ण तथा आश्रय व्यवस्था समाज के लिये अत्यन्त लाभप्रद है, परन्तु यदि राजा भी वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा का पालन करने वाला हो तब। राजा की सहायता तथा सहयोगके बिना वर्णाश्रम धर्मका पाल असम्भव ही है अतः वर्तमान समय में वर्ण व्यवस्था का विचार बि उठा देना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये वह अपने नाम के कुल साथ पंडित लाला इत्यादि किसी शब्द का प्रयोग न करे।

वर्ण धर्म के समान ही आश्रम धर्म का पालन भी वि ...ा राज्य की सहायता के सर्वथा असम्भवहै पराधीनता के युग में गुरु ... कुलों तथा ऋषि-कुलों की सफल स्थापना असम्भव है। आर्य समाज ... सनातन धर्म इत्यादि संस्थाओं को चाहिये कि वे सरकारी पढ़ाई के सा... थ २ प्रतिदिन २ घंटे धार्मिक ज्ञान में भी विद्यार्थियों को दक्ष करें। सभी धार्मिक स्कूलों में शिक्षा का मांध्यम हिन्दी ही होना चाहिये।

कन्याओं को अवश्य ही शिक्षित करना चाहिये, परन्तु कन्याओं की शिक्षा बालकों की शिक्षा से बिल्कुल भिन्न होनी चाहिये। कन्याओं को अंग्रेज़ी पढ़ाना बुरा है और उर्दू पढ़ाना पाप है। हिसाब, विदेशी जुगराफिया, जौमेट्री अलजेबरा कन्याओं को नहीं पढ़ाना चाहिये। धार्मिक शिक्षा प्रमुख है। इस के साथ२ आत्मरक्षा आपद्धर्म तथा शिल्पज्ञान शिक्षा कन्याओं को अवश्य ही सिखानी चाहिये। बालक तथा बालिकाओंकी शिक्षा पृथक२ होनी चाहिये। सह शिक्षा अच्छी नहीं

उत्तम गुणवती कुलीन घर की कन्या के पिता को चाहिये कि कन्या के अनुरूप शुभ गुणों से युक्त, वेद वेदांग पढ़े बुद्धिमान, सबको प्रिय लगने वाले, जिसके नपुंसक न होने की किसी यत्न से परीक्षा की गई हो ऐसे युवावस्था के वर को खोज कर विवाह करे।......

प्राचीन काल में बारात लेकर जाने का रिवाज न था, यह रिवाज मध्य काल की आवश्यकता थी। अब इस रिवाज की आवश्यकता नहीं; कन्यापक्ष वालों से परिचय प्राप्त करने के तौर पर केवल पांच सात मुख्य २ सज्जनों का एक दिन के लिये जाना बहुत काफी है। विवाह में सब प्रकार का आडम्बर वर्जित है, सम्पूर्ण विवाह की क्रिया पर पन्द्रह बीस रुपये से अधिक कदापि खरच नहीं करना चाहिये।

गहने और कपड़े को जिन दिनों स्त्री धन का रूप दिया गया था उन दिनों चांदी पांच पैसे तोला थी और सोना दो तीन रुपये तोला था। कीमती कपड़े तैयार हो जाने के बाद किसी काम के नहीं रहते, सोना १०५ रुपये तोला मिलता है अतः स्त्री धन का दृष्टिकोण अब बदल जाना चाहिये। सच बात तो यह है कि पति का चरित्र ही स्त्री का सबसे श्रेष्ठ स्त्री धन है। जिस देवी को यह रत्न प्राप्त है वह सदा सुखी है। तथापि अकस्मात विपत्तिकाल में कन्या के लिये पिता को अपनी देखरेख में एक विशेष रकम बैंक में जमा करा देनी चाहिए।

किसी के साथ विधिवत विवाही हुई कन्या को यदि कोई अन्य को देने के लिए किसी प्रकार ले आवे तो राजा उसे चोर के तुल्य दंड दे। यदि वाणी मात्र से कन्या का दान किया हो परन्तु सप्तपदी पर्यन्त विवाह न हुआ हो तो उसी अवसर पर किसी दूसरे श्रेष्ठ वर से कन्या विवाह दे। यदि कोई दोषयुक्त लड़के को उसका दोष प्रकट किये बिना विवाह दे तो राजा वर पक्ष वालों को दंड दे और विवाह अनियमित घोषित किया जाय।

वर-वधु का चुनाव करते समय जातिपांति का ध्यान बिल्कुल नहीं करना चाहिये। कीचड़ में पड़ा हुआ रत्न क्या कोई छोड़ देता है? लाल गुदड़ियों में ही होते हैं। योग्य चरित्रवान तथा गुणवान सम्बन्ध जहां भी प्राप्त हो उसे स्वीकार करना चाहिये। हां! इतना बात का ध्यान अवश्य ही रखना चाहिये कि जिस घर में सम्बन्ध किया जाय वहां का खान-पान, रीति-रिवाज, बोल-चाल अपने अनुकूल हो, अपने ही घर के समान हो। सम्बन्ध न तो बिल्कुल पास ही करना चाहिये और न ही बहुत दूर। पास होने में प्रीति नहीं रहती, दूर होने में आवागमन का कष्ट होता है।

प्राचीन काल में इस देश में केवल चार वर्ण थे और इन चारों वर्णों के परस्पर सम्बन्ध होते थे। इतिहास में अनेक ऐसे दृष्टान्त मिलते हैं जब राजाओं ने ब्राह्मण कन्याओं से और ऋषियों ने राज परिवारों में विवाह किये। विदेशियों के साथ भी खुला सम्बन्ध होता था। आज परिस्थिति भिन्न है। एक पांचवां वर्ण मुसलमान भी बन चुका है। इस पांचवें वर्ण में चारों वर्णों के लोग हैं। इनमें से बाहिर से आया हुआ एक भी नहीं। १० प्रतिशत इनमें ब्राह्मण हैं, २० प्रतिशत क्षत्री हैं, २० प्रतिशत वैश्य है और ५० प्रतिशत शूद्र हैं। इन सबका रक्त और हिन्दुओं का रक्त एक समान है अतः चारों वर्णों को किसी मुसलमान की कन्या से विवाह करना उत्तम ही है।

स्त्री का अपना कोई मजहब नहीं, पति का धर्म ही उसका अपना

धर्म है। मुसलमान पिता के घर में पैदा हुई कन्या हिन्दू पति को प्राप्त कर हिन्दू ही बन जाती है। मुस्लिम घरों की भीतरी सामाजिक अवस्था, उनका खान-पान, रीति-रिवाज अनुकूल न होने के कारण किसी हिन्दू कन्या का सम्बन्ध मुसलमान के साथ कभी न करना चाहिये। हां यदि कोई मुस्लिम परिवार बाकायदा शुद्ध होने के पश्चात हिन्दुओं के समान ही रहन-सहन बना ले तो उस परिवार के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में कोई बुराई नहीं।......

विवाह के आठ प्रकार हैं, अपनी २ हैसियत, स्वभाव तथा रहन सहन को ध्यान में रखते हुए देश कालानुसार किसी एक प्रकार से विवाह सम्पन्न करे। योग्य वर को अपने घर पर यथा शक्ति द्रव्य सहित कन्या का दान करना ब्राह्म विवाह कहाता है। एक या दो गौ बैल वर से लेकर विधिपूर्वक कन्या का दान आर्ष विवाह है। हम दोनों साथ २ अग्नि होत्रादि धर्म करेंगे एसा कह कर कन्या के पिता से कन्या की याचना करने वाले वर को विधिपूर्वक कन्या देना प्रजापत्य विवाह कहाता है। कन्या के माता पिता को कुछ द्रव्य देकर विधिपूर्वक कन्या दान आसुर विवाह कहाता है। कन्या और वर दोनों की परस्पर इच्छा से संयोग हो जाना गान्धर्व, युद्ध में कन्या पक्ष वालों को जीतकर बल-पूर्वक कन्या को ले आना राक्षस तथा छल-कपट से कन्या को ले आना पैशाच विवाह कहाता है। इन सब प्रकार के विवाहों में ब्रह्म तथा गन्धर्व की प्रणाली सर्व श्रेष्ठ है।..... आर्ष विवाह में वर से प्राप्त बैल कन्या के पिता को कन्यादान के रूप में लौटा देने चाहिये अनेक प्रकार के विवाहों के समान प्राचीन शास्त्रकारों ने पुत्रों के भी अनेक प्रकार माने हैं और यह सभी प्रकार के पुत्र अपने पिता के प्रति एक समान अधिकार रखते हैं। विवाहादि संस्कार किये हुए अपने क्षेत्र में आप जिसको उत्पन्न करे उसे **औरस** पुत्र कहते हैं। जो मृत अथवा नपुंसक की स्त्री में नियोग द्वारा सन्तान उत्पन्न की जाय उसे **क्षेत्रज**। माता व पिता आपत्काल में जिस समान जाति वाले प्रीतियुक्त पुत्र को संकल्प करके

दे दें वह **दत्तक**। जो पुत्र, पुत्र के समान मान लिया जाय वह **कृत्रिम**। जो गर्भिणी स्त्री से विवाह करे वह **सहोद**। जो घर में पैदा हो जाय परन्तु उसके पिता का पता पीछे चले वह **गूढ़ज,** कुंवारी कन्या से उस कन्या के माता पिता की अनुमति प्रदान किये बिना जो सम्बन्ध करता है उससे जो पुत्र हो वह **कानीन**।

यदि कोई स्त्री-पुरुष अग्नि-साक्षी किये बिना भी परस्पर सम्बन्ध स्थापित करते हैं और वे उस सम्बन्ध के फल के पालन-पोषण की पूरी जिम्मेदारी निभाने को तैयार हैं तो ऐसा सम्बन्ध निन्दनीय कदापि नहीं। जिस प्रेम का उद्देश्य केवल वासनाओं की तृप्ति ही है उस प्रम की अवश्य ही निन्दा करनी चाहिये। तथापि उचित अथवा अनुचित सम्बन्ध द्वारा प्राप्त सन्तान का तो समाज को किसी भी अवस्था में तिरस्कार नहीं करना चाहिये और जिस देवी ने उस सन्तान को प्राप्त किया है उसे कभी दोष नहीं लगाना चाहिये। दोष सदैव पुरुषों का ही होता है स्त्रियों का कदापि नहीं।......

स्त्रिया कभी भी अपवित्र नहीं होतीं। सोमादि देवता का अधिकार होने से सोमदेव ने स्त्रियों को पवित्रता दी है, गन्धर्व देवता ने स्त्रियों को अच्छी वाणी दी है और अग्नि देव ने स्त्रियों को तेज दिया है अतः स्त्रियां स्वयं ही प्रतिमास शुद्ध हो जाती हैं। यदि कोई स्त्री स्वेच्छा से अपहृत अवस्था में अनिच्छा पूर्वक पर पुरुष से सहवास कर भी ले तो भी उस स्त्रा की किसी प्रकार बाह्यशुद्धि की आवश्यकता नहीं। ऋतुकाल होने पर वह व्यभिचार के दोष से स्वतः मुक्त हो जाती है।

स्त्रियों के चरित्र पर कोई सन्देह नहीं करना चाहिये। जिस घर में स्त्री-पुरुष दोनों की सर्वथा अनुकूलता रूप परस्पर प्रेम होता है वहां धर्म अर्थ काम तीनों बढ़ते हैं। स्त्री का परम-धर्म यही है कि वह पति की आज्ञा का पूरा-पूरा पालन करे, जिस कारण स्त्री के द्वारा वंश को गौरवयुक्त करने वाली उत्तम सन्तान प्राप्त होती है तिससे

पुरुष को चाहिये कि स्त्रियों का आदर सत्कार पूर्वक भरण पोषण और उनकी रक्षा करे।

मासिक धर्म के आरम्भ से सोलह दिन स्त्रियों के ऋतुकाल के होते हैं, इनमें भी प्रथम चार दिन, अमावस्या, अष्टमी, पूर्णमासी और चतुर्दशी इन पर्व दिनों में जो पुरुष स्त्री के पास कदापि नहीं जाता वह गृहस्थ भी ब्रह्मचारी ही कहाता है। पुरुष को चाहिये वह केवल अपनी ही स्त्री से अनुराग करे, क्योंकि स्त्रियों की रक्षा अवश्य करनी चाहिये। यदि पुरुष व्यभिचारी होगा तो स्त्री की रक्षा कदापि नहीं हो सकती। सन्तान पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ने की सम्भावना है।

स्त्री क्षेत्र रूप और पुरुष बीजरूप होता है, बीज और खेत इन दोनों में बीज प्रधान है। जैसे किसान सदैव श्रेष्ठ बीज बोता है उसी प्रकार उत्तम सन्तान चाहने वाले पुरुष को संयम द्वारा अपने वीर्य को शक्तिशाली बनाना चाहिये। दूसरे के खेत में बोया हुआ बीज सर्वथा निष्फल ही है। उसी प्रकार बुद्धिमान तथा शिष्ट पुरुष को भूल कर भी दूसरे की स्त्री में कभी बीज न बोना चाहिये।

एक सन्तान प्राप्त हो जाने पर माता पिता को कम-से-कम पांच वर्ष तक संयम का जीवन व्यतीत करते हुए अपनी सन्तान के संस्कारों को शुद्ध तथा पवित्र बनाने में सारी शक्ति लगा देनी चाहिये। जन्म से ही जो संस्कार वेद ने कहे हैं वे संस्कार आडम्बर रहित होकर अवश्य ही करने चाहियें। बच्चों का यज्ञोपवीत तथा प्रारम्भिक वेदारम्भ किसी स्कूल में नहीं बल्कि धर्म-पाठशाला में ही होना चाहिये।

बड़े भाई की स्त्री छोटे भाई को गुरु-पत्नी के समान है और छोटे भाई की स्त्री बड़े को पुत्रवधू के समान कहा है। बड़ा भाई छोटे भाई की स्त्री के साथ वा छोटा भाई बड़े भाई की स्त्री के साथ बिना आपत्काल के कभी सहवास न करे। सन्तान न हो तो पुत्र की इच्छा से भले प्रकार नियोग की हुई स्त्री को देवर या अन्य सपिण्ड से यथेष्ट सन्तान उत्पन्न कर लेनी चाहिये। विधवा के साथ नियोग करने वाला

शरीर में घृत लगा मौन होकर रात्रि में सहवास करे तथा केवल एक पुत्र उत्पन्न करे दूसरा कभी नहीं।

प्रत्येक नगर में ऐसी एक पाठशाला अवश्य ही स्थापित की जाय जहां पर बच्चों का वेदारम्भ संस्कार हो। प्रत्येक वैदिक धर्मी को चाहिये सरकारी स्कूल में भेजने से पहले २ वर्ष तक बालक अथवा बालिका को इस पाठशाला में भेजें। इस पाठशाला के अध्यापक अनुभवी तथा देश हितैषी होने चाहियें। दो वर्ष में बच्चों को साधारण हिन्दी संस्कृत तथा एतिहासिक कथाओं का मौखिक ज्ञान कराना अनिवार्य है।

कुल की शोभा ज्येष्ठ पुत्र से ही है, पिता की सम्पूर्ण जायदाद पर केवल ज्येष्ठ पुत्र का ही एक मात्र अधिकार है। शेष पुत्र केवल निर्वाह मात्र प्राप्त करने के अधिकारी हैं। पिता की अचल सम्पत्ति में पुत्री का कानूनन कोई अधिकार नहीं। यदि पुत्री ही सब बहन भाइओं में ज्येष्ठ है और वह आयुपर्यन्त अपने पिता ही के घर पर रहना चाहती है तो पिता को यह अधिकार है कि वह अपनी चल तथा अचल सम्पत्ति अपनी पुत्री को दे सके। परन्तु विवाहिता अवस्था में पुत्री का अपने पिता की सम्पत्ति पर कोई कधिकार नहीं। एक से अधिक पुत्रियां होने पर पिता उन्हें स्वेच्छा से जो चाहे दें सकता है।

विवाह के पश्चात् किसी प्रकार की सन्तान होने से पूर्व, यदि हुई हो और रही न हो तब भी पति अथवा पत्नी दोनों में से किसो का भी देहान्त हो जाय तो एक दूसरे को पुनर्विवाह का अधिकार है परन्तु सन्तान होने पर किसी को भी पुनर्विवाहका अधिकार नहीं।

यदि कोई विधवा है उसके सन्तान भी है, परन्तु वह विधवा सन्तान की पालना करने में असमर्थ है तो उस विधवा को पुनर्विवाह का पूरा २ अधिकार है। यदि कोई बिधुर पूर्व पति से प्राप्त सन्तान की परवरिश का बहाना बना कर विवाह करना चाहता है वह यदि चाहे तो केवल किसी विधवा के साथ विवाह कर सकता है, परन्तु उस दूसरे विवाह से प्राप्त सन्तान को अचल सम्पत्ति में किसी प्रकार का कोई अधिकार नहीं।

समाज में अधिक विधवाओं का होना समाज के लिये दु:ख का कारण है। अत: विधवा विवाह अवश्य ही होना चाहिये।

यदि पुत्रवती विधवा अपनी समस्त आयु को अपनी सन्तान को योग्य बनाने तथा अपनी अन्य बहनों का संकट दूर करने में लगा देना चाहती है; गृहस्थ के जंजाल से ऊपर उठ कर वह अपने जीवन को देश तथा ईश्वर की उपासना में अर्पण कर देना चाहती है—वह देवी धन्य है।

वर-वधु का चुनाव करने में सर्वाधिकार माता पिता को ही होने चाहियें। लड़के लड़कियों को चाहिये वे अपने विवाह सम्बन्ध में न तो स्वयं कभी सोचें और न ही अपना जीवन साथी स्वयं तलाश करने की कोशिश करें। यह चिन्ता माता पिता पर छोड़ दें।

विषय भोग की इच्छा विषयों के भोग से कभी शान्त नहीं होती, जिस पुरुष को सुनने से, स्पर्श करने से, भोजन से और पदार्थ के सूंघने में हर्ष विषाद न हो वही जितेन्द्रिय है।

जल में सूर्य का प्रतिविम्ब और बीच आकाश में भी सूर्य को न देखे, अपनी छाया पानी में न देखे। पानी वर्षते में न दौड़े। तेज चाहने वाला पुरुष भार्या के साथ भोजन न करे। भार्या को भोजन करते हुए न देखे। नंगा स्नान कभी न करे। माग में, जल, चिता तथा टूटे देव-स्थान में कभी मूत्र न करे। दिन और दोनों सन्ध्याओं में उत्तर की ओर मुख करके तथा रात को दक्षिण की ओर मुंह करके मलमूत्र त्याग न करे। आग को मुख से न फूंके, पैरों को आग पर न तपावे, सन्ध्या-काल में भोजन, शयन तथा यात्रा न करे। सूने मकान में अकेला न सोये, रात को वृक्ष के नीचे न रहे, चमड़े की वस्तुओं का प्रयोग कभी न करे। ब्रह्मचारी, बानप्रस्थी तथा सन्यासी पाओं में चमड़े की जूती कभी न पहरे। रात को कभी न जागे। विरोध वाले के घर भोजन न करे, बैल की पीठ पर सवारी न करे, भोजन करने से पूर्व पैर अवश्य धोले, शिर में तेल लगाकर अन्य किसी अंग को न छुये, जूठन न छोड़े, जूठन न खाये, अतिथि का आदर करे। अतिथि जब विदा हो तो सौ

कदम तक उसे छोड़ने के लिये साथ २ चले, पश्चात कुशल मंगल पूछ लौटता वेर अभिवादन करे। मिताहारी हो। मांस का प्रयोग कभी न करे।

जो अहिंसक प्राणियों को अपने सुख की इच्छा से मारता है, वह पुरुष लोक और परलोक दोनों में दुःख पाता है। प्राणियों की हिंसा किये बिना मांस कभी उत्पन्न नहीं हो सकता अतः मांस खाना भयंकरतम पाप है। जिसकी सम्मति से मारते हैं, जो अंगों को काटकर अलग-अलग करता है, मारने वाला, खरीदने वाला, बेंचने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला, खाने वाला यह सभी घातक के समान ही पापी हैं। पराये मांस से जो अपना मांस बढ़ाने की इच्छा करता है वह महापापी है।

संस्कृत परमात्मा की भाषा है, हिन्दी आत्मा की भाषा है। आत्मज्ञान की प्राप्ति के इच्छुक को संस्कृत तथा हिन्दी का ज्ञान अवश्य ही प्राप्त करना चाहिये।

वे लोग जिनके घर में रेडियो हैं महादुर्भाग्यशाली हैं। मानो उन बदकिस्मत लोगों ने अपने कमरे में ऐसा निशाचर बिठा लिया है जो दिनरात घर के बालबच्चों को कुमार्ग का ही सबक पढ़ाता रहे, और उनके जीवन को नष्ट भ्रष्ट करने के लिए रात दिन गन्दी गजलें उनके कानों में डालता रहे।

दैनिक अखबार पढ़ना मनुष्य के अंतःपतन का हेतु है। आत्मोन्नति के इच्छुक को दैनिक पत्र कदापि पढ़ने नहीं चाहिएं। पाक्षिक तथा मासिक पत्र जिनमें आत्मज्ञान तथा राष्ट्रोन्नति सम्बन्धी विचार हों उन्हीं का स्वाध्याय करना श्रेयस्कर है।

वही खद्दर पहनना धर्म है जो स्वयं अपने घर में अथवा अपने ही मुहल्ले के अथवा शहर के अपने हितचिन्तक स्त्री-पुरुषों द्वारा तैयार किया गया हो। विरोधी के हाथों का जैसे अन्न दूषित है वही बात

कपड़े म भी जानो। अन्न तथा वस्त्र दोनों ही सद्भावना से दिये हुए ही गुण करते हैं।

भारत में उत्पन्न हुए प्रत्येक भारतीय को गृहस्थाश्रम के पश्चात पच्चास वर्ष की अवस्था को पार करते ही एक बार समस्त भारत के तीर्थों की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। परन्तु तीर्थ यात्रा रेल मोटर द्वारा नहीं पैदल ही हो। रेल द्वारा यात्रा फल दायिनी नहीं।

पुत्र के लिए देवता माता है, माता के लिए देवता पुत्र है; पत्नी के लिये देवता पति है और पति के लिए देवता अपना परिवार है। समूचे परिवार के देवता सच्चे देशभक्त हैं। सच्चे देशभक्तों की भक्ति ही देश की भक्ति है। ब्राह्मण के घर में पैदा हुआ ब्राह्मण नहीं जो सच्चा देशभक्त है, दूसरे के लिए सहर्ष कष्ट सहता है, स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ में हा स्वार्थ समझता है वही सच्चा ब्राह्मण है।

श्राद्धों के दिन पितरों के नाम पर देशभक्त विद्वानों का श्राद्ध करना अच्छा ही है। उन विद्वानों का जन्म से ब्राह्मण होना आवश्यक नहीं। श्राद्ध के दिन से कम से कम दसमास पूर्व श्राद्ध कर्ता को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये। एक सप्ताह पूर्व से उसे मिताहारी रहते हुए भूमि पर सोना चाहिये तथा सदग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिए। श्राद्ध के दिन घर पर आए विद्वानों से उसे अपने पूर्वजों के सदगुणों की चर्चा करना चाहिये।

जो भी दान पुण्य करना हो वह अपने ही शरह के लिये करना चाहिये। यदि हम अन्य शहरों की चिन्ता छोड़ अपने नगर को ही श्रेष्ठ बनाएं तो प्रत्येक नगर स्वर्ग तुल्य बन सकता है। विशे २ अवस्थाओं में अकाल, अग्नि, जल तथा साम्प्रदायिक दंगों के कारण क्षतिग्रस्त लोगों की सहायता अवश्य ही करना चाहिये।

कृतयुग में श्रद्धा अधिक थी इस कारण दान आप जाकर देते थ, श्रद्धा सहित बुलाकर त्रेता में देते थे, याचना करने वाले को द्वापर में श्रद्धायुक्त हो देते थे, और अब कलियग में दान सेवा करा कर देते हैं।

जो दान आप जाकर दिया जाता है वह उत्तम है, बुलाकर जो दान दिया जाता है वह मध्यम है और जो दान याचना करने पर दिया जाता है वह निकृष्ट है और जो सेवा कराकर दान दिया जाता है वह निष्फल है।

देश का उद्धार सभी भारतीयों की एकता में ही है, परन्तु हिन्दुओं को हिन्दू-मुस्लिम एकता का विचार दिल से निकाल देना चाहिये। यद्यपि दिल से उन्हें किसी भी भारतीय का अनिष्ट चिन्तन नहीं करना चाहिये। हिन्दुओं का हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये चिन्तित होना तथा इसके लिए यत्न करना सर्वथा व्यर्थ है। हिन्दू-मुस्लिम एकता तभी हो सकती है जब स्वयं मुसलमान इस की चिन्ता करेंगे और सच्चे दिल से इसकी कोशिश करेंगे।

आर्य समाज और सनातन धर्म को चाहिये वे सिद्धान्तों तथा पर-लोक सम्बन्धी मामलों पर झगड़ने की बजाय एक हो जायें। धार्मिक शिक्षा का काम आर्यसमाज सम्भाले और स्कुली शिक्षा का काम सना-तन धर्म सभा। हरिजनों को चाहिये वे अपने को दलित तथा कुछ और समझना छोड़दें। वे अपने को सवर्ण हिंदुओं के समान समझें, सिखों को चाहिय वे भी अपने वास्तविक स्वरूप को न भूलें।

महापुरुषों की जयन्तियों तथा अन्य राष्ट्रीयपर्वों को सबको मिल-कर बड़ी शान से मनाना चाहिये, परन्तु दो बातों का सदैव ध्यान रखा जाय, जिन बातों के प्रदर्शन से हमारी हंसी हो उन बातों को नहीं करना चाहिये, तथा जिन लोगों को हमारे त्योहार के साथ कोई दिली हमदर्दी नहीं उन्हें उत्सव में शामिल नहीं करना चाहिये।

देश का नाश होने के समय, परदेश में रोगयुक्त होने पर और आपत्तियों के आने पर पहले सब प्रकार से अपने ऊपर विपत्ति आने पर कोमल वा कठोर वा जिस किसी उपाय से हो सके अपने आप का उद्धार करे। इसके पीछे सामर्थ्ययुक्त होकर धर्म का अनुष्ठान करे।

आपत्तिकाल उपस्थित होने पर शौचाचार का विचार न करे। पहले अपना उद्धार करे, इसके पीछे स्वस्थ होकर धर्माचरण करे।

भारत के लिये प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली ही सर्वथा युक्त है, परन्तु उस प्रजातन्त्र में प्रत्येक नर-नारी को मताधिकार कदापि नहीं होना चाहिये। नागरिक जीवन तथा सदाचार, शिष्टाचार सम्बन्धी एक विशेष परीक्षा निश्चित की जाय। प्रान्तीय भाषाओं में वह परीक्षा हो। जिन्होंने वह परीक्षा पास की हो केवल उन्हीं को मताधिकार होना चाहिये।

परन्तु जो महानुभाव शासन सभाओं के सदस्य (Ministers and M. L. A;) बनना चाहें उनकी नागरिक जीवन की योग्यता उच्च तो होनी ही चाहिये, इसके अतिरिक्त उनकी आयु ५० वर्ष से कम तो कदापि न हो।

प्रान्तों का पुनर्विभाजन आवश्यक है। पंजाब के हरयाना तथा जालन्धर डिवीजन, लाहौर तथा अमृतसर नगर पंजाब के पृथक प्रान्त होने चाहियें, पश्चिमी बंगाल को भी पूर्वी बंगाल से अलग कर देना चाहिये।

एक व्यक्ति के पास उतने ही मकान होने चाहियें जितने उसकी रिहायश के लिये आवश्यक हों। शेष मकान राज्य को उचित मुआविजा देकर स्वयं अपने कब्जे में कर लेने चाहियें। जमींदार उसी को मानना चाहिये जो स्वयं अपने द्वारा काश्त करे। एक व्यक्ति के परिवार की आवश्यकताओं को देखते हुए तथा उस व्यक्ति की हिम्मत का भी ध्यान रखते हुए उतनी जमीन काश्त के लिये उसे दे देनी चाहिये।

मजहब राजनीति से बिल्कुल अलग है। किसी भी शासन सभा में कोई मजहबी मामला पेश न हो, कोई ऐसा कानून पास न हो जो केवल एक ही दल-विशेष पर लागू किया जाय। ईर्षा तथा बदले की भावना से उपस्थित किये हुए प्रस्ताव पर कदापि विचार न करना चाहिये। जो व्यक्ति इस प्रकार का प्रस्ताव करने की चेष्टा करे उसे मतदान के सर्वथा अयोग्य ही समझना चाहिये।

भारतीय राष्ट्र का नव निर्माण

मोहन नहीं है ?

गोकुल वही है मथुरा वही है, मथुरा में बहती यमुना वही है।
यमुना के जल की महिमा वही है, लोगों की इस पर श्रद्धा वही है।
यमुना के तट पर गौओं के झुरमट, सूरत वही है नक्शा वही है।
मन्दिर वही हैं इन मन्दिरों में रौनक वही है शोभा वही है।
जो रासलीला देखी थी हमने ब्रजवासियों की लीला वही है।
शक्ति में भक्ति, भक्ति में मुक्ति, इस ज्ञानवाली गीता वही है।

जो कुछ जहां था सब कुछ वहीं है।
लेकिन कन्हैया घर में नहीं है॥

यमुना के तट पर मोहन नहीं है, मोहन नहीं है जीवन नहीं है।
यमुना की लहरें बेताबोबेकल, इन पर पुराना यौवन नहीं है।
पंडे पुजारी गिनती से बाहिर, लाखों में इक भी ब्राह्मण नहीं है।
दुखिया के सिर पर चलते हैं आरे, गाय का कोई मामन नहीं है।
गीता के सरमन होते हैं अब भी, सुनने को कोई अर्जुन नहीं है।
हिन्दू वही हैं पर हिन्दुओं में जीवन का कोई लक्षण नहीं है।

मोहन की नगरी बरबाद देखी।
बरबादियों से आबाद देखी॥

—मोहनलाल शहीद वकील, अलीपुर (मुजफ्फर गढ़)

सीख, ओ हिंदू जाति !

कुछ अपने भूत से, कुछ अपने वर्तमान से—
और कुछ अपने आनेवाले काले-काले भयंकर भविष्य से ।

सीख, ओ वीर जाति !

कुछ करोड़ों बाल-विधवाओं के शाप से, कुछ विधवा सधवाओं के सन्ताप से । और कुछ अपनी गोदीमें पड़े दस करोड़ अछूतोंके परितापसे ।

सीख, ओ ऋषि संतान !

कुछ अपनी शक्ति के ह्रास से, कुछ अपनों ही द्वारा हो रहे अपने उपहास से । और कुछ·········हताश नौजवानों के जीवन-नाश से ।

सीख, ओ भारत सन्तान !

कुछ पूर्वी बंगाल के सन्तप्तों की चीखो पुकार से, कुछ सिन्ध में हो रहे धर्म पर भीषण प्रहार से । और कुछ यत्र तत्र सर्वत्र त्रस्त हिन्दुओं के हाहाकार से ।

सीख, ओ आर्य सन्तान !

देख ! तुझे निगलने के लिये पाकिस्तान का विषैला नाग फन फैलाये खड़ा है। कांग्रेस,जिसपर तुझे इतना अभिमान था उसने भी तेरा साथ छोड़ दिया। देख ! शस्य श्यामला भारत वसुन्धरा आज अपने ही सपूतों के रक्त से रक्त वर्णी हो रही है । देख ! पुण्य-भूमि भारत को मरुस्थल में बदल देने के लिये चर्चल-जिन्ना का षडयन्त्र आज भयंकरतम रूप में प्रकट हो रहा है । मातेश्वरी भागीरथी के वक्षःस्थल पर पाकिस्तान का विष वृक्ष । देख ! अपने ही घर में अपने ही सपूतों द्वारा अपनी महान दुर्गति-धर्म के नाम पर अधर्म, ईश्वर के नाम पर पाप, मज़हब के नाम पर धोका, फरेब, छल, कपट, मिथ्याचार, दुराचार······

और चेत, ओ भारत सन्तान !

नहीं तो मिट जायगी, धरती तल से नष्ट-भ्रष्ट हो जायगी ।

ऋषिराज महामना मालवीयजी का अंतिम संदेश

वर्षों से लगातार हिन्दू सच्ची हिन्दू-मुस्लिम एकता को मूर्तिमान देखने के लिए अपनी ओर से पूर्ण चेष्टा करते रहे और उदारता से काम लेते रहे हैं। आज भी हिन्दू सहयोग करने और सहिष्णुता से काम लेने को तैयार हैं। परंतु मुझे यह देखकर दुःख है कि उनकी सहिष्णुता का अर्थ दुर्बलता किया जा रहा है और उनके सहयोग को अधिकांश मुसलमानों के द्वारा ठुकराया जा रहा है। असहिष्णुता की भावना से नहीं, वरं पूर्ण सावधानी तथा मनन-चिन्तन के उपरान्त में यह वक्तव्य दे रहा हूं। क्योंकि यह निश्चित हैं कि जबतक हिन्दू एक जाति के रूप में कमर कसकर तैयार नहीं हो जायेंगे, तबतक हिन्दू-मुस्लिम समस्या अपनी सारी भयंकरताओं को साथ लिए बनी ही रहेगी।

हिन्दू नेताओं का जैसा कर्तव्य अपना मातृभूमि के प्रति है, वैसा ही अपने धर्म, संस्कृति और अपने हिन्दू-बन्धुओं के प्रति भी है। यह नितांत आवश्यक है कि हिन्दू अपने को संघटित करें, सब एक होकर काम करें, निःस्वार्थ और देशभक्त कार्यकर्तांओं का एक दल निर्माण करें, जिनका एकमात्र उद्देश्य सेवा हो। जाति तथा वर्णगत भेदों को भुला दें और हिन्दू-जाति की रक्षा के लिये और अपने आदर्श तथा संस्कृति को बचाने के लिए अधिक से अधिक त्याग करें।

हिन्दुओं को प्रभावपूर्ण रूप से संघटित होने की नितान्त आवश्यकता क्यों है, इसके कारणों पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु आज देशभर में मुसलमानों की राजनीतिक और धार्मिक संस्थाओं के कैसे विचार हैं और वे क्या कर रहे हैं, इसका उल्लेख करना यहां आवश्यक है। मुसलमान नेताओं के द्वारा दिये हुए अग्निमय भाषण, अज्ञात मुसलमान-संस्थाओं द्वारा सावधानी के साथ जान बूझकर तैयार किये हुये गुप्त लेख, मुस्लिम-लीगका धमकियों से भरा हुआ

राजनीतिक रुख, कलकत्ते का हिन्दू हत्याकाण्ड, पूर्व बंगाल में मुसलमानों के सुसंगठित दलों के द्वारा किये हुये कुकर्मों के रोमांचकारी समाचार और देशभर में दंगों का उत्पादन देखकर प्रत्येक हिन्दू का हृदय निश्चित ही रोष से खौलने लगना चाहिये और हिन्दू जाति की रक्षा के लिए कुछ कर डालने को उमड़ उठना चाहिये।

वर्तमान घटनाचक्र के निरीक्षकों और आलोचकों में से बहुतों का यह निश्चित मत है कि परिस्थिति का यह रूप क्षणिक नहीं है। और हिन्दू जाति को यदि जीवित रहना है तो उसे कमर कसकर तैयार हो जाना चाहिये। वर्षों और शताब्दियों से हिन्दुओं की मनोवृत्ति धर्म की अपेक्षा राष्ट्रीयता की ओर अधिक झुकी रही है। हिन्दू सत्यका प्रेमी और अहिंसा का विश्वासी है। उसमें युद्ध की भावना का अभाव है और एक राष्ट्रगत मनुष्यों में परस्पर लड़ाई झगड़े की भावना से उसे घृणा है। हिन्दुओं की इस मनोवृत्ति से लाभ उठाकर मुसलमानों ने अपनी मांगों को बढ़ा दिया और उनपर धार्मिकता का रंग चढा कर नया जोश भर दिया है। इस प्रकार के लड़ाई झगड़ों का जड़ झूठा प्रचार है और मुसलमान इस कार्य में अपनी आशा से भी अधिक सफल हुए हैं!

पिछले तमाम वर्षों में हिन्दुओं ने सदा हानि उठायी है। कांग्रेस एक राष्ट्रीय संस्था है और मुस्लिम-लीग साम्प्रदायिक। फिर भी दोनों के साथ बराबरी का व्यवहार किया गया है और इस प्रकार बहुसंख्यक (हिन्दू) जाति के अधिकारों को कुचला गया है। उनकी आशाओं पर विकसित होने के समय ही पानी फेर दिया गया है और भारतीय राष्ट्रीयता के नाम पर उनकी संस्कृति और धर्म का सर्वथा अवहेलना की गयी है!

हिन्दुओं की तथा अन्य जातियों की राजनीतिक उन्नति कांग्रेस के हाथों में सुरक्षित मानी जा सकती है। परन्तु हिन्दुओं के विशुद्ध साम्प्रदायिक प्रश्नों पर, धार्मिक सांस्कृतिक और सामाजिक उन्नति के

प्रश्नों पर अन्तिम निर्णय देने का अधिकार निश्चय ही किसी हिंदू-संस्था को ही है जो उसकी ओर से बोलने तथा कार्य करने के लिये प्रतिनिधित्व करती हो। धर्म-परिवर्तन निश्चय ही रुकने चाहियें। साथ ही, ऐसे मुसलमानों को और खासकर उनको जिनका जबर्दस्ती धर्म-परिवर्तन कर दिया गया है और जो हिन्दू होना चाहते हैं—विशेष सुविधा देनी चाहिये। हिन्दुओं को निश्चय ही ऐसे आवश्यक उपाय कर लेनें चाहिये कि जिससे मसलमानों द्वारा दी हुई आर्थिक और सामाजिक बहिष्कार की धमकी उल्टे उन्हीं के सिर पर जाकर नाचे। हिंदुओं को भयमुक्त होकर बहादुर और मजबूत बनना चाहिये। सैनिक-शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। स्वयं-सेवकों की संस्थाएं बनानी चाहियें और आत्मरक्षा के लिये एक केन्द्रीय स्वयं-सेवक सेनाका निर्माण करना चाहिये।

बहुसंख्यक हिन्दू-जातिके लिये मृत्यु का परवाना लेकर आने वाली इस महामारी के आक्रमण के विरुद्ध हिंदुओं को सिर उठाना चाहिये। चेतावनी की घंटी बज जानी चाहिये। पर कमर कसकर तैयार होकर, स्वयंसेवक-संस्थाओं का निर्माण कर या अपने दृष्टिकोण को सैनिक रूप देकर वे किसी के प्रति किसी प्रकार हिंसा की इच्छा नहीं करेंगे। आत्मरक्षा और आत्मस्थिति ही उनका ध्येय है। स्वयं जीवित रहना और दूसरों को जीवित रहने देना ही उनके उद्देश्य हैं। जो हिन्दुओं को शान्ति के साथ नहीं रहने देना चाहते उनके प्रति किसी प्रकार की सहिष्णुता नहीं हो सकती। यदि धर्म की ही पुकार है तो अवश्य ही उसमें धार्मिक दृढ़ता की गूंज होनी चाहिये। रक्षा की व्यवस्था निश्चय ही इतनी प्रभावशाली हो कि आक्रमण निश्चित रूप से व्यर्थ हो जाय। आत्म-सम्मान ऐसी बहादुरी से भरा होना चाहिये कि जिससे स्फुट आक्रमण भी निश्चित रूप से असफल हो जायं। कोई भी मूल्य देकर शान्ति चाहने से समस्या का समाधान नहीं होता—साम्प्रदायिक समस्या का तो और भी नहीं। हिन्दुओं को निश्चय ही, अपने प्रत्येक हिन्दू-

भाई के प्रति कर्तव्य-पालन करने के लिये उत्साहित करना चाहिये और उन्हें अपने को धन्य मानना चाहिये कि वे उन ऋषियों और महात्माओं के धर्म के अनुयायी हिन्दू हैं जिन्होंने मनुष्यों की वासस्थली वसुन्धरा को स्वर्ग बनाने की चेष्टा की और सारे जगत् को कुटुम्बवत् मानकर भ्रातृत्व का प्रचार किया !

हिन्दुओं को हिंदुओं की सेवा अवश्य करनी चाहिये। हिंदुओं को आज अपने संरक्षण की बड़ी आवश्यकता है। बर्बरतापूर्ण आक्रमण, मिथ्या राजनीतिक प्रचार अथवा मेल-मिलाप-नीति की मिथ्या कल्पना या निर्जीव बना देने वाले तत्त्व-ज्ञान के द्वारा हिन्दू अपने धर्म को मरने देना नहीं चाहते, अपनी संस्कृति को मिटने देना नहीं चाहते और न अपनी संख्या को ही घटने देना चाहते हैं। यदि हिंदू अपनी रक्षा नहीं करेंगे तो उनके नष्ट होने में देर नहीं लगेगी। यदि वे पिछड़े रहे तो रौंदकर क्रिया रहित और निर्जीव बना दिये जायंगे। उन्हें अकर्मण्य बिल्कुल नहीं रहना चाहिये। उनमें अवश्य ही साहस होना चाहिये। उन्हें मरने से कभी नहीं डरना चाहिये। उन्हें परस्पर भाई-भाई की तरह प्रेम करना चाहिये और प्रत्येक हिन्दू के प्रति सहनशील बनना चाहिये; परन्तु उन मुसलमानों के प्रति सहनशील बिल्कुल नहीं होना चाहिये, जो उन्हें शान्ति के साथ रहने देना नहीं चाहते।

मैं इस प्रकार की प्रेरणा करना अपना कर्तव्य समझता हूं; क्योंकि इस समय मानवता दांव पर लगी है। हिन्दू-संस्कृति और हिन्दू-धर्म खतरे में हैं। परिस्थिति संकटापन्न है और ऐसा समय आ गया है कि हिंदू एक होकर सेवा तथा सहायता के साधनों को परिपुष्ट करें और अपनी रक्षा तथा अपने स्वत्व को प्रभावशाली बनावें।

समूचे भारतवर्ष में अनेकों मुसलमान-नेताओं ने अपने लेखों और आडम्बरपूर्ण व्याख्यानों में जहर मिलाया है। मुस्लिग-लीग के नेताओं, मि० गजनफर अली खां तथा दूसरों ने अपने लेखों तथा व्याख्यानों में जंगली और दायित्वशून्य भाषा में हिन्दुओं को चुनौती दी है। बंगाल

की घटनाओं पर एक भी मुस्लिम-लीगी नेताने घृणा प्रकट नहीं की है। बल्कि इन बर्बर तथा पाशविक घटनाओं पर वे एक आन्तरिक आनन्द का अनुभव करते हैं। मैं उनकी-सी विष घुली स्याही में अपनी लेखनी डुबोकर कुछ नहीं लिखना चाहता। मैं अपने हिन्दू भाइयों से यह नहीं कहता कि जहां मुसलमान कमजोर या कम हों, वहां वे उनपर आक्रमण करें। पर हिन्दुओं से मैं यह अवश्य कह रहा हूं कि जहां वे दुर्बल हों, वहां सबल बनें, और जहां उनकी संख्या कम हो वहां सफलता-पूर्वक अपनी रक्षा करें। हिन्दू-बहुसंख्यक प्रान्तों में हिन्दुओं ने अल्प-संख्यकों के अधिकारों का कभी विरोध नहीं किया, बल्कि उनके अधि-कारों की गारण्टी दी है। हालांकि वे देखते आ रहे हैं कि मुस्लिम-बहुसंख्यक प्रान्तों में न केवल हिन्दुओं के अधिकारों की भीषण एवं क्रूर अवहेलना की जाती है बल्कि उनके जीवन, धन और धर्म पर भी आघात होता है! सामाजिक संगठन के आधार पर निर्मित अराजनीतिक संस्थाओं के अभाव ने राष्ट्रीयता के मोर्चे को बहुत दुर्बल बना दिया है और खुश करने की राजनीतिक नीति को तथा मुस्लिम-लीग की असम्भव मांगों को जन्म दिया है।

केवल धर्म और संस्कृति के नाम पर ही नहीं, अपनी प्यारी जन्म-भूमि के नाम पर भी मैं समस्त हिंदुओं से अपील करता हूं कि यदि वे भारतवर्ष में चिरकाल के लिये शान्ति चाहते हैं और ऐसा सन्देश देना चाहते हैं कि जिसको मुसलमान तथा अन्य जाति एवं धर्म के लोग सुनें तो वे एक हो जायं और अपनी रक्षा करें। सन्देश यह हो कि—'जैसे वे पहले रह चुके हैं, अब भी वे एक साथ, एक ही भूमि पर रहना चाहते हैं और यदि वे हिन्दुओं के साथ शान्ति से रहना चाहते हैं तो उन्हें निश्चय ही हिन्दुओं के धर्म का आदर करना पड़ेगा, वे हिन्दुओं के पूजागृहों—मन्दिरों को भ्रष्ट नहीं कर सकेंगे और धार्मिक स्वतन्त्रता, जीवन की पवित्रता एवं स्त्रियों के सतीत्व का उन्हें अवश्य सम्मान करना पड़ेगा।'

कांग्रेसी महापुरुषों की सेवामें !

आपने जो इस बार गल्ती की है इस गल्ती ने आपकी पहली सभी गल्तियों को मात कर दिया है। चालीस करोड़ नर-नारियों की जिन्दगी और मौत के सवाल को आपने सत्य और अहिंसा द्वारा स्वराज्य प्राप्ति के लिये महज एक प्रयोगशाला समझ रखा है। अंग्रेज को निकालने की धुन में आप भारत में औरंगजेबी राज्य को मजबूत कर रहे हैं। आपने हिन्दुओं से विश्वासघात किया है; सिखों का, फ्रन्टियर के पठानों का और भोले-भाले आसामियों का तो आपने सर्वनाश ही कर दिया।

परन्तु याद रखिये विश्वासघात के इस पाप के भागी बनकर भी आपकी मनोकामना पूरी न होगी। जिन्ना कभी भी तुम्हारे साथ मिल बैठने को तैयार न होगा। कितना अच्छा होता आप अपनी आन को, अपनी शान को कायम रखते। यदि अंग्रेज न्यूदिल्ली के राजमहल में बैठ कर आपको विधान बनाने की इजाजत न देता आप जंगलों में बैठकर स्वतन्त्र भारत के भाग्य का निर्णय करते। आजाद, आसफ, किदवाई, गफ्फार तो आपके साथ थे ही। आपको चिन्ता किस बात की थी ? नोट कर लीजिये जिन्ना अंग्रेज का है और अन्तकाल तक वह अंग्रेज का ही रहेगा। आसाम ही नहीं, फ्रन्टियर और पंजाब ही नहीं तुम उसकी झोली में बम्बई, मद्रास, नागपुर और लखनऊ भी डाल दो जिन्ना जिसका था उसी का रहेगा।

निःसन्देह जिन्ना एक भाग्यशाली आदमी है। उसकी इच्छा बराबर पूरी होती जा रही है। जिन्ना कहता है कांग्रेसी प्रांतों में जिन मुसलमानों को कष्ट है वे सिन्ध और बंगाल में आजायें। कांग्रेस कहती है—हम मुसलमानों को किसी प्रकार का कष्ट न होने देंगे। लाड़ला बेटा, लगा घर की मटकियां फोड़ने। वह जानता है मुझे किसी ने कुछ कहना तो है नहीं। बच्चा लाड़ला हो, चरित्रहीन हो और फिर उसकी खुशामद भी की जाय तो मानो घर की ईंट से ईंट बजने में कोई सन्देह नहीं। यही अवस्था आजकल कांग्रेसी प्रान्तों की हो रही है।

मुसलमानों के हौसले बेहद बुलन्द हैं। अत्याचारी और आततायी होते हुए भी वे मानों दूध के धुले हैं। लीगी प्रान्तों में खुले आम हिन्दुओं के संहार की स्कीमें बनती हैं, कांग्रेसी प्रांतों में हिन्दुओं के संहार की स्कीमें तो नहीं बनतीं, परन्तु ऐसी स्कीमें बनाने वालों की पीठ जरूर ठोंकी जाती है। हिन्दू-मुस्लिम के मुकाबले में स्पष्टतया मुसलमानों का दोष होते हुए भी हिन्दुओं पर ही जुर्माना होता है, उन्हीं को जेल में ठोंसा जाता है। आखिर यह खेल कब तक खेला जाता रहेगा।

हिन्दू जन्म से ही देशभक्त है। मुसलमान इस देश को अपना देश नहीं समझता; अगर समझता भी है तो केवल इस दृष्टिकोण से जैसे एक कसाई अपनी बकरियों को अपनी समझता है। मुसलमान को आशा दिलाने के लिये अरब, ईरान, फारस के रेगिस्तान बहुत काफी हैं, हिन्दू हिन्दुस्तान के बाहर कहां झांक सकता है। मुसलमान के लिये देशभक्ति एक पेशा है हिन्दू के लिये देशभक्ति धर्म है; देश उसके जीवन का अंग है। मुसलमान कभी कभी इसलिए गांधी टोपी पहन लेता है ताकि कोई बिरला या डालमियां उसकी संस्था के लिए दो चार लाख का चैक दे दे, अथवा कोई कांग्रेस कमेटी उसे एम.एल.ए. बनाने के लिये अपने फंड में से लाख दो लाख रुपया इलैक्शन प्रोपेगंडा में स्वाहा कर दे, अथवा पंत या सिन्हा कहीं अपनी मिनिस्ट्री में उसे एक-आध ओहदे पर रौनक अफरोज़ कर दे। लेकिन हिन्दू की तो मां कैद है। जिस माता का उसने दूध पिया, जिस माता की गोद में उसने जीवन की निर्दोष घड़ियां सुखपूर्वक व्यतीत कीं आज उसकी जननी जन्मभूमि आतताइयों द्वारा पदाक्रान्त हो रही है। हिन्दू के सामने अपनी माता के पिये दूध का बदला चुकाने का प्रश्न है। जो भी उसे कहता है—मैं तुम्हारी माता को आजाद करा दूंगा वह आंख मीचकर उसके पीछे चल देता है। इसीलिए हिन्दू ने आपको वोट दिये, इसीलिये हिन्दुओं ने अपनी किस्मत की बागडोर आपके हाथों में पकड़ा दी, उसे विश्वास था यही सूरमा मेरी मातृभूमि के बन्धन काटेंगे। आज भी हिन्दू का

ऐसा ही विश्वास है। और आप हिन्दुओं के साथ जसा चाहें व्यवहार कर लें आप पर हिन्दुओं का विश्वास वैसा का वैसा बना रहेगा। मुसलमानों को आप हजार सिर पर चढाएं वक्त पर यह कभी काम नहीं आयेंगे। हिन्दु को आप जितना चाहें पीस डालें, परन्तु भारत माता की जय सुनते ही उसका खून पिघल जायेगा और तिरंगे की लाज रखने के लिए इन्क्लाब जिन्दाबाद का नारा लगाता हुआ वह जान की बाजी लगा देगा। इसीलिए मैं आपकी सेवा में प्रार्थना करता हूं— हिन्दुओं के प्रति आपको विश्वासघात कदापि नहीं करना चाहिए। मैं यह नहीं कहता कि आप किसी के साथ अन्याय करें, मैं आपसे यही प्रार्थना करता हूं, आप सबके साथ एक सा न्याय करें।

मैं हिन्दू-मुस्लिम एकता का विरोधी नहीं परन्तु किसी भी नूतन प्रयोग की अन्तिम सार्थिकता को समझने के लिए साठ-पैंसठ वर्ष का समय बहुत काफी होता है। आप लोगों ने विगत पचास वर्षों में हिन्दू-मुस्लिम एकता का जो तजुर्बा किया, देख लीजिये उसका फल। आप एक भी मुसलमान दिखाइये जो आपकी प्रयोगशाला में आकर फ़िरका-परस्त की बजाए सच्चे अर्थों में कौम परस्त बना हो, विपरीत इसके मैं सैकड़ों ऐसे मुसलमानों के नाम पेश कर सकता हूं जो कांग्रेस रूपी लैबोरेटरी में आकर कौम परस्त से कट्टर फिरकापरस्त बन गये। कोई जमाना था मिस्टर जिन्ना कांग्रेस के जनरल सैक्रेट्री थे, कोई जमाना था हसरत मोहानी भी कौमियत के तराने गाते थे, कोई जमाना था अल्लामा इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' के नगमे गाकर भारत का सर बुलन्द किया था। आज यह सब कहा हैं? कहां है जफरअलाखां, कहां है आलम, कहां है दाऊद गजनवी, मुहम्मद हुसैन और इफ्तखार। अच्छा होता यदि कांग्रेस हिन्दू मुसलमान का भेद भुलाकर केवल देशभक्तों से ही कुर्बानी की अपील करती। आजादी की लड़ाई जीतने के लिए सौदा फरोशों की नहीं सरफरोशों की जरूरत है।

मुसलमान जब तक मुसलमान है कभी देशभक्त नहीं हो सकता, हिन्दू जब तक वह हिन्दू है कभी परदेशभक्त नहीं हो सकता। इसलिए मैं आप से कहता हूं आजादी की जंग में सौदे की भावना को पनपने मत दीजिए। जिसको शौक है आए, शौक नहीं भले ही घर में बैठा रहे। आजादी की जंग संख्या बल से नहीं चरित्र बल से जीती जाती है। आप मुस्लिमलीग को बिलकुल भुला दीजिये। करोड़ों हिन्दुओं का और जो मुसलमान स्वेच्छा से आप के साथ आएं उनको साथ लिए स्वातंत्र्य समर में बढ़ते जाइए। लीग जो कुछ भी कर रही है, लीग नहीं कर रही वास्तव में अंग्रेज कर रहा है। लीग के सामने झुकना साफ तौर पर अंग्रेज के सामने झुकना है। जिस वीरता के साथ कांग्रेस ने अंग्रेज का मुकबला किया, लीग की हेकड़ी तोड़ने के लिए भी कांग्रेस को वैसी ही वीरता दिखानी चाहिए। लेकिन क्या कांग्रेस सचमुच ऐसी वीरता दिखाएगी ?

... ...

हाल ही में दर्जनों बार मेरे मन में स्तीफा देने का विचार उठा। कलकत्ता और बिहार की घटनाओं ने मेरा मन विक्षुब्ध कर दिया है मैं तथा मेरे साथी आजादी लाने के लिए अन्तःकालीन सरकार में प्रविष्ट हुए थे। यद्यपि हमारा यह दावा नहीं कि हम पूर्णतःसफल हुए हैं हम बिल्कुल असफल भी नहीं हुए।

'मैं रक्तपात से नहीं डरता। इसमें शक नहीं कि देश में जो मौजूदा गृह-कलह उठ खड़ा हुआ है उससे मुझे बहुत दुःख हुआ है परन्तु इसका वीर हृदय से सामना तो करना ही होगा। मुझे आशा है स्थिति सुधर जायगी। यह सच है कि देश के एक भाग की दूसरे भाग में प्रतिक्रिया होती ही है। कांग्रेस ने अतीत में अनेक संकटों व खतरों का सामना किया है और इस संकट में भी वह अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने में पीछे नहीं रहेगी भले ही इस काम में हममें से कुछ लोगों का बलिदान हो जाय।" **मेरठ कांग्रेस पर—जवाहर के उद्गार**

आर्यसमाजी भाइयों की सेवा में !

मैं अपने बालकाल से ही आप से प्रार्थना करता आ रहा हूं, आर्य-समाज का मुख्य उद्देश्य स्कूलों और कालिजों पर रुपया बरबाद करके आर्यपुत्रों तथा आर्यपुत्रियों को अंग्रेजी सांचे में ढालना नहीं। मैं आपको यह भी अनेक बार कह चुका हूं कि आर्य समाज का काम प्रति सप्ताह चार पांच आदमियों का किसी स्थान पर बैठ "अग्नेय स्वाहा" की रट लगा लेने तक ही सीमित नहीं। आर्यसमाज का लक्ष्य बहुत ऊंचा है। यदि आप मेरी बात मानते आज अपने ही लोगों की गल्तियों के कारण हमें संसार की नजरों में इस कदर जलील न होना पड़ता। मैं आपको आरम्भ से ही कह रहा हूं आर्यसमाज के लिए उपयुक्त क्षेत्र राजनीति का क्षेत्र ही है। कांग्रेस जिस स्वराज्य की कल्पना करती है वह स्वराज्य नहीं औरंगजेबी राज्य है। जिस दिन पंजाब फ्रन्टियर और आसाम का एक २ नगर एक २ ग्राम नवाखाली और ढाका बन जायगा उस दिन कांग्रेस समझेगी उसका मिशन पूरा हो गया। यदि आप भी कांग्रेस वाला सुराज चाहते हैं तो भले ही बच्चों को Jack and Jill, went up a hill रटाते रहिये, और प्रत्येक रविवार को समाज मन्दिर में बैठ डालडा फूंकते रहिये, परन्तु यदि आप में अंश मात्र भी महर्षि दयानन्द की स्पिरिट बाकी है, यदि आपके दिलों में वैदिक-सभ्यता के लिये कुछ भी प्रेम बाकी बचा है तो मैं आप से प्रार्थना करूंगा, चेतिये ! भविष्य में आने वाले खतरे को पहचानिये। सत्य और न्याय की पताका फहराते हुए आगे बढ़िये भारत में औरंगजेबी राज्य की स्थापना का सुख स्वप्न देखने वाले इन कांग्रेसियों के हाथों से देश और जाति की बागडोर छीन लीजिये।

आखिर हम कब तक बैठे तमाशा देखते रहेंगे। कांग्रेस के लिए मुख्य प्रश्न स्वराज्य प्राप्ति का नहीं रहा अब तो उसके सिर पर यही धुन सवार है कि वह अपने आप को जिन्नाह और लियाकतअली से भी बढ़ कर मुसलमानों का शुभचिन्तक सिद्ध कर सके, भले ही उसके देखते २

हिन्दुस्तान पाकिस्तान बन जाये। क्या यह समय की आवश्यकता नहीं कि वैदिक संस्कृति से प्रेम करने वाले हम सब सिख, जैन, बौद्ध, सनातनी, समाजी छोटे-मोटे पारलौकिक मतभेदों को भुलाकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए एक हो जायें। सभी सम्प्रदायों को एक स्थान पर लाना और वैदिक स्वराज्य के लिए उन्हें संघर्ष के लिए तैयार करना यह काम आर्यसमाज का है। यह देश हिन्दुओं का है, हिन्दुस्थान में हिन्दू राज्य का सुख स्वप्न कोई गुनाह नहीं लेकिन क्या मेरी कोई सुनेगा भी ?

हरिजनों को सन्देश

वास्तव में आप ही भारत माता के सच्चे सपूत हैं। धरती माता आप ही के सहारे खड़ी है। जो लोग आपको अछूत कहते हैं वे स्वयं अपने शत्रु हैं। यदि भारत के सभी राजा, महाराजा, वकील, बैरिस्टर, डाक्टर, साधू-महात्मा, पांडे-पुजारी दो वर्ष की छुट्टी लेकर पाताल लोक की यात्रा पर चले जायें मेरे देश का कुछ भी न बिगड़े, परन्तु यदि आप लोग दो दिन भी अपना कार्य ठप्प करदें संसार एक दम चौपट हो जाये। काल का प्रेरा हुआ हिन्दू आपको निर्बल बनाए रखने में ही गौरव मानता है, वह इतना भी नहीं समझता—कमजोर बुनियादों पर खड़ा मकान जीवन संघर्ष में कब तक टिक सकेगा।

आज अंग्रेज आपको भी मिनिस्ट्रियों तथा सरकारी नौकरियों का चस्का लगा रहा है। परन्तु अगर अंग्रेज के दिल में आपके प्रति सच्चा दर्द होता मैं अंग्रेज की तारीफ करता, मैं उसे सबसे बड़ा दलितोद्धारक समझता, लेकिन अंग्रेज ने आपको दिया क्या। आठ करोड़ मुसलमानों को तो उसने पांच सीटें दीं और दस करोड़ हरिजनों को केवल एक सीट। आप अंग्रेज से पूछिये उसने किस कानून कायदे से आपको एक सीट दी। अगर अंग्रेज यह वहाना बनाता है कि आप बहुत पिछड़े हुए हैं तो अंग्रेज को पूछिये बंगाल और सिन्ध के लाखों, करोड़ों हिन्दू जमींदारों, वकीलों, बैरिस्टरों, प्रोफेसरों की जिन्दगी जिन लीगियों

के हाथ में दे रखी है उन लोगियों में कितने ऐसे हैं जिन्हें अपने दस्तखत तक करने का भी ज्ञान है। वास्तव में अंग्रेज को आप से कोई हित नहीं उसे तो लीग के मुकाबिले पर हिन्दू की शक्ति को कमजोर बनाना है। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये वह हाथों में कैंची लिए बैठा है। कभी इधर से काटता है कभी उधर से काटता है। मैं आपको कहूंगा— सर्व प्रथम तो आप हिन्दुओं से अलग अधिकार मांगिये ही नहीं, और यदि अंग्रेज़ आप पर अपनी अबरेरहमत बरसाने पर तुला ही बैठा है, आप उसे साफ साफ कह दीजिये, खुदावन्दा ! हम १० करोड़ हैं; अगर आठ करोड़ फरजिन्दाने तौहीद को ५ सीटें दोगे तो हम भी कम से कम ६ सीटें अवश्य लेंगे, फिर देखें अंग्रेज़ आपके प्रति कैसा हित दिखाता है।

लीग ने अपने कोटे की जो एक सीट योगेन्द्रनाथ मंडल को दी है, इसमें जिन्ना की बहुत भारी राजनीतिक चाल है। एक सीट मंडल को देने से जिन्ना का कुछ भी नहीं बिगड़ा। इस सस्ते सौदे से वह अछूत कहलाने वाले वर्ग में दो पारटियां पैदा करना चाहता है। इन दोनों में से एक पार्टी को अपने साथ मिलाकर वह संसार को यह बताना चाहता है कि लीग में केवल मुसलमान ही नहीं, कांग्रेस में जैसे कुछ मुसलमान भी हैं इसी प्रकार लीग में कुछ हिन्दू भी हैं। देश में वर्तमान राजनैतिक संघर्ष लीग को कांग्रेस के बराबर लाकर खड़ा कर देने के लिये ही है और हमारी अपनी गल्तियों से अंग्रेज़ को अपने इस प्रयन्न में सफलता भी प्राप्त हो रही है।

हिन्दू-समाज की छत्रछाया में रहते हुए आपको जो २ भी कष्ट हैं वे किसीसे भी छिपे नहीं, परन्तु सामूहिक रूप से हिन्दू समाज आपके उन दुःखों को दूर कर देना चाहता है। आज आपका सौभाग्य है कि देश में कांग्रेस का शासन है। कांग्रेस रूपी रथ के गान्धी महाराज कृष्ण हैं। गान्धी अपने को भंगी कहने में गौरव मानता है। शिवजी महाराज भी तो भंगी ही कहाते हैं, भंगी का स्थान बहुत ऊंचा है। आज भारत के शासन की बागडोर सबसे बड़े भंगी के हाथों में है। आप उस भंगी-

राठ गान्धी की ओर देखिये, आप अंग्रेज की ओर क्यूं देखते हैं। अंग्रेज आपको कागजी नोटों के बिना कुछ नहीं दे सकता, जिन्ना के पास सिवाय नफरत, हकारत और वर्ग-द्वेष के और कुछ नहीं। गान्धी के पास दिल है। उस दिल में आपका निवास है। वह दिल आपका है। वह आपका सबसे महान् शुभचिन्तक है। वही आपके दुःख को दूर करेगा। आप उस पर विश्वास रखिये। सन्त की तपस्या कदापि व्यर्थ नहीं जा सकती।

खालसा सूरमाओं की सेवा में !

मातृ-भूमि की स्वाधीनता के लिये आपने जो कुर्बानियां की हैं, हिन्दुस्तान की आजादी के इतिहास में उन्हें स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायगा। आपकी बहादुरी का, सिंह-नीति का ही यह परिणाम है कि अत्यल्प संख्या में होते हुए भी भारत की राजनीति में आपका विशेष स्थान है। आज अंग्रेज ने राजनीतिक रूप से आपको हिन्दुओं से अलग कर दिया परन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है जब तक गुरुग्रन्थ साहिब में गंगा राम, कृष्ण की महिमा रहेगी, जबतक गुरु के खालसे सच्चे अर्थों में गुरु के भक्त रहेंगे तबतक संसार की कोई भी शक्ति हिन्दुओं और सिखों को धार्मिक रूप से दो नहीं कर सकती। कुछ वर्ष पूर्व कुछ एक स्वार्थी लोगों ने इस बात का भरसक प्रयत्न किया था कि पन्थ-लीग गठबन्धन हो सके, निश्चय ही ज्ञानियों की यह सबसे बड़ी अज्ञानता थी। परमात्मा का भला हो वे खौफनाक दिन निकल गये। आज मा० तारासिंह तथा ज्ञानी कर्तारसिंह की बुद्धि ठीक होगई। लीग का पन्थ के साथ गठबन्धन बिल्कुल अप्राकृतिक था। परमात्मा का भला हो आज पन्थ देश के साथ है।

एक बात से मैं आपको सावधान किये देता हूं। जिन्ना की कूटनीति कौटिल्य की नीति से कुछ कम भयंकर नहीं। प्रत्येक वह सम्प्रदाय जिस का मूल आधार भारतीय है जिन्ना उस सम्प्रदाय के राजनीतिक महत्त्व को नष्ट भ्रष्ट करना चाहता है। इस समय उसके सामने तीन मुख्य

पहलवान हैं। असली पहलवान जिसका उसे मुकाबिला करना था वह थी हिन्दू महासभा, परन्तु स्वयं हिन्दुओं ने ही हिन्दू महासभा को समाप्त कर दिया। अब रह गये तीन पहलवान—कांग्रेस, हरिजन तथा सिख। एक साथ तीन मोर्चों पर लड़ना इस ७१ वर्षीय बूढ़े पहलवान की हिम्मत नहीं। Turn by Turn बारी-बारी वह तीनों को समाप्त करना चाहता है। कांग्रेस ने भी बिलाशर्त जिन्ना के सामने हथियार डाल दिये। ब्रिटिश संगीनों के बल पर जिन्ना पंजाब और आसाम की जो भी दुर्गति चाहे करे। उसे रोकने वाला कोई नहीं। आज हमारा पंजाब खतरे में है। हमारा अमृतसर, करतारपुर, पंजा-साहिब, कटासराज, अमरनाथ लीग के हवाले कर दिया गया। आओ हम सब पंजाबी, सिख, समाजी, सनातनी छोटे-मोटे मतभेदों को भुलाकर एक हो जाएं और इस जिन्नाही पाकिस्तान की धज्जियां उड़ा दें।

साधू-महात्माओं की सेवा में !

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब हमारे देश पर आपत्ति आई, सन्त महात्माओं ने ही देश और जाति की रक्षा की। गृहस्थी लोगों का कर्तव्य आपकी पालना करना है और आपका कर्तव्य आततायियों के अत्याचारों से घर गृहस्थियों की रक्षा करना है। आज भी एक सच्चा सन्त नवाखाली के ग्राम-ग्राम में इसी पवित्र उद्देश्य के लिये भटक रहा है। यदि देश में थोड़े से भी ऐसे महात्मा और हों, सचमुच प्रभु-भक्तों की सभी आपदाओं का तत्काल अन्त हो जाये।

धर्म के नाम पर, गौ और ब्राह्मण के नाम पर, देवी और देवताओं के नाम पर, देश और जाति के नाम पर, उन हजारों मन्दिरों और मठों के नाम पर जहां कभी चौबीसों घंटे "भज गोविन्दम्" की मनहर ध्वनि गूंजती थी आज जहां सन्नाटा छा रहा है; उन टूटे हुए मकानों के नाम पर जिनकी दावारों के पीछे चौबीसों घंटे बसन्त की बहार थी आज यहां सुनसान दिखाई दे रहा है; उन उजड़े हुए ग्रामों के नाम पर जिनका कण-कण कभी वन्देमातरम् के जय गान से गूंजा करता था आज जिसके

दरोदीवार से अल्लाहू अकबर की सदायें आती हैं; उन हजारों सती-साध्वियोंके नाम पर जिनका सर्वस्व उनकी आंखों के सामने बर्बाद किया गया, जिनके सिर का सिन्दूर जूती के तलवों से पोंछा गया, आज भी जबरदस्ती बुर्का पहने जो तलवार की नोंक पर गूंडों के घरों में पड़ी तड़प रहीं हैं, उन लाखों शरणार्थियों के नाम पर जो आज कड़कती हुई भीषण सरदी में शरणार्थी कैम्पों में पड़े धर्म रक्षा के लिये अनेकों कष्ट भोग रहे हैं। उन हजारों धर्म वीरोंके नाम पर जिन्होंने हंसते-हंसते अपने अंग २ कटवा दिये, परन्तु धर्म न छोड़ा मैं आपसे अपील करता हूं, मैं आपको अपने कर्तव्य का पालन कराता हूं । सामर्थ्य गुरु रामदास, बन्दा वीर वैरागी, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविन्दसिंह का रूप धारण कीजिये और—यदा यदा दि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्" का जयघोष लगाते हुए पूर्वी बंगाल, सिंध फ्रन्टियर के ग्राम-ग्राम में फैल जाइये :

विद्यार्थियों को !

राजनीति का मतलब लम्बी चौड़ी तकरीरें करना, व्यर्थ में ही किसी के विरुद्ध ज़हर उगलना; गले फाड़-फाड़ कर नारे लगाना, मार-चिंग करते हुए सड़कों पर चक्कर काटना ही नहीं, सच्ची राजनीति यही है कि हम अपने देश से प्रेम करें । देश कोई मिट्टी और पत्थर नहीं, देश में रहने वालों का शुभचिंतन ही सच्ची देश-भक्ति है । अंग्रेज़ का हिन्दुस्तान से निकल जाना ही स्वराज्य नहीं, यदि हमारे हृदयों में अपने भाईओं-बहनों के प्रति सहानुभूति नहीं तो अंग्रेज़ के चले जाने पर जो स्वराज्य मिलेगा उसका मतलब यही होगा कि पहले अंग्रेज़ हमें नोच-नोच कर खाता था,अब उसके स्थान पर हम अपने देश भाईयों को नोच २ खाएंगे । विद्यार्थियों के लिये सबसे बड़ी देश सेवा यही है कि वह योग्यतम सन्तान के आदर्श पिता बनने की तैयारी करें । मेरे देश का पतन तभी तो हुआ, जिस दिन से हमने स्वयं आदर्शहीन बन कर चरित्र-हीन सन्तान पैदा करनी शुरू की ।

आधुनिक स्कूल-कालिजों के स्टूडैण्टस को विद्यार्थी कहना—विद्या के पवित्र शब्द को कलंकित करना है। हमारा आदर्श विद्या प्राप्ति कभी नहीं। या तो यह नौकरी प्राप्त करने का एक साधन है अथवा किसी भोलेभाले शिकार को फंसा कर तिलक और दहेज़ में उस बेचारे का सर्वस्व हर लेने के लिये एक अपटूडेट सिवीलाईज्ड षड़यन्त्र। क्या आपको अपनी भावी धर्म-पत्नि, अपने पुत्र की माता के पिता के गले में अंगूठा देकर दस हज़ार मांगते शरम नहीं आती? खुदा का खौफ क्या आप के दिल से बिल्कुल ही उठ गया। याद रखो कल को जब तुम स्वयं पिता बनोगे और तुम्हारे सात दामाद तुम से सात मोटरें, सात रेडियो, सात मकान और सत्तर हज़ाह नकद मांगेंगे उस समय तुम्हें ज़रूर खुदा याद आयगा।

देवियों के प्रति !

निश्चय ही हमारे देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि पुरुष ने स्त्री को अपने लिये केवल भोग-विलास की सामग्री समझ लिया है। हमारी प्राचीन संस्कृति में देवियों को पुरुषों की अपेक्षा उच्च स्थान दिया गया था, गौरीशंकर, सीताराम, राधेश्याम, उमा-ईश, रमा-ईश, गंगा विष्णु, इत्यादि, परन्तु आज स्वयं देवियों ने ही पुरुष के हाथ का खिलौना बनकर अपने महत्व को बहुत नीचे गिरा दिया। पुरुष में वीर्य शक्ति ही पुरुष को पुरुष बनाती है। यही आपकी सच्ची दौलत है आप इसे वृथा न होने दें। पति-पत्नी का सम्बन्ध केवल सन्तान उत्पत्ति के लिये ही होता है, भोग-विलास में जीवन-शक्ति को गन्दी नालियों में फैंक देने के लिये नहीं होता। आपको चाहिये, आप पुरुष के मन को अधिक चंचल न बनने दें। स्त्री का तो केवल ध्यान ही पुरुष को पतन की ओर ले जाने के लिये बहुत काफी है, तिस पर पौउडर, क्रीम, लिपस्टिक,—रंग बिरंगी शनील और ज्योरजैट पहन कर आखिर आप चाहती क्या हैं? आपको गहने और कपड़े के प्रलोभन में फंसाये रखना यह पुरुष की एक चाल है, आप इसके प्रति विद्रोह कीजिये। मैं आप को सच कहता

हूं हमारे पुरखा जो फैशन से दूर थे वे हम से ज्यादा सुखी थे। सुख सादगी और संयम में है, विलासता और व्यभिचार में नहीं। पति और पत्नी सन्तान होने पर भी, सन्तान की इच्छा न होने पर भी जो परस्पर सहवास करते हैं वह भी व्यभिचार ही है।

आज तुम्हारे देश पर महान धर्म संकट पड़ा है। इस संकट का श्रीगणेश पूर्वी बंगाल में हो चुका है। पूर्वी बंगाल में आज कितनी ही सती-साध्वियां गुंडों के कब्जे में हैं। भगवान वे दिन किसी को न दिखाए, परन्तु समय तो किसी के भोलेपन पर तरस नहीं खाता। आपको चाहिये अपने में वीरता पैदा करें। वे दिन गये जब राम सीता की रक्षा करने समुद्र पार गये थे, आज कल के राम गान्धी जी महाराज की कुटिया तक, अखबार के दफतर तक अथवा अधिक से अधिक पुलिस थाने तक हो आएंगे। आपका आदर्श प्रेमलता अथवा मन मोहनी की बजाय लक्ष्मी बाई तथा हाडारानी ही हो सकता है। यही आदर्श आपकी मान-मर्यादा की रक्षा कर सकता है।

देश-बन्धुओं की सेवा में !

आजकल आपको कुछ भी कहना व्यर्थ है। उपदेश मनुष्य को आचारवान, बुद्धिमान तथा विद्वान बनाने के लिये ही किया जाता है। परन्तु जब आप अपढ़, मूर्ख तथा आचारहीन होते हुए भी बड़े-बड़े धर्मात्माओं, महात्माओं तथा विद्वानों की अपेक्षा अधिक नौकरियां, अधिक राजनैतिक अधिकार प्राप्त कर रहे हैं, निश्चय ही आपको किसी उपदेश की आवश्यकता नहीं। आपका मुसलमान होना ही प्रत्येक स्थान पर सबसे बड़ा गुण माना जाता है।

एक प्रार्थना में आपसे अवश्य करूंगा--मनुष्यत्व संसार में एक दुर्लभ पदार्थ है। वैर विरोध की भावना रखते हुए भी इस रत्न को हाथ से कदापि खोना नहीं चाहिये। कमजोरों, बड़े बुजुर्गों, स्त्रियों तथा बच्चों के साथ इज्जत और मान का बर्ताव करना प्रत्येक सम्प्रदाय के महापुरुष ने माना है। हिन्दुओं ने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा। उनके

प्रति बदले की भावना दिल से निकाल दीजिये। आप भी अपने को हिन्दू ही समझिये। आपके शरीरमें भी राम-कृष्ण, शिवा-प्रताप का खून है।

आजाद हिन्द सेना की घोषणा

प्लासी में सन् ५७ की हार के बाद १०० साल तक हिन्दुस्तानी अपनी आजादी के लिये बराबर लड़ते रहे। इस युग का इतिहास आजादी की खूनी लड़ाई का इतिहास है सिराजुद्दौला टीपु, सुल्तान, हैदरअली, अवध की बेगमात, शक्तिसिंह, झांसी की रानी, तांतिया टोपी, नाना साहिब, शायद यह नहीं समझते थे कि विजय के लिये एकता पहली शर्त है। इसलिये १८५७ में हमारी हार हुई। उसके बाद कायर अंग्रेजों ने हिन्दुस्तानियों से हथियार ले लिए। कुछ दिन तक तो हिन्दी चुपचाप रहे मगर १८८५ में कांग्रेस की स्थापना से आजादी के इतिहास में नवीन युग का प्रारम्भ हुआ। पहले यूरोपीय युद्ध तक सविनय उपायों से काम लिया पश्चात् १९२० में जब हम निराश हो रहे थे तब पूज्य महात्माजी ने आगे आकर असहयोग और सत्याग्रह के दो अस्त्र हमें दिये। अतः राजनैतिक चेतना के साथ-साथ हममें राजनैतिक युद्ध की चेतना भी जागी। कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों के अन्तिम युग के समय हमने यह भी दिखा दिया कि प्रबन्ध में हम अंग्रेज से अधिक कुशल हैं। इस द्वितीय महायुद्ध में हमें आजादी की अन्तिम लड़ाई छेड़ने का अवसर मिला है। हमें भूखे मारकर हमें बरबाद करके ब्रिटिश सरकार ने हमसे सारी श्रद्धा छीन ली है। उस पाश्विक शासन के अन्तिम अवशेषों को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये एक भयानक क्रान्ति ज्वाला की आवश्यकता है। आजाद हिन्द सेना उस ज्वाला को जला रही है। यह आजाद हिन्द सरकार हिन्दोस्तान के प्रति वफादार रहेगी अतः हर एक हिन्दुस्तानी को इसके प्रति वफादार होना चाहिये। बड़ों के नाम पर, आजादी के नाम पर, आनेवाली पीढ़ियों के नाम पर हम एलान करते हैं कि अपना सर्वस्व देकर भी हम तबतक लड़ते रहेंगे जब तक शत्रु को हिन्दुस्तान से निकाल न दें।

अन्तर्वेदना

"अब ऐसा मालूम होता है कि कांग्रेसी नेता इन ६ महीनों में सिर्फ झूठी दिखावटी बातें कर रहे थे और उनमें अपने संकल्पों को पूरा करने के लिए ताकत नहीं थी। अगर मन्त्री मिशन की व्याख्या इस प्रकार स्वीकार की जानी थी तो बंगाल और बिहार के सारे रक्तपात की जिम्मेवारी कांग्रेसी नेताओं पर आती है, न कि मुस्लिम लीग की हठधर्मीपर या ब्रिटिश सरकार की द्विमुखता पर जिसने कि असलमें उन सब दुखद काण्डों को जन्मदिया।"

इस प्रस्ताव को पास करके कांग्रेस महासमिति ने गुण्डागर्दी का संवर्धन किया है और उन उच्छृखल शक्तियों को प्रोत्साहन दिया है जिन्हें कभी भी परचा नहीं जा सकता। पिछले ६ महीनों में सिवाय लीग की प्रत्यक्ष कार्यवाही के और ऐसी कोई चीज नहीं हुई जिसके कारण कांग्रेसी नेता अपना मन बदलते। वर्तमान आत्मसमर्पण अगले अधःपतन की सीढ़ी मात्र है और इससे देश में शांति और स्वतन्त्रता के आन्दोलन का ही पूर्ण सत्यानाश हो जाने की सम्भावना है।

मुझे इससे आश्चर्य नहीं हुआ कि नेताजी के भाई ने कांग्रेस कार्यकारिणी से स्तीफा दे दिया और श्री जयप्रकाशनारायण ने देने की धमकी दी है। समय आ गया है जब देश की सब वामपक्षी शक्तियों को एकत्र संगठित होकर राष्ट्रीय आन्दोलन की आने वाले खतरों से रक्षा करनी चाहिए।

शार्दूलसिंह कवीश्वर

जिस बात का भय था वह बात आखिर होकर ही रही। सीमा-प्रान्त, आसाम तथा पंजाबी हिन्दुओं के साथ खुला विश्वासघात करके कांग्रेस ने लीग के सामने बिला शर्त हथियार डाल ही दिये। शिखंडी के कन्धे पर बन्दूक रखकर गोलियां चलाने वाले अर्जुन ने आखिर भीष्म

पितामह को ज़ख्मी कर ही दिया। एक बार गुट्टों में शामिल होकर पीछे अन्याय होता देख गुट्टों से बाहिर आ सकना मुश्किल भी है, असम्भव भी और निरर्थक भी। आज देश की आत्मा खून के आंसू बहा रही है, परन्तु कांग्रेसी सूरमा जानते हैं हिन्दू बात को बहुत जल्दी भूल जाता है। उसके साथ लाख अन्याय कर लो वह तो कांग्रेस को छोड़ने से रहा!

राष्ट्रीय दृष्टिकोण का परित्याग कर कांग्रेसी महापुरुषों ने प्रत्येक समस्या पर केवल अन्तःराष्ट्रीय दृष्टिकोण से विचार करना शुरू किया है। उधर जिन्ना को १९५१ में होनेवाली मर्दुमशुमारी की चिन्ता है। हजारा, पूर्वी बंगाल इत्यादि में जो भी लूट मार हो रही है इसका एक मात्र उद्देश्य हिन्दुओं में भय पैदा कर उन्हें मुसलमान बनने की प्रेरणा करना ही तो है। आज भारत के प्रत्येक ग्राम और प्रत्येक नगर में तबलीग जोरों पर है। जिन लाठियों से कांग्रेस ने आनेवाले इलैक्शनों की लड़ाई लड़नी है उन लाठियों को लूटा जा रहा है, तोड़ा जा रहा है। अब रह जायगी कांग्रेस ठन-ठन गोपाल।

पुस्तक पढ़ते समय पाठकों को कुछ एक स्थलों पर मेरी यही अन्तर्वेदना का सामना करना होगा। परन्तु यदि यह मेरी अन्तर्वेदना मेरे ही समान कुछ एक और भूले भटके नवयुवकों की आंखें खोल सके तो मैं अपना प्रयास सफल समझूंगा।

जिन लोगों को केवल जोशीली पुस्तकें पढ़ने का शौक है, शायद उन्हें मेरी इस पुस्तक से निराशा होगी। परन्तु देश की वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए मेरा अन्तःकरण इन्हीं विचारों के पक्ष में है। जनता की भावनाओं के साथ खेलना मैंने नहीं सीखा। पुस्तकों की कमाई से अपने महल खड़े करने की इच्छा मैंने कभी नहीं की। मैंने तो केवल **"स्वान्तः सुखाय"** ही इस पुस्तक को लिखा है। यह पुस्तक मेरी अन्तरात्मा है। इस कठिनतर, कष्टतर मंहगाई के जमाने में मैंने इस पुस्तक को स्याही से नहीं लिखा बल्कि अपने आंसुओं से लिखा है।

पाराशर कृत निम्नलिखित ग्रंथ मिल सकते हैं—

सन्त-दर्शन—जीवन को उत्कर्ष की ओर ले जाने वाले, सद्ज्ञा विशुद्ध राष्ट्रीयता, सक्रीय वेदान्त सम्बन्धी विचारों से परिपूर्ण ग्रन्थ पृष्ठ ६८०, बड़ा साईज–मूल्य केवल ३)

राष्ट्र-सर्वस्व—देवगाथाओं में इतिहास की खोज, भारत माता की कथा, मातृ-भूमि की स्वाधीनता के प्रति भारत सपूतों द्वारा किये गये बलिदान की गौरव गाथा—रामायण महाभारत की कथा के ढंग पर। पृष्ठ २६८ सचित्र तथा सजिल्द–मूल्य ३)

देशरत्न—भारत पुत्रों के अन्तःकरण से मिटायी जा रही हिन्दुत्व की भावना की रक्षा करना समय की परम आवश्यकता है। राम, कृष्ण, बुद्ध, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, हर्ष, प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्द, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का विस्तृत खोजपूर्ण जीवन। पृष्ठ २५०–मूल्य ३)

कांटों का ताज—गांधीजीने कहा—जवाहर ने सोने का नहीं कांटों का ताज पहना है। इस पुस्तक में इस कांटों के ताज की पूरी कहानी पढ़िये–मूल्य १॥)

Historical Researches into Hindu Mythology—If you want to acquaint yourself and intend to covey to Hindi unknowing Public the glorified message of Ancient Thinkers do read this book—Pages 300--price ouly 3/—

गीता की भूमिका १) भारत में स्वर्ग ।॥) विश्व-ज्ञान मन्दिर ॥) हमारी आधुनिक समस्यायें ।॥) महाभारत के सूत्रधार १) आध्यात्मिक गीता ॥) कलियुग पुराण २॥)

स्थायी ग्राहकों में नाम लिखा लीजिये।

पत्र-व्यवहार का पताः—

विश्व-ज्ञान-मन्दिर, कनखल (हरिद्वार)